वर्ष 24, अंक 272, पृष्ठ 08, मूल्य: 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज बुधवार 9 अप्रैल 2025

विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

दुबई से आया मेरा दोस्त !

भारत-संयुक्त अरब अमीरात संबंधों को सुदृढ़ करने की प्रतिबद्धता दोहराई

नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने नई दिल्ली में दुबई के क्राउन प्रिंस (उत्तराधिकारी युवराज) शेख हमदान बिन मोहम्मद बिन राशिद अल मकतूम से मुलाकात की। मोदी ने भारत-संयुक्त अरब अमीरात संबंधों को सुदृढ़ करने की प्रतिबद्धता दोहराई। उन्होंने कहा कि भारत-संयुक्त अरब अमीरात के बीच व्यापक रणनीतिक साझेदारी आगे बढ़ाने में दुबई की महत्वपूर्ण भूमिका

रही है। प्रधानमंत्री ने सोशल मीडिया साइट एक्स पर लिखा "दुबई के क्राउन प्रिंस महामहिम शेख हमदान बिन मोहम्मद बिन राशिद अल मकतूम से मिलकर प्रसन्नता हुई। दुबई ने भारत-संयुक्त अरब अमीरात व्यापक रणनीतिक साझेदारी को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह विशेष यात्रा हमारी गहरी मित्रता की पुष्टि करती है और भविष्य में सहयोग और मजबूत करने का मार्ग प्रशस्त करती है।

प्रधानमंत्री मोदी ने मुद्रा योजना के लाभार्थियों से बातचीत की

नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने आज नई दिल्ली में 7, लोक कल्याण मार्ग पर प्रधानमंत्री मुद्रा योजना के 10 वर्ष पूरे होने के अवसर पर मुद्रा योजना के लाभार्थियों से बातचीत की। उन्होंने सभी उपस्थित लोगों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया तथा अतिथियों के स्वागत के सांस्कृतिक महत्व का उल्लेख भी किया। उन्होंने प्रतिभागियों को अपने अनुभव साझा करने के लिए आमंत्रित किया। मोदी ने, पालतू पशुओं की आपूर्ति, दवाओं और सेवाओं के उद्यमी बने एक लाभार्थी से बातचीत करते हुए, चुनौतीपूर्ण समय के दौरान किसी की क्षमता पर विश्वास करने वालों के प्रति आभार

व्यक्त करने के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने लाभार्थी से ऋण स्वीकृत करने वाले बैंक अधिकारियों को आमंत्रित करने और ऋण के कारण हुई प्रगति को प्रदर्शित करने के लिए कहा। श्री मोदी ने इस बात पर जोर दिया कि इस तरह की कार्रवाइयों से न केवल उनके विश्वास को मान्यता मिलेगी बल्कि बड़े सपने देखने की हिम्मत रखने वाले व्यक्तियों का समर्थन करने के उनके निर्णय में आत्मविश्वास भी बढ़ेगा। उन्होंने आगे कहा कि उनके समर्थन के परिणामों को प्रदर्शित करने से निस्संदेह उन्हें विकास और सफलता को बढ़ावा देने में अपने योगदान पर गर्व महसूस होगा।

केरल के एक उद्यमी श्री गोपी कृष्ण से बात करते हुए, प्रधानमंत्री ने प्रधानमंत्री मुद्रा योजना के परिवर्तनकारी प्रभाव का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि इसी योजना ने उन्हें एक सफल उद्यमी बनने में सक्षम बनाया और घरों तथा कार्यालयों के लिए अक्षय ऊर्जा समाधानों पर ध्यान केंद्रित करते हुए रोजगार के अवसर पैदा किए। प्रधानमंत्री ने मुद्रा ऋण के बारे में जानने के बाद दुबई में अपनी कंपनी से इस्तीफा देने का फैसला करने वाले लाभार्थी का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि पीएम सूर्य घर पहल के तहत सौर ऊर्जा की स्थापना, दो दिनों के भीतर पूरी हो गई।

उन्होंने पीएम सूर्य घर पहल के लाभार्थियों की प्रतिक्रियाओं के बारे में भी सुना। उन्होंने कहा कि केरल में अब भारी वर्षा और घने पेड़ों जैसी चुनौतियों के बावजूद घरों में मुफ्त बिजली मिल रही है। श्री कृष्ण ने कहा कि बिजली का बिल, जो पहले लगभग 3,000 रुपए था, अब घटकर 240-250 रुपए हो गया है, जबकि उनकी मासिक आय 2.5 लाख रुपए और उससे अधिक हो गई है।

टीम इंडिया का ये पूर्व क्रिकेटर बीजेपी में शामिल

विश्व कप और चैंपियंस ट्रॉफी टीम का रह चुका है हिस्सा

नई दिल्ली

क्रिकेटर केदार जाधव आगे कहा कि मुझे पूरा विश्वास है कि मुझे जो भी जिम्मेदारी मिलेगी, मैं उसे पूरी ईमानदारी से निभाने की कोशिश करूंगा। इस बीच, राज्य भाजपा प्रमुख बावनकुले ने पूर्व भारतीय क्रिकेटर के पार्टी में शामिल होने पर खुशी जताई।

पूर्व भारतीय क्रिकेटर केदार जाधव मुंबई में महाराष्ट्र के मंत्री और राज्य भाजपा प्रमुख चंद्रशेखर बावनकुले की उपस्थिति में भाजपा में शामिल हुए। केदार जाधव ने कहा कि 2014 से जब से केंद्र में भाजपा की सरकार बनी है, जिस तरह का प्यार और समर्थन उन्हें मिला है और जिस तरह की उपलब्धियां पीएम मोदी और सीएम देवेंद्र फडणवीस ने हासिल की हैं, मैं समझता हूं कि यह बहुत प्रेरणादायक है और मेरा लक्ष्य उनके पदचिन्हों पर चलना है और भाजपा के लिए जो भी छोटा-मोटा योगदान हो सके, वह करना है।

क्रिकेटर केदार जाधव आगे कहा कि मुझे पूरा विश्वास है कि मुझे जो भी जिम्मेदारी मिलेगी, मैं उसे पूरी ईमानदारी से निभाने की कोशिश करूंगा।

इस बीच, राज्य भाजपा प्रमुख बावनकुले ने पूर्व भारतीय क्रिकेटर के पार्टी में शामिल होने पर खुशी जताई। उन्होंने कहा, "यह हमारे लिए खुशी का दिन है। जीवन के सभी क्षेत्रों में उनका प्रभाव रहा है। मैं उनका घर में स्वागत करता हूं।

17 साल बाद सजा का ऐलान, 71 लोगों ने गंवाई थी जान

जयपुर ब्लास्ट के सभी 4 दोषियों को आजीवन कारावास

जयपुर

4 अप्रैल को बम विस्फोट मामलों की विशेष अदालत के न्यायाधीश रमेश कुमार जोशी ने फैसला सुनाते हुए आरोपियों को गैरकानूनी गतिविधि (रोकथाम) अधिनियम, विस्फोटक पदार्थ (निषेध) अधिनियम और आईपीसी की धाराओं के तहत दोषी करार दिया था। जयपुर ब्लास्ट मामले में 17 साल बाद फैसला आया है। 13 मई 2008 को जयपुर शहर में 15 मिनट के अंदर सात जगहों पर नौ बम धमाके हुए थे।

2008 के जयपुर बम विस्फोट मामलों की सुनवाई कर रही विशेष अदालत ने सभी चार दोषियों को आजीवन कारावास की सजा सुनाई है। चारों आतंकियों- सरवर आजमी, सैफुर रहमान, मोहम्मद सैफ और शाहबाज अहमद को अदालत ने आजीवन कारावास की सजा सुनाई है। इससे पहले 4 अप्रैल को बम विस्फोट मामलों की विशेष अदालत के न्यायाधीश रमेश कुमार जोशी ने फैसला सुनाते हुए आरोपियों को गैरकानूनी गतिविधि (रोकथाम) अधिनियम, विस्फोटक पदार्थ (निषेध) अधिनियम और आईपीसी की धाराओं के तहत दोषी करार दिया था। जयपुर ब्लास्ट मामले में 17 साल बाद फैसला आया है। 13 मई 2008 को जयपुर शहर में 15 मिनट के अंदर सात जगहों पर नौ बम धमाके हुए थे।

चार आरोपियों शाहबाज हुसैन, सरवर आजमी, मोहम्मद सैफ और सैफुर्रहमान पर लाइव बम मामले में फैसला सुनाया गया है। इनमें से दो आरोपी सैफ-उर-रहमान और मोहम्मद सैफ पहले से ही जयपुर सेंट्रल जेल में बंद हैं, जबकि मोहम्मद सरवर आजमी और शाहबाज अहमद जमानत पर बाहर हैं।

13 मई, 2008 को जयपुर में सिलसिलेवार बम धमाके हुए थे, जिसमें माणक चौक खंडा, चांदपोल गेट, बड़ी चौपड़, छोटी चौपड़, त्रिपोलिया गेट, जौहरी बाजार और सांगानेरी गेट पर एक के बाद एक कई बम धमाके हुए थे।

चालक ने करवाई पिटाई, अब हुई एफआईआर

वक्फ बिल को लेकर कैब ड्राइवर और रिटायर्ड कर्नल के बीच हुई बहस

लखनऊ

लखनऊ से हैरान करने वाला मामला सामने आया है। कानपुर से लखनऊ लौटने वाले एक रिटायर्ड कर्नल पर कैब ड्राइवर ने जानलेवा हमला करवाया है। यात्रा के दौरान कैब ड्राइवर और रिटायर्ड कर्नल के बीच वक्फ बिल को लेकर तगड़ी बहस छिड़ गई थी। दोनों के बीच बहस इतनी अधिक बढ़ी की गुस्साई कैब ड्राइवर ने अपनी लाइव लोकेशन कुछ बदमाश हमलावरों के साथ शेयर की और उनसे रिटायर्ड कर्नल को पिटवा दिया। हमलावरों ने घटनास्थल पर पहुंचकर रिटायर्ड

कर्नल के साथ मारपीट की। इस घटना में घायल हुए रिटायर्ड कर्नल ने ड्राइवर के खिलाफ एफआईआर दर्ज करवाई है।

कैब ड्राइवर पर दर्ज हुई एफआईआर जिला सैनिक कल्याण एवं पुनर्वास अधिकारी पद पर तैनात रिटायर्ड कर्नल सूर्य प्रकाश सिंह पर ये हमला हुआ है। कथित तौर पर ये हमला जानलेवा था। पीड़ित ने कानपुर से लौटते समय लखनऊ के लिए ओला कैब बुक की थी। ये घटना चार अप्रैल रात 10 बजे हुई। इस घटना के बाद सूर्य प्रकाश सिंह ने अचलगंज, उन्नाव थाने में मामला दर्ज करवाया है।

उन्होंने इस घटना की निष्पक्ष जांच की मांग की है।

सूर्य प्रकाश सिंह की आपबीती एफआईआर की मानें तो रात करीब 10 बजे कानपुर कैंट से ओला गाड़ी नंबर वढ 78ळळ 8065 का ड्राइवर जो की वसीक राजा पुत्र मोहम्मद वसीम निवासी 131/283, बेगमपुर थाना बाबूपुरवा कानपुर नगर से लखनऊ की तरफ जाने के लिए बुक किया था।

पाकिस्तान से आईएसआई ने हमला करवाया

पंजाब में पूर्व मंत्री के घर पर ग्रेनेड अटैक को लेकर डीजीपी ने क्या खुलासे किए?

पंजाब

एडीजीपी शुक्ला ने कहा कि मामले को वैज्ञानिक तरीके से सुलझाया गया है। हम केंद्रीय एजेंसियों के संपर्क में हैं और छापेमारी जारी रखे हुए हैं। निवारक उपाय भी किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि पंजाब पुलिस ऐसे अधिकांश मामलों को तेजी से सुलझा रही है और राज्य में कानून-व्यवस्था बनाए रखने के लिए प्रतिबद्ध है। मनोरंजन कालिया ने घटना पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि उन्हें शुरू में लगा कि यह आवाज ट्रांसफॉर्मर विस्फोट या गड़गड़ाहट की है। बाद में उन्हें पता चला कि यह ग्रेनेड विस्फोट था, जब उनके दरवाजे पर किसी ने उन्हें बताया। पंजाब पुलिस ने कहा कि उसने जालंधर में भाजपा नेता मनोरंजन कालिया के आवास के बाहर ग्रेनेड हमले के सिलसिले में पाकिस्तान स्थित एक व्यक्ति सहित दो लोगों को गिरफ्तार किया है। एक शीर्ष पुलिस अधिकारी ने कहा कि मामले को 12 घंटे के भीतर सुलझा लिया गया और इसे सांप्रदायिक सौहार्द बिगाड़ने के उद्देश्य से एक बड़ी साजिश करार दिया। प्रेस कॉन्फ्रेंस में अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक (कानून और व्यवस्था) अर्पित शुक्ला ने कहा कि पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आईएसआई ने हमला करवाया। जीशान अख्तर और पाकिस्तान स्थित शहजाद भट्टी हमले के पीछे मुख्य साजिशकर्ता हैं। उन्होंने कहा कि पुलिस प्रतिबंधित खालिस्तानी संगठन बब्बर खालसा इंटरनेशनल (बीकेआई) के साथ उनके संबंधों की जांच कर रही है। रात करीब 1 बजे कालिया के घर के बाहर

ग्रेनेड फेंका गया। उस समय पंजाब के पूर्व मंत्री अपने घर के अंदर थे, लेकिन उन्हें कोई नुकसान नहीं पहुंचा। सीसीटीवी फुटेज में हमलावर ई-रिक्शा में आता हुआ दिखाई दे रहा है, घर से गुजरने के बाद यू-टर्न लेता है और फिर ग्रेनेड फेंककर मौके से भाग जाता है। विस्फोट के तुरंत बाद फोरेंसिक टीम ने घटनास्थल की जांच की। पुलिस ने बताया कि हमले में इस्तेमाल किया गया ऑटोरिक्शा बरामद कर लिया गया है।

एडीजीपी शुक्ला ने कहा कि मामले को वैज्ञानिक तरीके से सुलझाया गया है। हम केंद्रीय एजेंसियों के संपर्क में हैं और छापेमारी जारी रखे हुए हैं। निवारक उपाय भी किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि पंजाब पुलिस ऐसे अधिकांश मामलों को तेजी से सुलझा रही है और राज्य में कानून-व्यवस्था बनाए रखने के लिए प्रतिबद्ध है। मनोरंजन कालिया ने घटना पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि उन्हें शुरू में लगा कि यह आवाज ट्रांसफॉर्मर विस्फोट या गड़गड़ाहट की है। बाद में उन्हें पता चला कि यह ग्रेनेड विस्फोट था।

असम बना भारत का तीसरा सबसे तेजी से विकास करने वाला राज्य

सीएम सरमा ने किया बड़ा दावा

असम

हाल के वर्षों में राज्य का तेजी से विकास स्पष्ट है, क्योंकि असम ने लगातार प्रभावशाली विकास के आंकड़े दर्ज किए हैं। इस महीने की शुरूआत में असम विधानसभा को संबोधित करते हुए सरमा ने खुलासा किया कि असम 14-15% की विकास दर दर्ज कर रहा है, जो राष्ट्रीय औसत 9-10% से कहीं ज्यादा है।

मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा के अनुसार,

असम भारत में तीसरा सबसे तेजी से विकास करने वाला राज्य बन गया है, जिसने स्थिर मूल्यों पर 7.94% जीडीपी विकास दर हासिल की है। यह घोषणा राज्य के उल्लेखनीय आर्थिक परिवर्तन को उजागर करती है, जो निवेशक समर्थक नीतियों और बुनियादी ढांचे, संस्थानों और व्यक्तियों में निरंतर निवेश द्वारा संचालित है। एक ट्वीट में, सीएम सरमा ने राज्य की प्रगति पर गर्व व्यक्त करते हुए कहा, "असम अब भारत का तीसरा सबसे तेजी से बढ़ने वाला राज्य है, जिसकी जीडीपी विकास दर स्थिर कीमतों पर 7.94% है। हमारी निवेशक-समर्थक नीतियां और बुनियादी ढांचे, संस्थानों और व्यक्तियों में निरंतर निवेश इस विकास को आगे बढ़ा रहे हैं। कुछ साल पहले, यह अकल्पनीय था।" हाल के वर्षों में राज्य का तेजी से विकास स्पष्ट है, क्योंकि असम ने लगातार प्रभावशाली विकास के आंकड़े दर्ज किए हैं।

'अपने राज्य को 'भेड़ियों' के पंजे से मुक्त कराना है', - कंगना रनौत

हिमाचल

हिमाचल में कांग्रेस की सरकार है जिसका नेतृत्व सुखविंदर सिंह सुक्खू कर रहे हैं। उन्होंने यह भी कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी कोई साधारण इंसान नहीं बल्कि एक अवतार हैं। मैं 2014 से पहले वोट देने भी नहीं गई थी।

हिमाचल प्रदेश के मंडी में एक सभा को संबोधित करते हुए भाजपा सांसद कंगना रनौत ने कहा कि पूरे देश में पीएम मोदी और भगवा की लहर है। लेकिन हिमाचल प्रदेश की हालत देखकर दुख होता है। उनकी एजेंसियां ??समोसे की जांच कर रही हैं। जो हो रहा है उससे हमें शर्मिंदगी महसूस हो रही है। यह हमारी जिम्मेदारी है कि हमें अपने राज्य को प्रगति के पथ पर ले जाना है। हमें अपने राज्य को इन 'भेड़ियों' के पंजे से मुक्त कराना है।

आपको बता दें कि हिमाचल में कांग्रेस की सरकार है जिसका नेतृत्व सुखविंदर सिंह सुक्खू कर रहे हैं। उन्होंने यह भी कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी कोई साधारण इंसान नहीं बल्कि एक अवतार हैं। मैं 2014 से पहले वोट देने भी नहीं गई थी। उन्होंने कहा कि इससे पहले हम भी राजनीति को दुर्भाग्य समझते थे और नेताओं को लेकर लोगों में काफी नफरत थी। रनौत ने कहा कि पहले सब खा रहे थे और देश को बर्बाद कर रहे थे।

स्मार्ट क्लासेज के माध्यम से छात्रों को तकनीकी शिक्षा से जोड़ा जाएगा : जिलाधिकारी

● स्कूल चलो अभियान रैली के माध्यम से डीएम प्रयागराज ने दिया नामांकन का संदेश

अखंड भारत संदेश

कार्यक्रम में बोलते जिलाधिकारी

करछना। तहसील करछना क्षेत्र में स्कूल चलो अभियान रैली करेहा गाँव में निकाली गई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जिलाधिकारी प्रयागराज रविन्द्र कुमार मांदड उपस्थित शिक्षकों को निर्देशित किया कि परिषदीय विद्यालयों में तकनीकी शिक्षा के तहत छात्रों को शिक्षा प्रदान की जरूरत है विद्यालयों को भौतिक संसाधनों से जोड़ा जा रहा है तकनीकी शिक्षा से छात्रों का भविष्य सवरेगा का आह्वान किया, वहीं विधायक करछना पियूष रंजन निषाद के विधायक निधि से स्मार्ट क्लासेज का लोकार्पण किया गया । जिसमें क्षेत्र के आठ विद्यालयों के प्रधानाध्यापक शिक्षकों, शिक्षिकाओं समेत हजारों छात्रों ने शिरकत की

जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी प्रयागराज प्रवीण तिवारी ने रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। उन्होंने कहा कि शिक्षा के माध्यम से ही बच्चों का भविष्य संवरेगा। उन्होंने शिक्षकों से 6 से 14 साल के सभी बच्चों का स्कूलों में प्रवेश करने का आह्वान किया। उन्होंने यह भी कहा कि परिषदीय विद्यालयों का कायाकल्प के माध्यम से विद्यालयों को भौतिक संसाधनों से सुसज्जित किया जा चुका है। परिषदीय विद्यालय के बच्चे नवोदय विद्यालय, अटल आवासीय विद्यालय के प्रवेश में बड़ी संख्या में चयनित हुए हैं। आय आधारित योग्यता परीक्षा और इंसपायर्ड अवार्ड के लिए बच्चे चयनित हुए हैं। मंगलवार को कंपोजिट उच्च प्राथमिक विद्यालय करेहा से खंड शिक्षा अधिकारी कौंधियारा व करछना अरुण कुमार अवस्थी की देखरेख में स्कूल चलो अभियान रैली निकाली गई। स्कूल चलो अभियान रैली गांव के विभिन्न मार्गो से होती हुई वापिस कंपोजिट उच्च प्राथमिक विद्यालय करेहा में सम्पन्न हुई। रैली में बतौर मुख्य अतिथि विधायक करछना पीयूष रंजन निषाद ने कहा कि क्षेत्र के विद्यालयों में जो भी कमियां हैं वह अब मेरे द्वारा दूर कर मॉडल विद्यालय बनाने का कार्य किया जाएगा। स्मार्ट क्लासेस के माध्यम से छात्रों को तकनीकी शिक्षा से जोड़ा जाएगा। रैली में एक बच्चा छुटा, संकल्प हमारा टूटा। घर-घर अलख जगाएंगे, शिक्षा का दीप जलाएंगे आदि प्रेरित करने वाले स्लोगन लिखे गए थे। रैली पूरे उत्साह और गाजे-बाजे के साथ विद्यालय से बाजार होते हुए वापस विद्यालय में आई। बच्चों के साथ मौजूद अभिभावकों को शिक्षकों द्वारा प्रेरित किया गया।

कार्यक्रम में मुख्य रूप से ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि करछना कमलेश द्विवेदी, सह जिला विद्यालय निरीक्षक लाल बाबू मौर्य, बीएस यादव,बीडीओ करछना अमित कुमार मिश्रा,मदन मोहन शंखधर, एसडीएम तपन कुमार मिश्रा,डॉ संतोष सिंह, अमित पाण्डेय,शिव बहादुर यादव, अनिमेष श्रीवास्तव, मनीष तिवारी सहित सैकड़ो की संख्या में शिक्षक छात्र उपस्थित रहें।कार्यक्रम का संचालन डॉ प्रभाकर त्रिपाठी ने किया।

न्यूज झरोखा

सब इंस्पेक्टर की ज्येष्ठ पुत्रवधू का आकस्मिक निधन

जंघई। सेवानिवृत्त उप निरीक्षक आरपीएफ रामआधार शुक्ल दरोगाजी निवासी कथरीपुर, गरियांव की ज्येष्ठ पुत्रवधू मंजू देवी का आकस्मिक निधन होने के कारण परिजनों को गहरा आघात लगा है। सभी का रो-रोकर बुरा हाल हो गया है गांव एवं क्षेत्रीय लोगों तथा रिश्तेदारों ने शोक संवेदना व्यक्त करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित किया है। मंजू देवी पत्नी संतोष कुमार शुक्ल बहुत धार्मिक, आध्यात्मिक एवं सरल स्वभाव की थीं ईश्वर के प्रति अगाध श्रद्धा समर्पण भाव से समर्पित रहीं समय के पूर्व उनका जाना परिवार के सभी सदस्यों को झकझोर करके रख दिया है। मंजू देवी की दोनों बेटियों सृष्टि और मनु एवं परिवार के सभी सदस्यों का का रो-रो कर बुरा हाल गया है। मंजू देवी की छोटी बेटी मनु की शादी 20 अप्रैल को होनी है, बेटी की विदाई करने से पहले ही मंजू देवी खुद इस संसार से विदा हो गईं इसके कारण परिजनों को गहरा आघात और सदमा लगा है। क्षेत्र के लोगों ने शुक्ला परिवार को इस संकट की घड़ी से उबारने हेतु ईश्वर से प्रार्थना किया है। परिजनों में राधेश्याम शुक्ल, खेमराज शुक्ल, रमाशंकर शुक्ल, दिलीप कुमार शुक्ल, राजेश शुक्ल, राजन शुक्ल, सुरेश शुक्ल, सुशील शुक्ल, साजन शुक्ल आदि शोकाकुल परिवार ने श्रद्धांजलि अर्पित किया है।

नैनी के व्यापारी बने उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार मंडल (रजि.) के प्रदेश मंत्री

व्यापारी अपना व्यापार निडर होकर करें : सत्यम शुक्ल

नैनी। नैनी क्षेत्र के व्यापारी बने उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार मंडल (रजि.) के प्रदेश मंत्री नैनी के प्रमुख व्यवसायी व भाजपा के सक्रिय कार्यकर्ता सत्यम शुक्ल पुत्र स्व ओमप्रकाश शुक्ला को प्रदेश मंत्री बनाए जाने पर नैनी चकभटाई के पार्षद मयंक यादव एवं व्यापार मंडल नैनी मंत्री धीरेन्द्र यादव धीरू के नेतृत्व में बड़ी संख्या में नागरिक एवं व्यासायी नैनी मिजार्पुर रोड पर उपस्थित होकर उनका सम्मान किया। इस अवसर पर वरिष्ठ पार्षद मयंक यादव, संजय श्रीवास्तव, धीरेन्द्र यादव धीरू, प्रदीप तिवारी, सुरेन्द्र गुप्ता, अवनीश तिवारी, सुनील विश्वकर्मा, नीरज शर्मा, नित्यानंद मिश्र, सुनील कुशवाहा, विपुल श्रीवास्तव, सुनील यादव, रमेश यादव, रंजीत गुप्ता, डॉ संदीप पाल, अतुल केसरवानी आदि सम्मानित जन उपस्थित रहे। इस अवसर पर नवनियुक्त प्रदेश मंत्री सत्यम शुक्ला ने कहा कि व्यापारी अपना व्यापार निडर होकर करें कहीं कोई समस्या हो तो मुझे अवगत कराएं उसका समाधान तत्काल किया जाएगा।

जसरा साहित्य महोत्सव में छत्तीसगढ़ की गीता शर्मा भाषा सेतु व शांतिनिकेतन के डॉ० आर सी राय कबीर सम्मान से होंगे सम्मानित

जसरा। साहित्य संवर्धन संस्थान जसरा द्वारा आयोजित साहित्य महोत्सव 2025 में देश के प्रतिष्ठित साहित्यकारों का सम्मान किया जाएगा। विकास खण्ड जसरा के परिसर में 13 अप्रैल रविवार को डॉ० एम गोविंद राजन भाषा सेतु सम्मान, गीता शर्मा रायपुर छत्तीसगढ़ , जी आर प्रजापति साहित्य सम्मान डॉ० इंदू गुप्ता फरीदाबाद (हरियाणा) शालिग्राम साहब स्मृति कबीर सम्मान डॉ० आर सी राय शांति निकेतन (पश्चिम बंगाल) भोलानाथ साहू स्मृति समाजसेवी सम्मान उदय प्रताप सिंह कंचुकी जौनपुर, जुंमई का आजाद स्मृति अवधि सम्मान डॉ० अर्जुन पांडेय अमेठी, बाबू देवकरण सिंह पटेल स्मृति कथा साहित्य सम्मान नंदन पंडित गोंडा को दिया जाएगा। उक्त कार्यक्रम में संत सत्यानंद त्यागी की पुस्तक अस्ति आत्माराम है, विजय चितौरी का कहानी संग्रह, एक किरण उजाले की तथा बच्चों की प्यारी बगिया के नवीनतम अंक का लोकार्पण होगा। कार्यक्रम स्थल पर विशेष रूप से पुस्तक प्रदर्शनी, कला प्रदर्शनी और वर्मी कंपोस्ट प्रदर्शनी भी लगाई जाएगी। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि लोक सेवा आयोग उत्तर प्रदेश अवकाश प्राप्त अध्यक्ष डा. के बी पांडेय, विशिष्ट अतिथि डॉ एम गोविंद राजन व डॉ दयाराम मौर्य रत्न होंगे । कार्यक्रम के संयोजक व संस्थान के अध्यक्ष विज्ञान भूषण विजय चितौरी ने उक्त जानकारी देते हुए साहित्यकारों व पत्रकारों के साथ ही साहित्य प्रेमियों से कार्यक्रम में भाग लेने अपील की है।

मोहन का पुरा धीनपुर में महिला की गुमशुदगी से परिवार चिंतित

● किसी को बिना कुछ बताये घर से निकली महिला

● मऊआइमा पुलिस ने तहरीर के आधार पर गुमशुदगी का मामला किया दर्ज, पुलिस महिला की कर रही तलाश

अखंड भारत संदेश

मऊआइमा। मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम मोहन का पुरा, धीनपुर में एक युवती की गुमशुदगी का मामला सामने आया है। 45 वर्षीय शहनाज बानो बीते दिनाँक 10 मार्च 2025 को करीब 2:30 बजे से लापता है। शहनाज बानो के पति मो० अकरम ने मऊआइमा थाने में मंगलवार को गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराई है। उन्होंने बताया कि बीती 10 मार्च 2025 को अपने मझले बेटे मो. सुहेल को हाईस्कूल की परीक्षा दिलाने बसदेइया गया था। परीक्षा समाप्त होने पर अपने बेटे को लेकर आ रहा था तो रास्ते में मोटरसाइकिल खराब हो गयी मिस्त्री बुलाकर मोटरसाइकिल बनवाया और घर वापस करीब 2:30 बजे आया तो मेरी पत्नी घर पर नहीं थी बच्चों से पूंछा तो बताये कि बाग की ओर गयी है शाम हो गयी लेकिन नहीं आयी तो खोजबीन करने लगा आस-पास गांव व दूर-दराज सभी रिस्तेदारियों एवं संबंधियों में काफी तलाश किया। पूर्व में भी मेरी पत्नी मुझे और बच्चों को छोड़कर बिना बताये चली जाती थी और दो-चार दिन में वापस आ जाती थी इस बार अभी तक वापस नहीं आयी है। आस-पास के इलाकों में पता किया, लेकिन उसका कहीं कोई सुराग नहीं मिला। परिवार को किसी अनहोनी की आशंका है। जिसके कारण थक-हारकर अब उसने पुलिस से मदद की गुहार लगाई। मऊआइमा थाना प्रभारी वीरेंद्र कुमार मिश्रा ने बताया कि प्रार्थना पत्र के आधार पर गुमशुदगी का मामला दर्ज कर लिया गया है। पुलिस मामले की जांच कर रही है और युवती की तलाश में जुटी हुई है।

दो बाईकों के टक्कर में पिता पुत्री घायलअस्पताल में भर्ती

मऊआइमा । सोरांव थाना क्षेत्र के ग्राम देवरिया खनीनार निवासी राकेश कुमार पटेल पुत्र स्वर्गीय गयादीन अपनी पुत्री रूबी को लेकर बाइक से देल्हूपुर रिश्तेदार के यहां जा रहा था। बताया गया है कि जैसे वह मऊआइमा थाना पड़ाव चौराहे से आगे पेट्रोल पंप के निकट पहुंचा एक अन्य बाइक सवार ने लापरवाही पूर्वक गलत दिशा में आकर टक्कर मार दी। जिससे पिता पुत्री गंभीर रूप से घायल हो गए ।जिनका इलाज एक निजी अस्पताल में चल रहा है।

ऊसर की भूमि पर पक्का निर्माण करने पर मुकदमा दर्ज

मऊआइमा। मऊआइमा थाना क्षेत्र के नवाबपुर उर्फ खानपुर गांव में ऊसर की सरकारी जमीन पर गांव का एक व्यक्ति तमाम रोक के बावजूद जबरियन मकान निर्माण कर रहा है ।हल्का लेखपाल का आरोप है कि जब मना किया जाता तो निर्माण कार्य रोक दिया जाता है ।जाने के बाद फिर निर्माण कार्य शुरू कर दिया जाता है। लेखापाल आखिश कुमार यादव ने मऊआइमा थाने में नवाबपुर उर्फ खानपुर निवासी राम मिलन पुत्र राम लाल के खिलाफ लोक सम्पति निवारण अधिनियम के तहत मुकदमा दर्ज करा दिया है।

सांसद प्रिया सरोज ने जंघई जंक्शन का किया निरीक्षण

अखंड भारत संदेश

जंघई जंक्शन का निरीक्षण करतीं सांसद

जंघई। सांसद मछलीशहर प्रिया सरोज एवं उनके पिता पूर्व सांसद तथा केराकत विधायक तूफानी सरोज ने सोमवार को जंघई जंक्शन रेलवे स्टेशन का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने स्टेशन अधीक्षक जंघई कोमल सिंह से सम्बंधित समस्याओं एवं विकास कार्यों की जानकारी लिया। प्रिया सरोज अपने पिता तूफानी सरोज के साथ शाम सात बजे जंघई जंक्शन रेलवे स्टेशन पर पहुंचकर निरीक्षण किया उन्होंने सकुर्लेटिंग एरिया प्लेटफार्म नंबर एक पर यात्री प्रतिक्षालय का निरीक्षण किया। इस दौरान स्थानीय लोगों ने जंघई जंक्शन पर सांसद से अर्चना एक्सप्रेस, नीलांचल एक्सप्रेस गंगा कावेरी, काशी महाकाल एक्सप्रेस, गरीब रथ को रुकवाने की मांग किया। अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत चयनित जंघई स्टेशन पर प्लेटफार्म नंबर एक से पांच को जोडते हुए बाहर निकलने वाले फूटओवर ब्रिज का निर्माण जल्द शुरू कराने के लिए लोगो ने सांसद से मांग किया। सांसद ने लोगो को आश्वस्त किया की लोगो की मांगों को उठाया जायेगा जंघई स्टेशन के विकास के लिए रेल मंत्री से मुलाकात करके मुद्दा उठाया जायेगा । सांसद ने सार्वजनिक शौचालय का जल्द निर्माण करने के लिए स्टेशन अधीक्षक को निर्देश दिया।

जिसमें स्पष्ट रूप से यह चेतावनी दी गई कि किसी भी प्रकार की अनियमितता को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। पूर्व सांसद एवं विधायक तूफानी सरोज के द्वारा किए गए कई महत्वपूर्ण कार्यों को याद करते हुए, यह सुझाव दिया गया कि चूंकि यह जंक्शन मुख्य जंक्शन है, इसलिए यहां कई प्रमुख ट्रेनों का ठहराव सुनिश्चित किया गया था। इसके अतिरिक्त, पेयजल की आपूर्ति, विकलांगों के लिए लिफ्ट और अन्य बुनियादी सुविधाओं की समस्याओं के समाधान हेतु केंद्रीय रेल मंत्री अश्वनी वैष्णव से मुलाकात कर इस दिशा में ठोस कदम उठाने का आश्वासन दिया। इस अवसर पर स्टेशन अधीक्षक जंघई कोमल सिंह, आरपीएफ इंस्पेक्टर आलोक तिवारी, जीआरपी प्रभारी प्रमोद कुमार, विद्युत इंचार्ज दिनेश कुमार पांडेय मौजूद रहे।

अज्ञात वाहन की टक्कर से बुजुर्ग महिला की मौत

जसरा। मंगलवार सुबह 7:00 बजे जसरा ब्लाक के एक नर्सिंग होम के सामने अज्ञात वाहन ने एक बुजुर्ग महिला को टक्कर मार दी जिससे वह गंभीर रूप जख्मी हो गई। सूचना पर पहुंची पीआरबी 112 ने जख्मी महिला को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र जसरु ले गई। जहां पर डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए मर्चरी भेज दिया । जानकारी के अनुसार जगरानी देवी 60 वर्ष पत्नी स्वर्गीय शिवनाथ भारतीया निवासी दौना सोमवार को पंवरी किसी रिश्तेदारी में गई थी। मंगलवार की सुबह पंवरी से अपने घर दौना पैदल जा रही थी। सीएससी जसरा के पास एक नर्सिंग होम के सामने किसी अज्ञात वाहन ने टक्कर मार दिया जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गई। स्थानीय लोगों द्वारा 112 पुलिस को सूचना दी गई। मौके पर पहुंची पीआरवी 112 पुलिस ने इलाज के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र जसरा पहुंचाया है। जहां पर डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

सूचना पर पहुंची घूरपुर पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए पीएम हाउस भेज दिया। गौहनिया चौकी इंचार्ज घनश्याम निषाद द्वारा बताया गया कि महिला की पहचान जगरानी पत्नी स्वर्गीय शिवनाथ भारतीया के रूप में हुई है ।महिला के नाती अमिकेत भारतीय द्वारा प्रार्थना पत्र मिला है। प्रार्थना पत्र के आधार पर मुकदमा पंजीकृत कर लिया गया है ।शव को पोस्टमार्टम के लिए पीएम हाउस भेज दिया गया है। बृद्धा की मौत से परिवार में कोहराम मच गया है।

बस से घर आ रही महिला के बैग से नकदी लाखों के जेवरात चोरी

मऊआइमा। मऊआइमा कस्बा नगर पंचायत के गंजिया बाजार निवासनीय करिश्मा केसरी पत्नी शिवम केसरवानी का कहना है कि यह प्रयागराज गई थी । वह रोडवेज बस से प्रयागराज से सिविल लाइंस बस अड्डे से मऊआइमा के लिए बस पर बैठ कर अपना सारा सामान रख ली। जब मऊआइमा आ गांव।वह अपना सारा सामान ऊतार कर ई रिक्शा से गंजियाबाजार चली आयी। करिश्मा केसरवानी का आरोप है कि वह जब वह बैग खोली तो उसके बैग में तीन सोने का हार,एक कान की झाला,दो नथिया, बेदी तथा चांदी के अनेकों जेवरात नकदी सहित गायब था। करिश्मा केसरवानी ने मऊआइमा थाने में अज्ञात चोरो के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया है।

अनय प्रताप सिंह की 17 वर्षों की स्वर्णिम यात्रा को मिला भव्य सम्मान

राजा कमलाकर इंटर कॉलेज शंकरगढ़ में हुआ भव्य कार्यक्रम

अखंड भारत संदेश

शंकरगढ़। राजा कमलाकर इंटर कॉलेज, शंकरगढ़ में मंगलवार को कॉलेज के पूर्व प्रधानाचार्य अनय प्रताप सिंह के सम्मान में एक भावुक और भव्य समारोह का आयोजन किया गया। समारोह का शुभारंभ सरस्वती वंदना और माल्यार्पण के साथ हुआ।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि माध्यमिक शिक्षक संघ के प्रदेश अध्यक्ष सुरेश कुमार त्रिपाठी ने अनय प्रताप सिंह के 17 वर्षों के प्रधानाचार्यीय कार्यकाल की प्रशंसा करते हुए कहा,शिक्षक के रूप में जब से उन्होंने विद्यालय की जिम्मेदारी संभाली, तभी से विकास की यात्रा शुरू हुई। खेलकूद, पढ़ाई और अनुशासन से लेकर विद्यालय के चतुर्दिक विकास तक, उन्होंने संस्था को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया। उनका समर्पण हमेशा याद रखा जाएगा।

कॉलेज के प्रबंधक राजा महेन्द्र प्रताप सिंह भावुक होते हुए बोले, अनय प्रताप 1987 में जब विद्यालय आए, तब से धीरे-धीरे वे मेरे अत्यंत निकट आ गए। हमारे संबंध महज प्रबंधक और प्रधानाचार्य तक सीमित नहीं रहे, बल्कि एक सच्ची मित्रता में बदल गए। उनका योगदान अविस्मरणीय है, जिसे विद्यालय परिवार और समाज कभी भुला नहीं सकता। सम्मान ग्रहण करते समय पूर्व प्रधानाचार्य अनय प्रताप सिंह ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए कहा, यह सम्मान मेरे लिए नहीं, अपितु पूरे कॉलेज और समाज के लिए है। राजा साहब के सहयोग के बिना यह सब संभव नहीं था। मैंने ईमानदारी और दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ कार्य किया और एक सकारात्मक माहौल बनाया। यह पल मेरे लिए अत्यंत गर्व और भावुकता से भरा है। कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व शिक्षक गुलाब सिंह ने की, जबकि संचालन का दायित्व अत्यंत प्रभावशाली रूप से डॉ. बृजेश कुमार यादव ने निभाया।

इस अवसर पर प्रमुख रूप से उपस्थित गणमान्य अतिथियों एवं शिक्षकों में कुलभास्कर कॉलेज के प्रिंसिपल पी. पी. सिंह, डॉ. बृजेश सिंह, डॉ. इंदू सिंह (प्रिंसिपल, राजकीय बालिका इंटर कॉलेज प्रयागराज), नंदिनी तिवारी, संतोष सिंह, याघवेंद्र सिंह, अनुज कुमार पांडेय, शंकरगढ़ एसओ ओम प्रकाश, प्रधानाचार्य रामबोध खरवार, डॉ अभिषेक सिंह, एम.पी. सिंह, प्रिंसिपल सविता निर्मल, राकेश श्रीवास्तव, कमलाकर सिंह, भानु प्रताप सिंह, रामखेलावन गुप्ता, कॉलेज के प्रबंध समिति के मंत्री अमरेंद्र सिंह, सनद मिश्रा, पंडित त्रियुगीकान्त मिश्र, राकेश चंद्र मिश्रा, ओ. पी. धारिया, हरी कृष्ण,राम सिंह,योगेंद्र पांडेय, डॉ. विनोद सिंह,अरविंद कुमार गौतम,हरी कृष्ण, लाडली वर्मा, दिलीप केसरवानी सभासद अतुल प्रकाश, कमलेश कुमार, चंदन साहू, आरके सिंह समेत कई गणमान्य लोग मौजूद रहे।

समस्याओं के निदान हेतु ॐ ब्रह्म दरबार साधना केंद्र का जसरा में लगा दिव्य दरबार

अखंड भारत संदेश

● मोह माया से मुक्त होकर करें ईश्वर सेवा : जयशंकर महाराज

● हमे दुख की भांति सुख में भी ईश्वर को याद करना चाहिए : जयशंकर महाराज

जसरा। जसरा के शिवपुरी कालोनी में ॐ ब्रह्म दरबार साधना केंद्र का दिव्य दरबार जयशंकर महाराज ने लगाया। मीडिया से बात करने पर उन्होंने बताया कि ईश्वर को मन में जगह देने मात्र से कष्ट दूर होते है, इसके लिए हमें हर तरह के मोह माया से दूर होकर ईश्वर की शरण में जाना होगा। हमे सुख की तरह दुख में भी ईश्वर को नहीं भूलना चाहिए, आज कल की युवा पीढ़ी से मै यही कहना चाहूंगा कि माता पिता की सेवा भी जरूर करें क्योंकि ईश्वर का दूसरा रूप माता पिता ही है।

बता दें कि पूरे भारत देश में लगने वाला यह दिव्य दरबार प्रत्येक महीने कही न कही लगता ही है, जैसे ही भक्तों को जानकारी मिलती है अपनी सुविधा अनुसार भक्त दरबार में पहुंचते है और बिना किसी शुल्क के लाभ लेते है। दरबार में मरीजों से किसी भी तरह का कोई शुल्क नहीं लिया जाता। संचालन ज्ञानेंद्र पाठक ने किया। दरबार में नेपाल, गुजरात, महाराष्ट्र, राजस्थान, बिहार, दिल्ली, मुंबई, मिजार्पुर, चंदौली, बलिया, से मरीज पहुंचे थे। प्रमुख रूप से इंजीनियर सच्चिदानंद द्विवेदी, नेत्रनारायण मिश्र, विनीत द्विवेदी, अभय मिश्रा, आलोक पाठक, दीपू पाठक, ऋतिक पांडेय, अनुराग, बिप्पू शर्मा, अर्चना, अनीता, सुषमा, विनय, शिवम पांडेय संतोष सिंह, भोलू, अंबुज, सोनी, रागिनी, ज्योति, प्रसून, निखिल, नितिन शर्मा सहित सैकड़ों लोग मौजूद रहें।

भगवान के नाम मात्र से ही व्यक्ति भवसागर से पार उतर जाता है : अशोकानंद महाराज

जंघई। कमासिन रोड, जंघई बाजार में मुख्य यजमान रामजी जायसवाल के निवास पर आयोजित संगीतमय श्रीमद्भागवत कथा का शुभारंभ सोमवार को मंडप प्रवेश, देव पूजन, श्रीमद्भागवत महात्म्य बैठकी के साथ हुआ। मंगलवार को कथावाचक पंडित अशोकानंद महाराज द्वारा शुकदेव आगमन, कपि देवहूति संवाद, ध्रुव चरित्र प्रसंग का वर्णन करते हुए कहा कि ईश्वर के समक्ष प्रायश्चित करना ही एक मात्र मुक्ति पाने का उपाय है तथा ईश्वर आराधना के साथ अच्छे कर्म करने का आह्वान किया। भागवत कथा ज्ञान यज्ञ सप्ताह में उपस्थित श्रोताओं को जीवन में सत्संग व शास्त्रों में बताए आदर्शों का श्रवण करने का आह्वान करते हुए कहा कि सत्संग में वह शक्ति है, जो व्यक्ति के जीवन को बदल देती है। उन्होंने कहा कि व्यक्तियों को अपने जीवन में काम, क्रोध, लोभ, मोह, हिंसा आदि का त्यागकर विवेक के साथ श्रेष्ठ कर्म करने चाहिए। महाराज ने सृष्टि विस्तार, कपिल देवहूति संवाद, सती चरित्र, ध्रुव चरित्र आदि प्रसंगों का वर्णन करते हुए कहा कि भगवान के नाम मात्र से ही व्यक्ति भवसागर से पार उतर जाता है तथा ज्ञानी पुरुषों के साथ सत्संग कर ज्ञान प्राप्त करने व अपने जीवन को सार्थक करने का आह्वान किया। कथा में प्रस्तुत किए गए भजनों पर श्रोता भाव विभोर होकर नाचने लगे कथा के पश्चात आरती प्रसाद वितरण किया गया। इस अवसर पर परिजनों में अर्चना देवी, मेहीलाल जायसवाल, राजेश जायसवाल चिरौंजी, महेंद्र कुमार जायसवाल, पन्ना लाल जायसवाल, शिवम, आर्यन, सुमित, अनमोल जायसवाल सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

बीएसए ने सेंट जोसफ कॉलेज को नोटिस भेजा

लिखा- आपकी मान्यता नहीं, बिना योग्यता वाले टीचर पढ़ा रहे, 31 सवालों के जवाब मांगे

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। सेंट जोसफ कॉलेज को जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी प्रवीण कुमार तिवारी ने नोटिस भेजी है। बीएसए ने स्कूल से 31 सवालों के जवाब मांगे हैं। लिखा है कि स्कूल की मान्यता नहीं है। सब स्टैंडर्ड शिक्षक बच्चों को पढ़ा रहे हैं। दरअसल, बीएसए के पास एक अभिभावक की शिकायत आई थी। इसमें आरोप हैं कि स्कूल अपनी स्थापना के समय (1884) से बिना मान्यता के संचालित हो रहा है। वहीं, स्कूल के फादर ने एक समाचार पत्र से कहा- 1884 से यह विद्यालय चल रहा है, बिना मान्यता के तो चलेगा नहीं। बीएसए प्रवीण कुमार तिवारी ने बताया कि स्कूल प्रबंधन को नोटिस भेजकर मान्यता समेत अन्य डॉक्यूमेंट मांगे गए हैं, मगर स्कूल की तरफ से भेजे नहीं गए हैं।

बीएसए ने 31 सवालों के मांगे जवाब

विद्यालय किस समिति या ट्रस्ट द्वारा संचालित है, संबंधित साक्ष्य के साथ स्वप्रमाणित छायाप्रति उपलब्ध कराएं।किस कक्षा से किस कक्षा तक विद्यालय की मान्यता है, इसका साक्ष्य दें।

विद्यालय को किस विभाग द्वारा मान्यता के लिए अनापत्ति प्रमाण पत्र निर्गत किया गया है। विद्यालय को अल्पसंख्यक संस्था घोषित किए जाने संबंधित शासन या विभाग के आदेश की कापी।यदि विद्यालय ज्ञान दीप विद्या सोसाइटी द्वारा संचालित है, तो उसके पंजीकरण एवं उसके सदस्यों की प्रमाणित सूची दीजिए।अपने संस्थान के नाम एवं स्वामित्व में कब-कब परिवर्तन किया गया, उसकी अनुमति किस प्राधिकारी द्वारा प्रदत्त है।जिस मान्यता बोर्ड सें मान्यता है उसके संबंध की तिथि क्या है।

विद्यालय में कितने हिंदू, मुस्लिम, इसाई व अन्य धर्मों के छात्र हैं।प्री प्राइमरी कक्षाएं संचालित करने के लिए आपको किस संस्थान या विभाग से मान्यता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत विद्यालय में शिक्षा का माध्यम क्या है।आपके संस्थान द्वारा राज्य व केंद्र सरकार द्वारा संसूचित किसी संस्था से कभी कोई सेफ्टी आडिट कराया गया, इसे संबंधित स्पष्टीकरण दें।आरटीई के सेक्शन 12 के तहत अपने विद्यालय की मैपिंग नहीं कराई गई, इसका कारण स्पष्ट करें।

उहरठ के आरंभिक पहचान के लिए आपके विद्यालय में क्या व्यवस्थाएं हैं।प्रबंध समिति, माता पिता, वरिष्ठ छात्र या वरिष्ठ छात्राओं के द्वारा की भी संस्थान द्वारा सेफ्टी एंड सिक्योरिटी आडिट नहीं कराया गया और न ही इसके लिए किसी शिक्षक को नियुक्त किया गया है, क्यों?एनईपी 2020 के तहत विद्या प्रवेश कार्यक्रम का संचालन नहीं किया गया, स्पष्टीकरण दें।शिक्षक छात्र उपस्थिति अभी भी मैन्युअल ही है, स्पष्ट करें।स्टेट स्कूल स्टैंडर्ड अथारिटी से अभी तक आत्म प्रमाणन नहीं किया गया है, स्पष्टीकरण दें।विद्यालय रख रखाव मद में किया गया खर्च अत्यंत न्यून है जो कि बच्चों के लिए जोखिम भरा वातावरण उत्पन्न करता है। स्पष्ट करें। विद्यालय को प्रदत्त मान्यता में प्रत्येक कक्षा में कितने वर्ग संचालन की अनुमति प्रदान की गई, साक्ष्य दें।

प्रत्येक कक्षा में अत्यधिक संख्या में छात्रों का नामांकन किया गया है, जो आईटीई के मानकों का उल्लंघन है। स्पष्टीकरण दें। विद्यालय को निर्गत एनबीसी प्रमाण पत्र एवं अग्नि शमन प्रमाण पत्र की प्रति उपलब्ध कराएं। शिकायतकर्ता के अनुसार, विद्यालय को अल्पसंख्यक बताया जाता है लेकिन यह अल्पसंख्यक विभाग में पंजीकृत नहीं है, इसका साक्ष्य दें।विद्यालय में प्री प्राइमरी की कोई बिल्डिंग नहीं है फिर भी प्राइमरी कक्षा संचालित है, स्पष्टीकरण दें।उहरठ के लिए कोई शौचालय व यूरिनल की व्यवस्था नहीं है, यदि है तो साक्ष्य दें।विद्यालय में बच्चों का कभी स्वास्थ्य परीक्षण नहीं होता है तथा वार्षिक स्वास्थ्य अभिलेख नहीं किया जाता है, स्पष्टीकरण दें।विद्यालय में इंटीग्रेटेड विज्ञान प्रयोगशाला नहीं है। स्पष्टीकरण दें।

विद्यालय में 5346 छात्रों में सिर्फ 3159 छात्रों की अपार आईडी बनाई गई। 2174 छात्रों की अपार आईडी क्यों नहीं बनी स्पष्ट करें। शिकायतकर्ता के अनुसार, पढ़ाने वाले कोई भी शिक्षक केंद्र सरकार निर्धारित योग्यता को धारित नहीं करते। इसका पूरा डिटेल उपलब्ध कराएं।

कृषक समृद्धि आयोग के सदस्य ने देवरी कला गोशाला का किया निरीक्षण, फल खिलाकर लिया आशीर्वाद

गोवंशो की सुरक्षा के लिए चहारदीवारी बनवाने का दिया आश्वासन

गौशाला का निरीक्षण करते कृषक समृद्धि आयोग के सदस्य कुलजीत सिंह

मेजा। कृषक समृद्धि आयोग के सदस्य कुलजीत सिंह ने सोमवार को देवरी गौशाला का निरीक्षण किया। उन्होंने गौशाला में साफ सफाई भूसा - चारा गोवंशों के स्वास्थ्य पानी आदि व्यवस्था की जांच पड़ताल की। इस दौरान श्री सिंह ने गोवंशों को फल खिलाकर उनका आशीर्वाद लिया। इधर ग्राम प्रधान भवानीपुर संतोष पाण्डेय द्वारा चहारदीवारी बनाने की मांग पर उन्होंने आश्वासन दिया कि जल्द देवरी गौशाला में गोवंशों की सुरक्षा के लिए चहारदीवारी बनाई जाएगी। देवरी गौशाला में चारा पानी साफ सफाई की व्यवस्था देखते हुए अधिकारियों ने ग्राम प्रधान भवानीपुर संतोष पाण्डेय की सराहाना किया। इस मौके पर मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी एसएन यादव, पशु चिकित्सा अधिकारी प्रदीप मिश्रा, पशु धन प्रसार अधिकारी टीएन शुक्ला, सचिव बृजेश द्विवेदी भाजपा के वरिष्ठ नेता मांडवी शरण द्विवेदी, प्रमोद पाण्डेय, जय शंकर पाल, सतीश पाण्डेय, राजन पाण्डेय तथा सत्य प्रकाश आदि के अलावा कई अन्य लोग प्रमुख रूप से मौजूद रहे।

मेजा खास बाजार में दो दशक पूर्व बनी नाली ध्वस्त, बाजार वासी परेशान

मेजा। तहसील मुख्यालय के समीप स्थित मेजा खास बाजार में दो दशक पूर्व सड़क के किनारे बनी नाली ध्वस्त हो गई है। आलम यह है कि बाजार से निकला गंदा पानी सड़क पर बहता रहता है। आवागमन करने वाले राहगीरों को परेशानी झेलनी पड़ रही है। मेजारोड और कोरांव को जोड़ने वाला मार्ग बगैर बारिश के ही जलमग्न हो जाता है। नाली ध्वस्त होने के कारण जल निकासी न होने से पूरे बाजार के व्यापारियों के घरों के नाबदान का पानी सड़क पर बहता रहता है। बाइक व साइकिल सवार आए दिन गिरकर घायल होते रहते हैं। इसी सड़क से होकर एसडीएम, तहसीलदार, एसीपी सहित अन्य आलाधिकारियों का आवागमन होता है। यही नहीं कई महाविद्यालय, महिला पालिटेक्निक कालेज, अस्पताल, थाना, एसीपी कार्यालय, पोस्टाफिस, ब्लाक सहित तहसील दफ्तर होने से इस मार्ग पर वाहनों का दबाव अधिक रहता है। बाजार के लोगों का कहना है कि सड़क चौड़ीकरण के दौरान पीडब्ल्यूडी द्वारा नाली ध्वस्त हो गई थी। व्यापारियों ने सड़क बनने के बाद नाली निर्माण होने की उम्मीद की थी लेकिन सड़क बनने के बाद ठेकेदार नदारद गया। उसके बाद दो दशक से मेजा खास बाजार वासियों ने ध्वस्त नाली के कारण गंदगी से रूबरू हो रहे हैं। ग्राम प्रधान द्वारा भी मेजा खास बाजार की नाली निर्माण कराने में दिलचस्पी नहीं दिख रही है, जिससे व्यापारियों में खासा नाराजगी है। बाजरवासियों ने लोक निर्माण विभाग से जल निकासी व्यवस्था के लिए नाली निर्माण कराने की मांग की है।

> मेजा खास बाजार में नाली निर्माण की जरूरत है। नाली निर्माण के लिए प्रस्ताव भेजा गया था लेकिन शासन द्वारा स्वीकृति नहीं मिली। स्वीकृति मिलते ही नाली निर्माण करवा दिया जायेगा।
>
> **-मो. अरसद,सहायक अभियंता लोक निर्माण विभाग**

वक्फ संशोधन विधेयक पूरे देश में लागू होने पर भाजपा युवा नेता ने गृहमंत्री का जताया आभार

मेजा। भारत सरकार गृहमंत्री अमितशाह द्वारा अधिसूचना जारी कर वक़्फ़ संशोधन विधेयक 2025 को पूरे देश में लागू करने की घोषणा के फैसले का युवा भाजपा नेता मुकेश शर्मा ने स्वागत करते हुए बधाई दिया है।

उल्लेखनीय है कि वक्फ संशोधन विधेयक पूरे देश में लागू होने के गृहमंत्री के फैसले को सही बताते हुए युवा नेता मुकेश ने कहा कि अब वक्फ के नाम पर लोगों की जमीनों पर डाका डालने वाले माफियाओं का खेल खत्म होगा और गरीब मुसलमानों के हक की हकतालफी करने वाले लोग बेनकाब होंगे। भाजपा नेता मुकेश शर्मा ने देश के यशश्वी पीएम मोदी और गृहमंत्री अमितशाह का दिल से आभार जताया है।

मन्दिर के सामने खुल गयी शराब की दुकान

बगल में बालिका इंटर कॉलेज और है अस्पताल

कोरांव। थाना कोरांव के ग्राम खजुरी खुर्द में राम जानकी शिव जी के मंदिर के सामने शराब की दूकान खुल जाने से ग्रामीणों में रोष व्याप्त हो गया है। बता दें कि मंदिर से लगभग 40 मीटर की दूरी पर ही दारू की दूकान खोली गयी है। रमा निवास इन्टर कालेज से लगभग 75 मीटर की दूरी तथा तालाब से लगभग 40 मीटर की दूरी एवं सामुदायिक अस्पताल से लगभग 50 मीटर की दूरी पर यह शराब की दूकान स्थित है।ग्राम के प्रमुख समाज सेवी हरिश्चंद्र खंडेकर सेवा निवृत्त रेलवे-स्टेशन अधीक्षक ने जिम्मेदार अधिकारियों से अनुरोध किया है कि मौके की जांच कर शराब की दुकान को मंदिर, तालाब, अस्पताल और विद्यालय से 100 मीटर की दूरी पर संचालित करायी जाय। सरकारी नियमों के अनुसार शराब की दूकान मंदिर,अस्पताल, विद्यालय या धार्मिक स्थलों से 100 मीटर के परिधि में संचालित नहीं कराई जा सकती है। ग्राम के अन्य गणमान्य व्यक्तियों पूर्व प्रधान आदि ने भी रोष व्यक्त करते हुए शराब की दूकान मंदिर विद्यालय एवं अस्पताल के पास से अन्यत्र 100 मीटर की दूरी पर संचालित किए जाने की अपील की है।

स्कूल चलो अभियान के तहत प्राथमिक विद्यालय बंधवा के छात्र-छात्राओं ने निकाली रैली

रैली में शामिल लोग

अखंड भारत संदेश

मेजा। बीआरसी मेजा के प्राथमिक विद्यालय बंधवा के छात्र छात्राओं द्वारा स्कूल चलो अभियान के अंतर्गत रैली निकाली गई। इस अभियान की शुरूआत स्कूल के प्रधानाध्यक अमित शुक्ला के नेतृत्व में खंड शिक्षा अधिकारी मेजा के निर्देश पर किया गया। इस दौरान पूरे गांव में एक भी बच्चा छूटा संकल्प हमारा टूटा का नारा लगाते हाथों में तख्ती लेकर बच्चे पूरे उत्साह और गाजे बाजे के साथ भ्रमण कर रैली निकाली। रैली में बच्चों के अतिरिक्त शिक्षक शिक्षिकायें भी प्रमुख रूप से मौजूद रही।

ताजिया के रास्ते पर अवैध कब्जे से रोष

झूंसी। थाना क्षेत्र के कोहना में ताजिया के रास्ते पर हो रहे अवैध कब्जे को लेकर लोगो मे आक्रोश है, ताजियादारों ने मामले की लिखित शिकायत पुलिस से की है। आरोप है कि पुलिस भी मामले में हीलाहवाली कर रही है। झूंसी के वार्ड 75 कोहना में ताजिया रखने और ताजिया जाने वाले मार्ग पर गांव के ही एक दबंग द्वारा बाउंड्री बना कर अवैध कब्जा किया जा रहा जिससे ताजियादारो के साथ स्थानीय लोगों में भी गुस्सा है लोगों ने मामले की लिखित शिकायत पुलिस व से करते हुए अवैध कब्जे को रोकने की मांग की है। ताजियादार मो. महताब, रिजवान अली, तौहीद अहमद सहित दर्जनों लोगों का कहना था कि 27 जून से मोहर्रम का त्यौहार प्रारंभ होगा इससे पहले दबंग अवैध निर्माण कर महोल बिगाड़ने की कोशिश में लगे हुए हैं। ताजियादारो ने अवैध कब्जे को रोकने की गुहार मुख्यमंत्री, मंडलायुक्त व जिलाधिकारी से भी की गई है।

नवयुवक ब्राह्मण समाज ने प्रथम शहीद मंगल पांडे को दी श्रद्धांजलि

सहसों। नवयुवक ब्राह्मण समाज के केंद्रीय कार्यालय गारापुर में मंगलवार को देश के महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, स्वतंत्रता संग्राम के प्रथम बलिदानी मंगल पांडे जी के पुण्यतिथि पर एक गोष्ठी आयोजित कर समाज के लोगों ने श्रद्धा सुमन अर्पित कर सच्ची श्रद्धांजलि देते हुए शत शत नमन किया। गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्वर्गीय पंडित रामलाल मिश्र के पौत्र एवं नवयुवक ब्राह्मण समाज के संस्थापक/अध्यक्ष पंडित लवकेश मिश्र ने कहा कि मंगल पाण्डे महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे। उन्होंने 1857 में भारत के स्वाधीनता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाया और फिरंगियों को अपने पराक्रम का लोहा मनवाते हुए प्रथम शहीद के रूप में अपने प्राणों को न्यौछावर कर दिया। उन्होंने कहा हम सब आज एक बार फिर भारत के लाल प्रथम शहीद पराक्रमी योद्धा को हृदय से श्रद्धांजलि देते हुए नमन करते हैं। इस अवसर पर उन्होंने भारत सरकार एवं उत्तर प्रदेश सरकार से देश के प्रथम शहीद मंगल पांडे के नाम पर 8 अप्रैल को सार्वजनिक अवकाश घोषित करने की मांग किया है। इस अवसर पर प्रमुख रूप से कमला कांत शुक्ला, विजय तिवारी, प्रमोद शुक्ला, किशन शुक्ला, सूर्यमणि पांडे, शिवनारायण, प्रवेश शुक्ला, चिंतामणि शुक्ला एवं के बी द्विवेदी सहित समाज के आदि लोग श्रद्धांजलि देते उपस्थित रहे।

नैनी में कपड़ा व्यापारी की भाभी के निधन पर शोक

नैनी। नैनी क्षेत्र के सुप्रसिद्ध कपड़ा व्यापारी कल्लू के बड़े भाई महेंद्र गिरी की धर्मपत्नी शांति गोस्वामी (65) का सोमवार को हृदय गति रुकने से निधन हो गया। आपको बतादें कि जितेंद्र गिरी उर्फ कल्लू (बाबा ड्रेसेज) नामक नैनी बाजार में कपड़े की दुकान है जो नैनी क्षेत्र में सुप्रसिद्ध है। व्यापारियों में शोक। मंगलवार की सुबह सोमेश्वर महादेव मंदिर से सोमेश्वर घाट पर उनका दाह संस्कार किया गया।

ग्राम पंचायत अल्हवा की खुली बैठक आयोजित

कोरांव। ग्राम पंचायत अल्हवा में ग्राम सचिवालय भवन पर खुली बैठक का आयोजन ग्राम प्रधान अहद अहमद सिद्दीकी की अध्यक्षता में आहुत हुई। जिसका संचालन ग्राम पंचायत अधिकारी राजन ने किया। बैठक में ग्रामीणों के समक्ष इंदिरा आवास लाभार्थियों की पात्रता और आवास से वंचित लाभार्थियों का चयन किया गया जिससे बचे लाभार्थियों को टैक किया जा सके। और सत्यापन भी किया गया। बैठक में ग्राम सभा के सभी सदस्य और लाभार्थी उपस्थित रहे।

मामूली बात को केकर घुस कर मारा पीटा गया तोड़ फोड़ की गई मुकदमा दर्ज

मऊआइमा। मामूली बात को लेकर पड़ोसी एक राय हो कर घर में घुस काठी डंडो से कर मारे पीटे तोड़ फोड़ किये पुलिस ने एक माह बाद मुकदमा दर्ज किया है। मऊआइमा थाना क्षेत्र के अलावलपुर तिलहरा गांव निवासनीय जगरानी देवी पत्नी छेदीलाल का कथन है कि मामूली बात को लेकर पडोसी एक राय होकर लाठी डंडा लेकर घर में घुस कर उसे और उसके पति छेदीलाल, पुत्री सोनी देवी,बडे पुत्र राजेश कुमार,बहू कंचन देवी को मार पीट कर लहुलुहान कर दिए। उक्त घटना नौ मार्च की शाम की है। आरोप है कि थाने आने पर कोई सुनवाई नहीं हो रही थी। बहुत दबाव के बाद एक माह पर राकेश कुमार और उसकी पत्नी सरोजा देवी और राकेश के पुत्र नाम अज्ञात के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया तथा मेडिकल कराया गया। पुलिस मुकदमा दर्ज कर मामले की जांच कर रही है।

बच्चों की विदाई व सम्मान के साथ स्कूल चलो अभियान शुरू

अखंड भारत संदेश

शंकरगढ़। मंगलवार को प्राथमिक विद्यालय कठहा बेनीपुर में स्कूल चलो अभियान के अंतर्गत बच्चों की विदाई एवं सम्मान समारोह का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर ग्राम प्रधान, विद्यालय प्रबंध समिति के अध्यक्ष एवं सदस्यगण, अभिभावकगण तथा अनेक गणमान्य व्यक्तियों की गरिमामयी उपस्थिति रही।

कार्यक्रम की शुरूआत विद्यालय के बच्चों द्वारा प्रस्तुत रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों से हुई, जिनमें बच्चों की प्रतिभा और उत्साह देखने योग्य था। कक्षा 5 के उत्तीर्ण छात्रों को स्मृति चिन्ह एवं पुरस्कार प्रदान किए गए। साथ ही प्रत्येक कक्षा के प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया।

विद्यालय के प्रधानाध्यापक अरुण कुमार त्रिपाठी ने सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि शिक्षक की असली सफलता उसके विद्यार्थियों की उपलब्धियों से मापी जाती है। उन्होंने ग्रामवासियों व विद्यालय प्रबंध समिति से अपील की कि वे 6 से 14 वर्ष आयु वर्ग के सभी बच्चों का विद्यालय में नामांकन सुनिश्चित करें तथा उन्हें नियमित रूप से विद्यालय भेजें।अध्यापक संघ के अध्यक्ष बृजेश सिंह ने विद्यालय के शिक्षकों द्वारा किए गए उत्कृष्ट कार्यों की सराहना की और कहा कि ऐसे प्रयास सभी शिक्षण संस्थानों के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं।इस अवसर पर ग्राम प्रधान, शिक्षक संकुल प्रभारी कमलेश सिंह, पद्माकर सिंह, डॉ. अनूप सिंह एवं श्रीमती शारदा सिंह ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम की अध्यक्षता विद्यालय प्रबंध समिति की अध्यक्ष श्रीमती संगीता ने की, जबकि सफल संचालन शिक्षिका श्रीमती मोनिका सिंह द्वारा किया गया।कार्यक्रम के अंत में अतिथियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापन दिलीप सिंह ने किया। इस अवसर पर देवेंद्र मिश्र, मिथिलेश कुमारी, श्यामकली, राकेश प्रजापति, श्रीमती मालती सहित अनेक ग्रामवासी, अभिभावक एवं गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

हाइवे पर बनी पुलिया पर फल दुकानदारों का अवैध कब्जा

अखंड भारत संदेश

जारी। यमुनानगर के राष्ट्रीय रीवा राज मार्ग 30 पर जारी बाजार नहर चौराहे पर हाइवे पर बनी पुलिया पर अवैध ढंग से कई वर्षो से फलों की दुकान लगी हुई है। जिससे जारी रजबाह में खराब फल व कचड़ा नहर और हाइवे पर बने डिवाइडरो में फेंक देते है। गंदगी फैली रहती है।गर्मी के मौसम में सड़े फल से दुर्गंध आती है नहर में गंदगी का अंबार लगा हुआ है। हाइवे पुलिया में लगी दुकानों के चलते आए दिन दुर्घटना घटती रहती है। सिंचाई विभाग के कर्मचारियों के मिली भगत के चलते अवैध दुकानें संचालित हो रही है। कई बार एनएचआई विभाग के अधिकारियों केअतिक्रमण हटाने के निर्देश के बावजूद अवैध कब्जा नही हट रहा है। हाइवे से आने जाने वाले राहगीरों को दिक्कत का सामना करना पड़ता है। एक सप्ताह पूर्व हाइवे पर लगी फल के दुकानों में जा घुसी जिससे चालक घायल हो गया था बोलेरो कार क्षतिग्रस्त हो गई थी। जिम्मेदार अधिकारियों का ध्यान इस ओर नही जा रहा है। जिससे दुर्घटना होने की संभावना बनी रहती है। कई बार एनएचआई विभाग की टीम अतिक्रमण हटाने आई लेकिन फल दुकानदारों का अतिक्रमण नही हट सका और एनएचआई विभाग के अधिकारियों को वापस जाना पड़ा।

डीएम ने मनरेगा एवं कन्वर्जेंस के माध्यम से कराए जा रहे कार्यों की गुणवत्ता को परखा

● जिलाधिकारी ने खुयलन वेटलैंड संरक्षण एवं इको पर्यटन स्थल का किया निरीक्षण

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिलाधिकारी शिव सहाय ने सकरनी नदी के उद्गम स्थल खुयलन वेटलैंड संरक्षण एवं इको पर्यटन स्थल ग्राम पंचायत नेवाड़ी विकासखंड मांधाता में मनरेगा एवं कन्वर्जेंस के माध्यम से कराए जा रहे कार्यों का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी द्वारा सर्वप्रथम पौधरोपण किया गया तथा संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए। जिलाधिकारी ने वन विभाग के रेंज आफिसर को निर्देशित किया कि झील के बांधो पर वृक्षारोपण वन विभाग अपने विभाग के अंतर्गत प्राप्त लक्ष्य में समाहित करके कराएगा तथा वृक्षारोपण की जिम्मेदारी वन विभाग की होगी। पूरी झील की पैमाइश करने तथा अतिक्रमण की स्थिति में अतिक्रमण मुक्त कराए जाने के निर्देश दिए गए। डीसी मनरेगा को निर्देशित किया कि लाइन डिपार्मेंट से भी कार्य कराएं जिससे कार्य की गुणवत्ता मानक के अनुरूप रहे। नदी पर बन रहे रपटा पुल को मानक के अनुरूप बनाए जाने के निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिए। निरीक्षण के दौरान मुख्य विकास अधिकारी दिव्या मिश्रा, परियोजना निदेशक डीआरडीए दयाराम यादव, उपायुक्त श्रम रोजगार, अधिशासी अभियंता सिंचाई, प्रभागीय वनाधिकारी, जिला उद्यान अधिकारी, जिला भूमि संरक्षण अधिकारी, सहायक अभियंता लघु सिंचाई, डीपीआरओ एवं अन्य संबंधित विभाग के अधिकारी/कर्मचारी मौजूद रहे।

निरीक्षण करते जिलाधिकारी

गबन के मामले में ग्राम प्रधान निलंबित, त्रिस्तरीय समिति गठित

बेलखरनाथ धाम। ग्राम पंचायत में कराएं गए विकास कार्यों में गबन करने के मामले में प्रधान को डीएम ने निलंबित करते हुए त्रिस्तरीय समिति गठित कर दी है। बाबा बेलखरनाथ धाम के पिपरी खालसा गांव में योगेश मिश्रा योगी ने से जिलाधिकारी को शिकायती पत्र देकर आरोप लगाया था कि ग्राम पंचायत में ग्राम प्रधान ने भारी घोटाला किया है।कई जगह बगैर काम कराएं ही रूपए निकाल लिया गया है। मामले को गंभीरता से लेते हुए डीएम शिव सहाय अवस्थी ने जांच कराई।जिसमें भारी अनियमितता बरती गई थी।जांच रिपोर्ट आने पर जिला अधिकारी ने ग्राम प्रधान सुरेश कुमार गौड़ को निलंबित करते हुए त्रिस्तरीय समिति गठित कर दी है। जिसमें अजय कुमार को अध्यक्ष, इंद्रावती तथा बृजेश को सदस्य नामित किया गया है।ग्राम पंचायत में अब विकास कार्य इन्हीं की देखरेख में कराएं जाएंगे।

न्यूज झरोखा

दिल्ली की मुख्यमंत्री पर अपमानजनक टिप्पणी को लेकर भाजपा नेत्री ने की शिकायत

लालगंज। दिल्ली की मुख्यमंत्री को लेकर सोशल मीडिया पर आपत्तिजनक टिप्पणी को लेकर मंगलवार को यहां भाजपा नेत्री ने लीलापुर थाने में कार्रवाई के लिए पुलिस को तहरीर दी है। लीलापुर थाना के तेजगढ़ निवासिनी प्रतिभा सिंह भाजपा महिला मोर्चा काशी क्षेत्र कोषाध्यक्ष है। प्रतिभा ने लीलापुर पुलिस को दिये गये शिकायती पत्र में कहा है कि लालगंज थाने के एक गांव के आरोपी ने सात अप्रैल को दिल्ली की मुख्यमंत्री एवं भाजपा महिला मोर्चा की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रेखा गुप्ता के खिलाफ फेसबुक पर अपमानजनक टिप्पणी की है। शिकायती पत्र में कहा गया है कि आरोपी द्वारा की गयी अभद्र टिप्पणी से मातृ शक्तियों का अपमान हुआ है। भाजपा नेत्री ने महिला मोर्चा की कार्यकताओं के साथ शिकायती पत्र पर पुलिस से आरोपी के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर कार्रवाई की मांग की है। लीलापुर एसओ अरूण सिंह का कहना है कि शिकायती पत्र को साइबर थाने भेजवाया गया है, जांच कर कार्रवाई की जाएगी।

पीड़ित परिवार को दी आर्थिक मदद

प्रतापगढ़। नगर पंचायत गड़वारा अध्यक्ष के प्रतिनिधि सचिन सिंह शोलू ने मृतक रोशन की पत्नी सविता देवी को पचास हजाररुपए की आर्थिक मदद दी। वहीं नगर पंचायत में संविदा पर नौकरी भी देने का आश्वासन दिया।अंतू थाना क्षेत्र के डंगरी गांव में दो पक्षों में हुई मारपीट के बाद घायल रोशन की मौत हो गई। रोशन की मौत के बाद पत्नी सविता पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा। घटना के बाद मौके पर पहुंचे नगर पंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि सचिन सिंह शोलू मृतक की पत्नी सविता और बच्चों की हालत देख उनके मसीहा बन गए। सविता को दस हजार रुपए नगद और चालीस हजार रुपए का चेक देकर हर संभव मदद का भरोसा दिलाया। वहीं सविता को नगर पंचायत में संविदा पर नौकरी देने का भी आश्वासन दिया। सचिन सिंह शोलू की इस उदारता से क्षेत्र में सराहना हो रही है। इस दौरान शिवा वैश्य, अमन सिंह, रोशन सिंह, मनीष लंबरदार, डब्बू सिंह आदि मौजूद रहे।

जीवन का आनन्द परमात्मा की आराधना : पं. अनिलेश महाराज

प्रतापगढ़। सगरा सुंदरपुर क्षेत्र के तिना में हो रही श्रीमदभागवत कथा में मंगलवार को श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ी दिखी। कथाव्यास पं. अनिलेश जी महराज ने कहा कि जीवन में परमात्मा ही आनन्द की अनुभूति कराया करता है। उन्होनें बताया कि भौतिक युग में धर्म का संग्रह जीवन के आनन्द का भ्रम है। उन्होनें कहा कि जीवन में सुमंगल तभी है जब परमात्मा के प्रति समर्पण का भाव जगता है। कथाव्यास अनिलेश जी ने कहा कि श्रीमदभागवत कथा भगवान श्रीकृष्ण के लोकमंगल का शाश्वत संदेश है। उन्होनें कहा कि ज्ञान की सार्थकता तभी है जब वह परम ब्रह्म को प्राप्त कराने में सहायक हो। मुख्य यजमान योगधर दुबे ने व्यासपीठ का पूजन अर्चन किया। संयोजक विपिन कुमार दुबे ने श्रद्धालुओं का रोली तिलक किया। इस मौके पर डा. दयाशंकर मिश्र, कौशलेन्द्र दुबे, राजेश कुमार, अभय दुबे, संतोष कुमार, पंकज दुबे, संजय दुबे, शिवम दुबे, फूलचंद्र दुबे, राहुल दुबे, राममनोहर यादव आदि रहे।

पुलिस ने न्यायालय में दाखिल किया आरोप पत्र,आरोपी तलब

● आरएसएस प्रमुख के विरुद्ध आपत्तिजनक टिप्पणी का मामला

प्रतापगढ़। आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत के विरुद्ध आपत्तिजनक टिप्पणी करने वाले के विरुद्ध पुलिस ने शासन से अभियोजन स्वीकृति प्राप्त करने बाद न्यायालय में आरोप पत्र दाखिल किया,जिसे न्यायालय ने संज्ञान में लेते हुए आरोपी को तलब किया है। बता दें कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंचालक आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत के फोटो को एडिट करके अश्लील व अभद्र फोटो बनाकर अभियुक्त शशि धर उर्फ श्रीजन द्वारा सोशल मीडिया पर शेयर करने किया गया था। उक्त मामले में अधिवक्ता परिषद के निर्वतमान जिला अध्यक्ष व भारतीय भाषा अभियान के जिला संयोजक महेश कुमार गुप्ता की तहरीर पर तत्कालीन पुलिस अधीक्षक अनुराग आर्य के आदेश पर अभियुक्त शशिधर उर्फ श्रीजन के विरुद्ध थाना कोतवाली नगर में मुकदमा अपराध संख्या 734/2020 धारा 469/500, 507,भा.द.वि व 67 बी आई टी एक्ट में मुकदमा दर्ज हुआ था। पुलिस ने अभियुक्त शशि धर उर्फ श्रीजन को गिरफ्तार करके जेल भेज दिया था। उक्त मामले में कोतवाली नगर के विवेचक इंस्पेक्टर मनोज यादव ने शासन से अभियोजन स्वीकृत प्राप्त करके आरोप पत्र मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट के न्यायालय में प्रेषित किया। मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट अर्चना तिवारी ने आरोप पत्र को धारा 153 ए ,469,500, 507,भा.द.वि व 67 बी आई टी एक्ट में संज्ञान लेते हुए 26 जून 2025 को आरोपी को न्यायालय में हाजिर होने का आदेश दिया है।

बीडीओ की खाली कुर्सी देख हलाकान रहते हैं फरियादी

सांगीपुर में प्रभारी खण्ड विकास अधिकारी की अनुपलब्धता से खामियों में नहीं हो रहा सुधार

अखंड भारत संदेश

लालगंज। गोशालाओं में अव्यवस्था के साथ विकास कार्यो में शिथिलता को लेकर सांगीपुर ब्लाक में समस्या ज्यों कि त्यों बनी हुई देखी जा रही है। पिछले पांच पांच दिनों से ब्लाक मुख्यालय पर आने वाले फरियादी बीडीओ की खाली कुर्सी देखकर निराश देखे जा रहे हैं। डीएम ने पिछले सप्ताह तमाम खामियों को लेकर बीडीओ समेत कई कर्मचारियों की नकेल भी कसी। बावजूद इसके मंगलवार को भी सांगीपुर ब्लाक मुख्यालय पर अपरान्ह बेला तक बीडीओ की कुर्सी धूल फांकती नजर आयी। डीएम ने यहां डीसी मनरेगा अश्विनी सोनकर बीडीओ का अतिरिक्त प्रभार सौंपा है। बावजूद इसके साहब हैं कि इन्हें न तो डीएम के फरमान का रत्ती भर असर है और न ही जनता की समस्याओं के निस्तारण या फिर विकास कार्यो की जरा सी भी फिकर। पांच पांच दिन हो गये डीएम के फरमान के बावजूद सांगीपुर में खण्ड विकास अधिकारी की कुर्सी साहब का बाट जोह रही है। बावजूद इसके कि सांगीपुर ब्लाक इन दिनों गोशालाओं में अव्यवस्था को लेकर खासी सुर्खिया बंटोरे हुए है। खण्ड विकास अधिकारी का प्रभार संभालने के बावजूद डीसी मनरेगा को मंगलवार के कामकाजी दिन भी ब्लाक आने की फुर्सत नही मिल सकी। अधिकांश फरियादी ब्लाक में बीडीओ साहब का इंतजार करते देखे गये। बीडीओ साहब की कुर्सी खाली देखकर यह लोग दोपहर बाद निराश होकर लौटने को मजबूर भी हुए नजर आये। जिलाधिकारी शिवसहाय अवस्थी कड़क मिजाज को लेकर मातहतो की लगातार लगाम कसने का हर जतन कर रहे हैं। डीएम ने गोशाला में अव्यवस्था देख यहां के तत्कालीन बीडीओ अभिषेक सिंह को पिछले सप्ताह मुख्यालय में सम्बद्ध कर दिया। सचिव पर डीएम की नाराजगी निलंबन की गाज बनकर सामने आयी। डीसी मनरेगा अश्विनी सोनकर लालगंज एवं रामपुर संग्रामगढ़ एवं बाबागंज में भी बीडीओ की कुर्सी संभाल चुके हैं। बाबागंज में भी बीडीओ के पद पर तैनाती के दौरान कमीशन के आरोप में अश्विनी सोनकर काफी घिरे भी थे। हालांकि प्रभारी बीडीओ डीसी मनरेगा अश्विनी सोनकर का देर शाम यह दावा सामने आया कि वह मंगलवार को रांकी, शुकुलपुर, मंगापुर आदि जगह गोशालाओं के निरीक्षण में गये थे। वहीं प्रभारी बीडीओ अश्विनी सोनकर से कुछ प्रधानों के मुताबिक फोन पर समस्या बताई गयी। इन प्रधानों के मुताबिक प्रभारी बीडीओ की वार्ता की शैली आपत्तिजनक सामने आयी। सांगीपुर ब्लाक में विकास योजनाओं को पटरी पर लाने के साथ अव्यवस्थाओं पर अंकुश लगाना भी जिला प्रशासन के लिए अहम सवाल बनकर सामने खड़ा है।

रोडवेज बस स्टॉप स्थल पर अग्निकांड विषय पर मॉक ड्रिल का आयोजन

● रसोई गैस के सिलेंडर में आग लगने पर उसे चादर या अन्य माध्यमों से कैसे बुझाया जा सकता है, इसके लिए क्या करना चाहिए इसकी जानकारी मॉक ड्रिल के जरिए दी गई।

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिलाधिकारी द्वारा हीट वेव तैयारी की दृष्टिगत समीक्षा बैठक में दिए गए निर्देश के क्रम में राजेंद्र प्रताप सिंह की उपस्थिति में रोडवेज बस स्टॉप स्थल पर हीट वेव की दृष्टिगत अग्निकांड से होने वाली घटनाओं से बचाव एवं राहत की दृष्टिगत फायर मॉक ड्रिल का आयोजन किया गया। जिसमें घरेलू एवं कार्यालय स्थल पर लगने वाले आग से बचाव के विभिन्न प्रकार को बचाव के तरीके अग्निशमन विभाग द्वारा बताए गए। रसोई गैस के सिलेंडर में आग लगने पर उसे चादर या अन्य माध्यमों से कैसे बुझाया जा सकता है, इसके लिए क्या करना चाहिए इसकी जानकारी मॉक ड्रिल के जरिए दी गई। जनमानस से कहा कि अग्निकांड से सम्बन्धित जो भी प्रशिक्षण यहां पर दिया गया उसको सभी लोग अपने घरों व आसपास के लोगों को अवश्य बताये और आग बुझाने के जो भी घरेलू उपकरण है उसको घरों में अवश्य रखें जिससे आग लगने से बचा जा सके। अग्निशमन विभाग की टीम में अग्निशमन अधिकारी अतुल त्रिपाठी एवं उनकी टीम के साथ-साथ आपदा विशेषज्ञ अनुपम शेखर तिवारी की उपस्थिति में मॉक ड्रिल कार्यक्रम संयुक्त तत्वाधान में कुशलता पूर्वक संपन्न किया। इस कार्यक्रम में परिवहन विभाग के कर्मचारी तथा आम जनमानस ने भी बढ़-चढ़कर प्रतिभाग किया।

एएसपी ने निरीक्षण में कोतवाली की कसी पेंच, अपराध नियंत्रण पर दिया जोर

लालगंज। एएसपी ने कोतवाली का निरीक्षण कर अपराध नियंत्रण अभियान की समीक्षा की। जिले के अपर पुलिस अधीक्षक पश्चिमी संजय राय ने सोमवार की देर शाम लालगंज कोतवाली का निरीक्षण किया। अपर पुलिस अधीक्षक ने निरीक्षण के दौरान अपराध रजिस्टर समेत विभिन्न अभिलेखों का अवलोकन किया। उन्होनें कोतवाली में शस्त्रों के रखरखाव को भी देखा। परिसर में साफ सफाई के प्रबन्ध बेहतर किये जाने को लेकर प्रभारी निरीक्षक को कड़े निर्देश दिये। अपर पुलिस अधीक्षक ने निरीक्षण के दौरान थाना समाधान दिवस एवं सम्पूर्ण समाधान दिवस के शिकायती प्रार्थना पत्रों के निस्तारण की भी समीक्षा की। उन्होने विवेचनाओं के निस्तारण को लेकर भी दरोगाओं की क्लास ली। एएसपी ने अनुसूचित जाति तथा महिला अपराध से जुडे मुकदमो मे वांछितों की गिरफ्तारी को लेकर प्रभारी निरीक्षक को समयबद्ध कार्रवाई का अल्टीमेटम दिया। दरोगाओं तथा वीट आरक्षियों से क्षेत्र में हिस्ट्रीशीटर तथा चिन्हित अपराधियों की गतिविधियों पर कडी नजर रखने को कहा। अपर पुलिस अधीक्षक ने अपराध नियंत्रण को लेकर चलाए जा रहे अभियान को और प्रभावी बनाए जाने को लेकर भी निर्देश दिये। निरीक्षण के दौरान लालगंज सीओ रामसूरत सोनकर भी मौजूद रहे। प्रभारी निरीक्षक नीरज यादव ने अपर पुलिस अधीक्षक को वांछित जानकारियां प्रदान की।

मारपीट धमकी को लेकर केस दर्ज

प्रतापगढ़। गालीगलौज, मारपीट व धमकी को लेकर उदयपुर पुलिस ने आरोपी के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है। कुम्भीआइमा गांव निवासिनी तान्या श्रीवास्तव पुत्री प्रमोद कुमार श्रीवास्तव ने पुलिस को दी गई तहरीर में कहा है कि पुरानी रंजिश को लेकर मंगलवार की सुबह गांव के ज्योति प्रसाद श्रीवास्तव पुत्र भगवत प्रसाद श्रीवास्तव गालीगलौज करने लगे। पीड़िता के मना करने पर लाठी डण्डे से मारापीटा व जान से मारने की धमकी दी। एसओ उदयपुर राधेबाबू का कहना है कि जांच के बाद आरोपी के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया है।

तहसील में हुई मारपीट के आरोपी को पुलिस ने दबोचा, भेजा जेल

● आरोपी के खिलाफ आसपुर देवसरा व पट्टी कोतवाली में दर्ज है नौ मामले

अखंड भारत संदेश

पट्टी। तहसील में कम्यूटर कक्ष में हुई मारपीट के मामले में पुलिस ने रमेश कुमार वारी की तहरीर पर सरकारी काम में बाधा पहुंचने सहित अन्य धाराओं में मुकदमा दर्ज किया है।

उपजिलाधिकारी पट्टी के न्यायालय में रीडर के पद पर तैनात रमेश कुमार ने पट्टी कोतवाली में शिकायत किया था कि 7 मार्च 2025 को लगभग 11.30 बजे वह अपने कम्यूटर कक्ष में न्यायालय की पत्रावली की देखरेख कर रहा था। इस दौरान शिवा सिंह पुत्र संजय सिंह ग्राम इब्राहिमपुर थाना आसपुर देवसरा पहुंचा और गाली गलौज करते हुए मारपीट करने लगा। जब उसने बीच बचाव किया तो आरोपी युवक फाईलों को इधर-उधर फेंकना लगा। साथ ही वह 5000 रुपये गुण्डा टैक्स की मांग करने लगा। जब उसने इसका विरोध किया तो उक्त युवक ने उसे जान से मारने की धमकी दी और जब आसपास के लोग पहुंचे तो उसकी जान बच सकी। पट्टी पुलिस ने तहरीर की आधार पर सरकारी काम बाधा पहुंचने, रंगदारी, धमकी व लोक सेवक पर हमला करने सहित अन्य धाराओं में मुकदमा दर्ज किया है। उपनिरीक्षक राजेश कुमार शुक्ला, हमराही धर्मेन्द्र कुमार यादव व विश्ववेन्द्र प्रताप सिंह गश्त पर थे। आरोपी शिवेन्द्र सिंह उर्फ शिवा सिंह को पचैरी मोड से गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया। आरोपी के खिलाफ आसपुर देवसरा थाने व पट्टी थाने में कुल 9 मामले दर्ज है। कोतवाल अवन कुमार दीक्षित ने बताया कि आरोपी के खिलाफ दिए गए प्रार्थना पत्र के आधार पर विभिन्न धाराओं में मुकदमा पंजीकृत किया गया था। आरोपी को गिरफ्तार कर न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत कर जेल भेज दिया गया।

शनिदेव की नवीन प्रतिमा स्थापित कर शुरू हुआ दर्शन पूजन

प्रतापगढ़। लालगंज कोतवाली अन्तर्गत रायपुर तियाई स्थित प्राचीन शिव मन्दिर परिसर में भगवान शनिदेव की नवीन प्रतिमा को मंगलवार को श्रद्धालुओं ने वैदिक मंत्रोचार के बीच स्थापित कराया। यहां पहले से स्थापित प्रतिमा सोमवार को खण्डित मिली थी। इसे लेकर लोगों में आक्रोश पनप उठा था। हालांकि पुलिस ने लोगों को समझा बुझाकर खण्डित प्रतिमा को नदी में विसर्जित करा दिया था। इसके बाद व्यापारियों ने सहयोग राशि एकत्रित कर शनिदेव भगवान की नई प्रतिमा का प्रबन्ध किया। आचार्य रवीन्द्र शुक्ल ने मंगलवार को नई प्रतिमा को वैदिक मंत्रोचार के बीच स्थापित कराया। इस मौके पर करणी सेना के प्रदेश उपाध्यक्ष विनोद सिंह, निक्के सरोज, मुन्ना मौर्य, संतलाल, विनोद सरोज, ज्ञानू सिंह, भोला, हरकेश सिंह आदि मौजूद रहे।

पुरानी रंजिश में युवक पर किया तमंचे से फायर

घायल को सीएचसी से गंभीर हालत में मेडिकल कॉलेज किया रेफर

पट्टी। पुरानी रंजिश में युवक पर तमंचे से फायर कर दिया। जिससे युवक घायल हो गया। युवक को इलाज के लिए सीएचसी पट्टी में भर्ती कराया गया जहां हालत गंभीर होने पर मेडिकल रेफर कर दिया गया।

बरहूपुर निवासी बृजेश विश्वकर्मा बाजार में ही ऑटो पार्ट की दुकान चलाता है। सोमवार की शाम लगभग 7.15 बजे वह बरहूपुर चैक पर स्थित किराने की दुकान पर सामान लेने गया था। इस दौरान गांव के ही बीरबल गौतम अपने पुत्र सौरभ, बबलू व एक अन्य के साथ पहुंचे। सौरभ, बबलू व साथ रहे अन्य युवक ने उसे पकड़ लिया व बीरबल गौतम ने तमंचे से उस पर फायर कर दिया। तमंचे से निकली गोली उसके दाहिने सीने के ऊपर धंस गई जबकि उससे निकले छर्रे उसके बाएं गाल को छूते हुए निकल गए। सूचना मिलने पर कोतवाली के उपनिरीक्षक रविंद्र सिंह हमराहियों के साथ मौके पर गए और घायल बृजेश को पुलिस के वाहन से ही सीएचसी पट्टी ले आए। जहां पर डॉक्टरों ने प्राथमिक उपचार के बाद उसे जिला अस्पताल रेफर कर दिया। अस्पताल में उपचार के दौरान घायल बृजेश ने बताया कि गांव के निवासी फूलचंद व संतलाल के बीच जमीन के विवाद को लेकर काफी दिन से रंजिश चल रही है। संतलाल के बगल उसकी ऑटो पार्ट की दुकान है। ऐसे में एक माह पूर्व फूलचंद व संतलाल में हुए झगड़े के दौरान वह संतलाल के पक्ष में खड़ा हुआ था।जिससे खुन्नस खाकर फूलचंद के भाई बीरबल ने अपने पुत्रों के साथ मिलकर घटना को अंजाम दिया।कोतवाल अवन कुमार दीक्षित ने बताया कि गोली चलने की सूचना पर कोतवाली फोर्स मौके पर गई थी। घायल को सीएचसी लाकर भर्ती कराया गया है। घटना की जांच पड़ताल के लिए घटनास्थल के प्रत्येक पहलुओं की जांच की जा रही है। तहरीर मिलने के बाद मुकदमा दर्ज कर कार्रवाई की जाएगी।

बाइक चालक के खिलाफ गैरइरादतन हत्या का केस

प्रतापगढ़। दुर्घटना में अधेड़ की हुई मौत के मामले में उदयपुर पुलिस ने अज्ञात बाइक चालक के खिलाफ गैरइरादतन हत्या का मुकदमा दर्ज किया है। आहरबीहर गांव के अनुराग सरोज ने पुलिस को दी गई तहरीर में कहा है कि सोमवार की रात घर के समीप स्थित खेत में गेहूं के फसल की कटाई करने जा रहे उसके माता पिता अज्ञात बाइक की टक्कर से घायल हो गये थे। इलाज के दौरान घायल रामसजीवन सरोज की मौत हो गयी। एसओ राधेबाबू का कहना है कि अज्ञात बाइक चालक के खिलाफ गैरइरादतन हत्या का मुकदमा दर्ज किया गया है।

विटामिन ए बच्चों के स्वास्थ्य के लिए लाभदायक : नसीम अंसारी

अखंड भारत संदेश

पट्टी। न्यूट्रिशन सपोर्ट कार्यक्रम के तहत ग्राम पंचायत बहुता में बैठक आयोजित कर दलित व वंचित समुदाय की महिलाओं व बच्चो को डाबर का रियल मिक्स एवं गोवावा विटामिन बूस्ट जूस वितरित किया गया।

बैठक के दौरान कार्यक्रम प्रभारी हकीम अंसारी ने बताया कि यह जूस विटामिन ए, विटामिन सी, विटामिन ई. से भरपूर है जो बच्चों के स्वास्थ्य लिए बहुत ही लाभदायक है।

तरुण चेतना के निदेशक नसीम अंसारी ने बच्चों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि विटामिन ए बच्चों के स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है।विटामिन ए से आंखों की रोशनी बढ़ती है तथा त्वचा और फेफड़े को भी स्वस्थ रखता है और हमारी इम्यूनिटी सिस्टम को भी मजबूत बनता है। विटामिन सी हमारे दांतों और मसूड़े को स्वस्थ रखता है घाव एवं जलन को भी ठीक करता है भरपूर मात्रा में आयरन को भी अवशोषित करने में सहायक होता है। एवं रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ता है। इस दौरान शकुंतला, मंजू, श्याम शंकर शुक्ला, अच्छेलाल बिंद, मोहित, अभिषेक आदि लोग उपस्थित रहे।

संदिग्ध दशा में अधेड ने निगला जहरीला पदार्थ, मौत

अझुवा कौशाम्बी सैनी कोतवाली के अझुवा कस्बे के रसूलपुर मढियामई निवासी एक अधेड ने सोमवार की देर शाम संदिग्ध दशा में जहरीला पदार्थ निगल लिया ,जिससे अधेड की हालत बिगड़ गई परिजन इलाज के लिए अस्पताल ले गए जहां अधेड ने दम तोड़ दिया अधेड की मौत की खबर पर घर में कोहराम मच गया , सूचना पर पहुंची पुलिस कार्यवाही में जुट गई है। जानकारी के मुताबिक सैनी कोतवाली के अझुवा कस्बे के वार्ड नं चार रसूलपुर मढियामई निवासी मेवालाल उम्र 55 वर्ष पुत्र स्व राम बालक पल्लेदारी कर परिवार का भरण पोषण करता था , बताया जाता है कि मेवालाल सोमवार की शाम पल्लेदारी कर घर वापस पहुंचा तो सब्जी बनाने को लेकर पत्नी से कहासुनी हो गई जिस पर अधेड क्षुब्ध होकर अझुवा बजार वापस चला गया, वहीं कोई जहरीला पदार्थ निगल लिया , हालत बिगड़ने पर कस्बे के भोला चौराहे पर पल्लेदारी कर रहे गांव के लोगों ने परिजनों को सूचना दी,परिजनों ने आनन फानन में इलाज के लिए नजदीकी अस्पताल ले गए जहां चिकित्सकों ने जवाब दे दिया, जिसके बाद परिजनों ने सिराथू के सरकारी अस्पताल ले गए जहां से अधेड की हालत नाजुक देख जिला अस्पताल भेज दिया गया। इलाज के दौरान बीती रात अधेड की मौत हो गई । अधेड की मौत की खबर पर घर में कोहराम मच गया । सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज कार्यवाही में जुट गई है । मृतक के चार पुत्रों में दो पुत्र पूना में रहते है। और दो पुत्रियां है।

पत्नी से हो रहा था 6 महीने से विवाद संदिग्ध परिस्थितियों में गोली लगने से अधेड़ की मौत

महेवाघाट कौशाम्बी। महेवाघाट थाना क्षेत्र के ग्राम हिनौता में मंगलवार को चंद्र किशोर उम्र 45 वर्ष पुत्र बच्ची लाल की गोली लगने से मौत हो गई उसकी पत्नी सुरेखा देवी ने मामले की सूचना थाना पुलिस को दिया सूचना पर मौके पर पहुंची पुलिस ने मृतक के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है मृतक का अपनी पत्नी से बीते 6 महीने से विवाद चल रहा था मृतक की पत्नी का कहना है कि उसने आत्महत्या कर लिया लेकिन मामला संदिग्ध प्रतीत होता है पत्नी का कहना है कि काम धाम ना करने के कारण अक्सर तनाव में रहते थे उक्त तनाव के कारण गोली मारकर आत्महत्या कर ली गई है मौके के परिस्थिति जन्य साक्ष्य की यदि विन्दुवार सूक्ष्म जांच हुई तो मौत के मामले में हत्या और आत्महत्या का रहस्य उजागर होगा।

भाई को अस्पताल देखने जा रहे अधेड़ की सड़क हादसे में मौत

कोखराज कौशांबी कोखराज थाना क्षेत्र के कशिया पश्चिम गांव निवासी द्वारिका प्रसाद के भाई नारायण स्वरूप अस्पताल महगाव में भर्ती कराए गए थे जहां उनका इलाज चल रहा था अस्पताल में भाई के भर्ती होने पर द्वारका प्रसाद मंगलवार को उन्हें देखने के लिए संदीपन घाट थाना क्षेत्र के महागाव स्थित नारायण स्वरूप अस्पताल जा रहे थे जैसे ही वह नारायण स्वरूप अस्पताल के गेट पर पहुंचे और सड़क पार करने लगे तेज गति वाहन ने द्वारिका प्रसाद को टक्कर मार दिए जिससे द्वारका प्रसाद सड़क पर गिर पड़े हैं और तड़प तड़प कर उनकी मौत हो गई है मामले की जानकारी मिलते ही परिवार में कोहराम मच गया है सूचना पाकर मौके पर पहुंची संदीपन घाट पुलिस ने द्वारिका प्रसाद के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है उनके बेटे ने संदीपन घाट पुलिस को तहरीर देकर घटना की जानकारी दी है अधेड़ की मौत के बाद मौके पर रिश्तेदार परिवार के लोगों का मजमा लग गया है।

न्यूज झरोखा

पोषण जन-जागरूकता रैली को डीएम ने हरी झंडी दिखाकर किया रवाना

कौशाम्बी जिलाधिकारी मधुसूदन हुल्गी ने पोषण पखवाड़ा के अवसर पर आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों द्वारा कलेक्ट्रेट परिसर से निकाली गई पोषण जन-जागरूकता रैली को कलेक्ट्रेट परिसर से हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। यह रैली कलेक्ट्रेट परिसर से होते हुए विकास खंड मंझनपुर तक निकाली गई। पोषण पखवाड़ा 2025 का आयोजन 8 अप्रैल से 22 अप्रैल तक किया जायेगा। यह कार्यक्रम भारत सरकार के पोषण अभियान का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य महिलाओं और बच्चों के पोषण स्तर में सुधार करना है। इस वर्ष का मुख्य फोकस जीवन के पहले 1000 दिनों पर है, जो बच्चे के शारीरिक और मानसिक विकास के लिए सबसे महत्वपूर्ण माने जाते हैं। इस पखवाड़े के दौरान पोषण ट्रैकर ऐप के माध्यम से लाभार्थियों का पंजीकरण और सेवाओं की निगरानी, गर्भवती महिलाओं और बच्चों के लिए स्वास्थ्य जांच और पोषण संबंधी परामर्श, सामुदायिक जागरूकता कार्यक्रम जैसे-रैलियाँ, कार्यशालाएँ और समूह चचाएँ, कुपोषित बच्चों की पहचान और उनके लिए विशेष देखभाल, स्वस्थ जीवनशैली को बढ़ावा देने के लिए साइकिल रैली और पोषण रैली का आयोजन आदि कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। कार्यक्रम का उद्देश्य पोषण के प्रति जागरूकता बढ़ाना और कुपोषण को कम करना है।इस अवसर पर जिला कार्यक्रम अधिकारी अश्विनी कुमार, बाल विकास परियोजना अधिकारी रेनू वर्मा, सुशील कुमार तथा मुख्य सेविकायें आदि उपस्थित रहीं।

राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ ने गर्मी के कारण परिषदीय विद्यालयों के समय में की बदलाव की मांग

कौशांबी। तेज धूप व गर्मी को देखते हुए परिषदीय विद्यालयों में बच्चों की परेशानी बढ़ गई है। इसको देखते हुए राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ कौशाम्बी की ओर से समय में बदलाव करने की मांग की गई है।ज्ञापन में परिषदीय विद्यालयों का समय सुबह सात बजे से दोपहर 12 बजे निर्धारित करने की मांग की गई है। राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के जिला संयोजक ओम दत्त त्रिपाठी के नेतृत्व में प्रतिनिधिमंडल ने प्रतिकूल मौसम को देखते हुए विद्यालय के समय में बदलाव की मांग की है। उन्होंने डीएम को संबोधित मांगपत्र बीएसए को दिया। उनका कहना है कि परिषदीय विद्यालय सुबह आठ बजे से दोपहर दो बजे तक संचालित हो रहे हैं। इस समय में बदलाव करते हुए सुबह 7 बजे से 12 बजे तक किया जाना चाहिए। राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ ने सुबह साढ़े सात से दोपहर 12 बजे तक समय निर्धारित करने की मांग की है।उन्होंने कहा है कि प्रदेश में लू चल रही है। जिससे कई जगहों पर तापमान काफी बढ़ गया है, सुबह 10 बजे के बाद लोगों को घरों से निकलने में कठिनाई महसूस हो रही हैं। ऐसे में कोमल बच्चे बिना साधन के विद्यालयों में शिक्षा ग्रहण करने आ रहे हैं। दोपहर में अधिक गर्मी के कारण बच्चों को दिक्कत हो रही है। दो बजे अवकाश होने पर कड़ी धूप व लू में पैदल घर जाना पड़ रहा है। जिससे उनके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। इसका असर उपस्थिति पर भी पड़ रहा है।इस मौके पर जिला सह संयोजक मायापति त्रिपाठी,कृष्णलाल , गोरखनाथ मिश्र,विमल कुमार,विमलेश शुक्ल आदि मौजूद रहे।

20 नई एम्बुलेंस को हरी झंडी दिखाकर किया रवाना

कौशाम्बी जिले को मिली 20 नई एम्बुलेंस को जिलाधिकारी मधुसूदन हुल्गी द्वारा कलेक्ट्रेट परिसर से फीता काटकर और हरी झंडी दिखाकर रवाना किया इस मौके पर महिला आयोग की सदस्य श्रीमती प्रतिभा कुशवाहा भी मौजूद रही प्रतिभा कुशवाहा ने कहा कि इससे मरीजों को काफी सहूलियत मिलेगी 108 एम्बुलेंस सेवा सभी तरह की घटना और दुर्घटना के मामले में मरीज के इलाज और आसपास के अस्पताल तक पहुंचने में मददगार होती है जबकि 102 की एम्बुलेंस गर्भवती महिलाओं एवं नवजात बच्चों के लिए वरदान साबित होगी।इस अवसर पर मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉक्टर संजय कुमार एवं अन्य सम्बन्धित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

गुजरात में कांग्रेस के अधिवेशन में कौशांबी कांग्रेसियों ने लिया हिस्सा

कौशाम्बी जिला अध्यक्ष कौशांबी कांग्रेस गौरव पाण्डेय के नेतृत्व में कौशाम्बी जिले का प्रतिनिधित्व करने आईसीसी कोवाडीनेटर व जिला कांग्रेस कमेटी के उपाध्यक्ष मनोज पटेल गुजरात पहुंचे जैसा कि आप सभी को ज्ञात है कि कांग्रेस पार्टी का अधिवेशन अहमदाबाद गुजरात में हो रहा है जिसमें अखिल भारतीय कांग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे सांसद राहुल गांधी श्री मति सोनिया गांधी एवं कांग्रेस पार्टी के सभी पदाधिकारी मौजूद रहे जिसमें कौशाम्बी जिला का प्रतिनिधित्व करने गए जिला उपाध्यक्ष मनोज पटेल अधिवेशन का हिस्सा बने !

गायब बालक को खोज कर उसके परिवार को किया सुपुर्द

कौशाम्बी दिनांक कड़ा धाम थाना क्षेत्र के शीतला माता के धाम में परिवार के साथ दर्शन करने आया एक नाबालिक बालक परिजनों से बिछड़ गया इससे परिवार के लोग भी परेशान हो गए एक नाबालिग बालक उम्र लगभग 10 वर्ष शीतला धाम कड़ा में 7 अप्रैल को गुम हो गया था। जिसकी सूचना एक अज्ञात व्यक्ति द्वारा 1098 वा 112 में फोन कर के दी गई। जानकारी मिलते ही बालक को 111 पीआरबी द्वारा थाना कड़ा धाम में ले जाया गया जिसके पश्चात थाना कड़ा धाम द्वारा बालक को चाइल्ड हेल्पलाइन को सुपुर्द कर दिया गया। चाइल्ड हेल्पलाइन की टीम द्वारा अथक प्रयास करके बालक के अभिभावक को खोज लिया गया तथा बाल कल्याण समिति में बालक को प्रस्तुत किया गया। जिसके पश्चात 08 अप्रैल को बाल कल्याण समिति के आदेशानुसार बालक को उसके माता परिजन को सुपुर्द कर दिया गया। बालक के माता व अभिभावक बच्चे को पाकर भावुक हो गए तथा चाइल्ड हेल्प लाइन की टीम को धन्यवाद दिया।बच्चे का पता जहानपुर सिराथू थाना सैनी कौशांबी बताया जाता है

तीन दिन से बंधक किशोर हुआ लापता हत्या का आरोप

कौशाम्बी प्रयागराज जनपद के एयरपोर्ट थाना क्षेत्र के बिलासपुर गांव में तीन दिनों से घर में बंधक किशोर संदिग्ध परिस्थितियों में लापता हो गया। पीड़ित पिता ने दो लोगों पर हत्या का आरोप लगाते हुए पुलिस को तहरीर दी है। आरोप है कि पुलिस पीड़ित पिता को ही लापता किशोर को बरामद करने के लिए परेशान करने लगी है। कहा जाता है कि तीन दिन तक पीड़ित करने के बाद एक अन्य युवक किशोर को थाना लेकर पहुंचा था। जहां से वह लापता हो गया है जिससे परिवार में कोहराम मचा हुआ है और मामला बेहद गंभीर है लेकिन पुलिस इस मामले में गंभीर नहीं है

प्रवेश परीक्षा में चयनित छात्र छात्रायें 11 अप्रैल तक लें प्रवेश

कौशाम्बी समाज कल्याण विभाग द्वारा जनपद में संचालित जय प्रकाश नारायण सर्वोदय विद्यालयों- करारी ककोढा, बरैसा (बालकों के लिए) तथा कोइलहा एवं भरसवाँ (बालिकाओं के लिए) में शैक्षिक सत्र 2025-26 में कक्षा 06, 07, 08, 09 में रिक्त सीटों के सापेक्ष दिनांक 30.03.2025 को आयोजित प्रवेश परीक्षा में कुल-14777 छात्र छात्राओं द्वारा आवेदन किया गया था, जिसके सापेक्ष 7780 छात्र छात्राओं द्वारा प्रवेश परीक्षा में प्रतिभाग किया गया। प्रवेश परीक्षा के आधार पर 554 सीटों के सापेक्ष शत-प्रतिशत चयन करते हुए प्रवेश परीक्षा का परिणाम बेबसाइड अथवा सम्बन्धित शिक्षण संस्थान के नोटिस बोर्ड पर चस्पा कर दिया गया है। यह जानकारी जिला समाज कल्याण अधिकारी ने देते हुए नव चयनित छात्र छात्राओं एवं उनके अभिभावकों से अनुरोध किया है कि दिनांक 11.04.2025 तक वांछित अभिलेखों के साथ चयनित शिक्षण संस्था में प्रवेश लेना सुनिश्चित करें, ताकि जिलाधिकारी के निर्देश के अनुपालन में 12.04.2025 से नियमित कक्षायें संचालित कराकर पठन-पाठन कार्य प्रारम्भ किया जा सके।

जिम प्रशिक्षक की भर्ती में भी बड़ा खेल

अखंड भारत संदेश

खेल खेलने में माहिर जिला खेल अधिकारी ने जिम प्रशिक्षक की भर्ती में भी खेला बड़ा खेल

खेल अधिकारी पर मुकदमा दर्ज कराकर इन्हें निलंबित करते हुए खेल अधिकारी की गिरफ्तारी

कौशाम्बी खेल अधिकारी तरह तरह के खेल खेलने में माहिर हैं अब तो उन्होंने जिम प्रशिक्षक की भर्ती में भी खेल खेलना शुरू कर दिया है लेकिन खेल अधिकारी के मास्टरमाइंड दिमाग को अभी तक अधिकारी नहीं समझ सके हैं 05 अप्रैल के समाचार पत्र में जिम प्रशिक्षक की भर्ती की सूचना प्रकाशित करने के बाद 6 अप्रैल को डाक से या स्वयं आकर फार्म जमा करने की सूचना खेल अधिकारी ने सार्वजनिक किया है अब सवाल उठता है कि 6 अप्रैल को रविवार का दिन था तो स्वाभाविक सी बात है कि डाकघर से लेकर सभी कार्यालय पूरी तरह से बंद रहेगा तो कैसे उमीदवार आवेदन पत्र जमा करेंगे दूसरी बात यह है कि 5 अप्रैल को समाचार पत्र में सूचना प्रकाशन के बाद जब आवेदक समाचार पढ़ने के बाद औपचारिकता पूर्ण करेगा और डाकघर से विभाग को आवेदन भेजने के लिए रजिस्ट्री करने जाएगा तब तक में 3:00 बज जाएंगे और डाकघर बंद हो जाएगा डाकघर से भी वह अपना आवेदन नहीं भेज सकता है और यदि उसने तमाम मेहनत के बाद डाकघर से आवेदन भेज भी दिया तो 5 अप्रैल का आवेदन 6 अप्रैल रविवार को विभाग तक नहीं पहुंच पाएगा जिससे खेल अधिकारी के मास्टरमाइंड दिमाग का अंदाजा लगाया जा सकता है नियुक्ति के मामले में एक सप्ताह पूर्व समाचार पत्रों में सूचनाओं प्रकाशित करने का निर्देश उच्च न्यायालय ने पूर्व में दिया था लेकिन खेल अधिकारी उच्च न्यायालय के भी दिशा निर्देश को मानने को तैयार नहीं है जिम प्रशिक्षक की नियुक्ति में खेल अधिकारी का यह बड़ा खेल उजागर हो गया है और साठगाँठ के बाद किसी व्यक्ति विशेष को लाभ देने के उद्देश्य से फर्जी तरीके से औपचारिकता निभाने के लिए खबर प्रकाशित कर जिम प्रशिक्षक की भर्ती का ढकोसला खेल अधिकारी द्वारा किया जा रहा है जो बड़ी जांच का विषय है। शासन सत्ता को गुमराह करके फर्जी तरीके से व्यक्ति विशेष को सरकारी लाभ देने की मनसा रखने वाले खेल अधिकारी के कारनामे की शासन प्रशासन स्तर से बिंदुवार बड़ी जांच कराते हुए भ्रष्टाचार को बढ़ावा देने वाले खेल अधिकारी पर मुकदमा दर्ज कराकर इन्हें निलंबित करते हुए खेल अधिकारी की गिरफ्तारी कराए जाने की जरूरत है और फर्जी तरीके से जिम प्रशिक्षक की भर्ती को रद्द कर फिर से जिम प्रशिक्षक की भर्ती की औपचारिकता की कार्यवाही किए जाने की मांग आम जनमानस ने की है।

युवक की शरारत से पुलिस हो गई परेशान

टेढ़ीमोड़ कौशाम्बी कोखराज थाना क्षेत्र के एक युवक के शरारत से पुलिस परेशान हो गई लेकिन अंत में पता चला कि युवक ने रिश्तेदारों के बीच में बैठकर मजाक किया था मजाक कर रहे युवक ने सोशल मीडिया में लिखा कि मैं तो जहर खा चुका हूं,अब क्या होगा मैं नहीं जानता हूं। सतीश राजपूत खत्म हो चुका है। सोशल मीडिया के इंस्ट्राग्राम में जैसे ही कोखराज पुलिस की नजर पड़ी कोखराज थानाध्यक्ष चंद्रभूषण मौर्य फौरन हरकत में आ गए। इंस्ट्राग्राम आई डी उन्होंने साइबर सेल की मदद से युवक का पूरा पता और मोबाइल नंबर ट्रेस करने के बाद युवक के मोबाइल की लोकेशन ट्रेस करते हुए उसके खोजबीन में जुट गए। घंटों की मशक्कत के बाद इंस्टाग्राम में वीडियो अपलोड करने वाला युवक अपने घर मिल गया। पुलिस ने बताया कि युवक का नाम सतीश राजपूत पुत्र रामचंद्र राजपूत है। उसने बताया कि वह बिसारा के रहने वाले अपने मौसी के लड़के अशोक कुमार पुत्र लल्लू के द्वारा बनाए गए वीडियो को मजाक में अपनी आई डी में अपलोड कर दिया उसे नहीं पता था कि इससे क्या होगा। युवक गांव में डीजे साउंड में इलेक्ट्रिशियन का काम करता है। थानाध्यक्ष चंद्रभूषण मौर्य ने युवक को नसीहत और सलाह देते हुए भविष्य में ऐसी हरकत न करने पर युवक को उसके पिता रामचंद्र के सुपर्द कर दिया।

दूसरे के घर से जबरिया बना रहे नाली मना करने पर बंदूक लेकर दौड़ाया

कौशाम्बी करारी थाना क्षेत्र के अर्का महावीर पुर पुलिस चौकी के अंतर्गत फदिलाबाद गांव में चंद्रभूषण पांडेय पुत्र संकटा प्रसाद पांडेय के घर के सामने उनके चबूतरे से गांव के दबंग सत्य विजय विकास अनुज संदीप राजू आदि जबरिया नाली का निर्माण करना चाहते हैं जबकि चंद्र भूषण अपने चबूतरे और घर के सामने से नाली का निर्माण का विरोध कर रहे हैं इसी से बौखलाए सत्य विजय ने बंदूक निकाल ली और चंद्रभूषण पांडेय को जान से मारने की नियत से दौड़ा लिया चंद्रभूषण पांडेय जान बचाकर भाग रहे हैं लाठी डंडा लेकर गाली गलौज करते हुए सत्य विजय यादव अपने आधा दर्जन साथियों के साथ चंद्रभूषण पांडेय के घर पहुंच गए और उन्हें जमकर गाली गलौज की दबंगो ने कहा कि नाली बनाने में बाधा डाले तो पीट पीट कर तुम्हें मार देंगे आधा दर्जन दबंग के आतंक से पीड़ित चंद्रभूषण ने मामले की जानकारी ग्राम प्रधान को दी लेकिन ग्राम प्रधान न्याय पूर्ण तरीके से फैसला करके चंद्रभूषण की बात सुनने को तैयार नहीं है ग्राम प्रधान जातिवाद और बिरादर वाद से ग्रसित है और बिरादरी का समर्थन करके ग्राम प्रधान गांव में विवाद की स्थिति उत्पन्न कर रहा है मामले की शिकायत 3 दिन पहले पुलिस चौकी इंचार्ज अर्का महावीर पुर से चंद्रभूषण पांडेय ने की लेकिन तीन दिन बीत जाने के बाद अभी तक दबंग पर मुकदमा नहीं दर्ज हुआ उन पर कार्यवाही नहीं हुई जिससे दबंग के हौसले बुलंद है और 3 दिन के बीच दबंग कई बार गाली गलौज कर चुके हैं लगातार सत्य विजय और उनके लोग धमकी दे रहे हैं दूसरे के घर के सामने चबूतरे से नाली बनाना कहां तक न्याय संगत है।

भजन सम्राटों द्वारा खाटू श्याम का गया गया भजन

भंडारे में लगभग तीस हजार लोगों ने भंडारा का प्रसाद ग्रहण किया

भरवारी कौशांबी नगर पालिका परिषद अंतर्गत कस्बा भरवारी में खाटू श्याम की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा होने के बाद खाटू श्याम कि शोभा यात्रा निकाली गई थी जो कि कस्बा की सभी सड़कों में नगर भ्रमण कराया गया था 'कल सोमवार के दिन नया बाजार स्थित हनुमान मंदिर परिसर में ही खाटू श्याम भगवान की मूर्ति स्थापित की गई है जोकि जनपद कौशांबी में पहली मूर्ति स्थापित की गई है 'इस मूर्ति की स्थापना की जिम्मेदारी कस्बा के ही श्याम मित्र मण्डली के नव युवको के कंधे पर जिम्मेदारी थी ' जिसके लिए एक भव्य मंदिर का निर्माण कर खाटू श्याम जी को वहां विराज मान किया गया जो अपने आप में एक है 'यहां बताना यह है कि इस खाटू श्याम के मित्र मण्डलीयो द्वारा इतना विशाल भंडारा के साथ साथ देहली कानपुर से भजन गायकों को बुलाकर देर रात्रि तक चले इस कार्यक्रम को देखने सुनने के लिए भक्तों की लंबी लम्बी कटारे लगी रही। इसके अलावा खाटू श्याम के दर्शन के लिए पूर्व विधायक संजय गुप्ता व्यापार मंडल के प्रांतीय महा मंत्री रमेश अग्रहरी पूर्व चेयर मैन एवम समाज वादी के प्रदेश सचिव कैलाश केशरवानी पूर्व चेयरमेन गंगा प्रसाद केशरवानी उर्फ काले भाई सुरेश अग्रहरी एवं भरवारी नगर पालिका अध्यक्ष कविता पासी के अलावा गौरव उर्फ मोनू सेठ गैस वाले बब्बू अग्रवाल रमेश अग्रवाल राज कुमार धुरिया प्रकाश चंद्र केशर वानी राकेश अरोड़ा अतिन कुमार आदि हजारों लोगों ने अपना बहुमूल्य योगदान श्रम दान कर लोगो का मन जीत लिया ' इस बीच कस्बा भरवारी खाटू श्याम के जयकारे से गूंजता नजर आया ' इतना ही नहीं आज एकादशी के उपलक्ष में नायबाजार स्थित हनुमान मंदिर में कीर्तन एवं जल पान की व्यवस्था आज फिर की गई है।

श्री राम जन्म भूमि मंदिर का निर्माण भारत की आत्मा के अनुरूप : गजेन्द्र

भरवारी कस्बे में जय श्री राम के नारों के साथ निकली भगवान सी राम की भव्य शोभायात्रा

कौशाम्बी। भगवान श्रीराम के मंदिर निर्माण में भारत के जन-जन की सहभागिता रही है। अयोध्या में बना भगवान श्री राम भव्य मंदिर आम जनमानस की इस भावना का मूर्तरूप है। 500 सालों में जिस मानसिक प्रताड़ना को बाबर जैसे आक्रांत के कुकृत्यों के चलते भारत के लोगों को झेलना पड़ा यह मंदिर निर्माण उस हीन भावना से अब हिंदू संस्कार बाहर निकल चुका है। उक्त बातें भरवारी स्थित बड़ी कुटि आयोजित हो रही भव्य श्री राम शोभायात्रा के दौरान बतौर मुख्य अतिथि विश्व हिंदू परिषद के क्षेत्र संगठन मंत्री गजेंद्र जी ने कहीं। बैठक में बतौर विशिष्ट अतिथि विश्व हिंदू परिषद के प्रांतीय अध्यक्ष कवींद्र प्रताप सिंह रहे। इस मौके पर गजेंद्रजी ने कहा संगठित समाज हिंदू समाज की सांस्कृतिक उन्नत का एकमात्र रास्ता है। संगठन का काम हिंदू समाज को एक करना है। इस मौके पर विश्व हिंदू परिषद के प्रांतीय अध्यक्ष कवींद्र प्रताप सिंह ने काशी प्रांत में विश्व हिंदू परिषद हिंदू समाज के एक ही कारण के लिए काम कर रहा है। विश्व हिंदू परिषद की इकाई आज गांव-गांव तक पहुंच चुकी है जो सनातन संस्कृति के रक्षा के लिए बराबर लड़ाई लड़ रही है। संगठन के प्रत्येक कार्यकर्ता का आवाहन है कि वह आम लोगों तक पहुंचकर उन्हें संस्कृति और संस्कार के प्रति जागृत करें। यात्रा में सम्मिलित संगठन के लोगों ने भगवान श्री राम के जयकारे लगाते हुए, भरवारी कस्बे के विभिन्न रास्तों से होते हुए पावर हाउस के पास समाप्त हुई। इस मौके पर प्रमुख रूप से अवधेश नारायण शुक्ला अंशुमान, मोहनलाल, वेद प्रकाश सत्यार्थी, राजेंद्र मौर्या, सर्वेश पटेल, कामता यादव, तारीफ यादव, शिवम पाण्डेय, दीपक मौर्या, भक्ति नारायण, प्रदीप मिश्रा, गुड्डन तिवारी, बीरेंद्र दिवाकर, उकाकांत साहू, अमित मिश्रा, राजाराम सरोज सहित सैकड़ो की संख्या में लोग मौजूद रहे।

गेहूँ क्रय केन्द्रों पर ही किसान अपना गेहूँ करे बिक्रय : जिलाधिकारी

किसानों को गुमराह करने वाले बिचौलियों के विरूद्ध होगी कड़ी कार्यवाही

कौशाम्बी जिलाधिकारी मधुसूदन हुल्गी द्वारा आज जनपद में संचालित गेहूँ क्रय केन्द्रों पर की जा रही गेहूँ खरीद की जानकारी प्राप्त की गयी। जिस पर डिप्टी आरएमओ द्वारा बताया गया कि अभी तक मात्र 292.00 मी0टन खरीद हुई है, जिस पर जिलाधिकारी ने काफी नाराजगी व्यक्त की। इसके साथ ही उन्होंने शून्य खरीद वाले केन्द्रों को तत्काल खरीद प्रारम्भ करने की चेतावनी दी। उन्होंने किसान भाइयों से अपील की कि वे अपना गेहूँ जनपद में संचालित गेहूँ क्रय केन्द्रों पर ही बिक्रय करें। उन्होंने प्रतिदिन न्यूनतम 200 कुन्तल गेंहू खरीद करने के निर्देश दिये। संज्ञान में आया है कि बिचौलिये विभिन्न प्रकार की अफवाहों के माध्यम से कृषकों को गुमराह कर कम कीमत पर गेहूँ की खरीद करने का प्रयास कर रहे है, जिसमें कृषकों को आर्थिक हानि की सम्भावना हो सकती है। कृषकों के हित में सभी एजेन्सी प्रभारियों और क्रय केन्द्र प्रभारियों का निर्देशित किया गया कि गाँवों में कृषकों से सम्पर्क बढ़ाया जाय और न्यूनतम समर्थन मूल्य योजना की जानकारी प्रदान करते हुए कृषकों को अधिक से अधिक सुविधा देकर मोबाइल क्रय केन्द्र के माध्यम से गेहूँ की खरीद की जाय, ताकि सरकारी खरीद में वृद्धि होने के साथ-साथ कृषकों को आर्थिक हानि का सामना नहीं करना पड़े। उन्होंने सभी उप जिलाधिकारियों को अपनी तहसील मे गेहूँ खरीद की निरन्तर समीक्षा करने के निर्देश दिये। बिना वैध कागजात के गेहूँ की खरीद तथा अवैध संचरण मे लिप्त बिचौलियो को चिन्हित करते हुए उनके विरूद्ध मुकदमा कायम किया जाए तथा दोषी पाये जाने वाले मंडी के अधिकारियों के विरूद्ध भी कार्यवाही की जायेगी। ग्राम प्रधानों, स्वयं सहायता समूहा और कृशि विभाग तथा पंचायती विभाग के अधिकारियों के साथ समन्वय स्थापित कर गेहूँ की खरीद में अपेक्षित प्रगति लायी जाय। शासन की मंशा के अनुरूप गेहूँ की खरीद नहीं करने वाले क्रय केन्द्र प्रभारियों और एजेन्सी प्रभारियों के विरूद्ध कठोर कार्यवाही अमल में लायी जाएगी।

विभाग की एनओसी के बिना लगा है झूला और मेला

आखिर जनपद मुख्यालय में सब कुछ कैसे अंधेरगर्दी में चल रहा है

कौशाम्बी जनपद मुख्यालय मंझनपुर में हर 2 महीने बाद मेला और झूला लगाया जाता है जहां हजारों लोगों की भीड़ पहुंचती है मेला देखने वाले और झूला झूलने वाले लोगों से मनमानी शुल्क वसूला जाता है जिसका विरोध भी आम जनता करती है शुल्क वसूलने का कोई रेट नहीं निर्धारित होता है मेला लगाने और झूला लगाने का संबंधित विभाग से एनओसी प्रमाण पत्र भी नहीं दिया जाता है आखिर जनपद मुख्यालय में सब कुछ कैसे अंधेरगर्दी में चल रहा है बड़े-बड़े झूला मेले में लगाए जाते हैं पिछले आंकड़े बताते हैं कि बड़े झूले में थोड़ी सी लापरवाही के चलते बड़े हादसे हो चुके हैं देश के कई शहरों में हुए हादसे के आंकड़े बताते हैं कि तमाम लोगों की झूला टूटने से मौत हो चुकी है कई दफा झूले में थोड़ी सी लापरवाही दर्शकों के लिए विनाशकारी बन जाता है लेकिन उसके बाद जनपद मुख्यालय मंझनपुर में झूला लगाने मेला लगाने की प्रथा आम बात हो गई है। गजब तो तब हो गया जब बिना जीएसटी के रजिस्ट्रेशन के करोड़ों का व्यापार मेले की आड़ में होता है मेला के आड़ में विभिन्न प्रकार के सामानों की बिक्री की जाती है जिसमें जीएसटी टैक्स की बड़ी चोरी होती है चचाओं पर जाए तो इतना ही नहीं मेले में बिकने वाले सामान तमाम आपराधिक घटनाओं से जुड़े होते हैं वाहनों से सामान लूटपाट कर सामान ले जाने वाले गैंग के सदस्य भी मेला मैदान में दुकान लगाकर लूट पाट का माल बेच करके मालामाल हो जाते हैं यदि मेला के दुकानदारों से यह पूछ लिया जाए कि वह मेला में बिकने वाला समान कहां से खरीद के लाए हैं समान खरीद करने के उनके पास क्या बिल वाउचर मौजूद है तो शायद इनके पास कुछ भी मौजूद नहीं मिलेगा मेला में बिकने वाले सामानों के ईमानदारी का प्रमाण मेला के दुकानदार नहीं दे पाते हैं तो सवाल उठता है कि क्या डकैती का माल बेचने के लिए जनपद मुख्यालय मुजफ्फरपुर में मेला लगाया जा रहा है जिससे प्रशासन अनजान है जनपद मुख्यालय में कुछ दिनों पहले लगाए गए मेला में दुबई और सऊदी का प्रचार किया जा रहा था और मेले में प्रवेश से लेकर के झूला तक के नाम पर बड़ी फीस लगाई गई थी और मेला में प्रवेश करने के नाम पर दर्शकों से लंबी वसूली हुई है आखिर मेले का बोर्ड लगा करके वसूली करने वाले को क्या सरकार ने कानूनन अधिकार दिया है कि वह प्रवेश करने का शुल्क दर्शकों से वसूल करें जब इसकी गहराई में जाए तो मालूम चलता है कि बिना अधिकृत अनुमति के मेला में प्रवेश शुल्क वसूली करना अपराध की श्रेणी में आता है लेकिन उसके बाद मेला के आड़ में लाखों रुपया प्रतिदिन प्रवेश शुल्क के नाम पर वसूलकर मेला संचालक रफू चक्कर हो चुके हैं 2 महीना नहीं बिता फिर जनपद मुख्यालय मंझनपुर में मेला लग गया बड़ा बड़ा झूला लग गया प्रदर्शनी लग गई प्रवेश शुल्क के नाम पर फिर गुंडा टैक्स की वसूली शुरू हो गई आखिर वसूली का इनको किसने अधिकार दिया है या फिर सब कुछ इनका खुद का कानून नियम चलता है प्रशासनिक व्यवस्था उनके लिए कोई मायने नहीं रखती है यह बड़ी चर्चा का विषय है।

सम्पादकीय

वाम राजनीति की नयी उम्मीद : एमए बेबी

कई चुनौतियों के बीच केरल के वरिष्ठ साम्यवादी नेता मरियम एलेक्जेंडर बेबी को देश के सबसे बड़े वामपंथी दल- कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया (मार्किसस्ट) ने रविवार को अपना नया महासचिव नियुक्त किया। पिछले वर्ष 12 सितम्बर को सीताराम येचुरी के निधन के बाद से यह पद रिक्त था जो उन्होंने लगभग 9 साल तक सम्हाला था। तमिलनाडु के मदुरै में सम्पन्न पार्टी के 5 दिवसीय सम्मेलन के अंतिम दिन उन्हें यह पद दिया गया। उनके खिलाफ खड़े महाराष्ट्र के ट्रेड यूनियन नेता डीएल कराड़ को सिर्फ 31 वोट मिले। सीपीआई (एम) की केरल शाखा से पार्टी का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पद सम्हालने वाले वे दूसरे नेता हैं- दिग्गज ईएमएस नंबूदरीपाद के पश्चात। पार्टी द्वारा हाल ही में 75 साल की उम्र सीमा का नियम लागू करने के बाद पूर्व महासचिव प्रकाश करात, वृंदा करात, सूर्यकांत मिश्रा, सुभाषिनी अली, माणिक सरकार और जी. रामकृष्णन जैसे वरिष्ठ नेता पोलित ब्यूरो से बाहर हो गये थे। केवल 79 वर्षीय केरल के मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन को रणनीतिक कारणों से रखा गया है। पोलित ब्यूरो में 8 नए सदस्य शामिल हुए, वे हैं- त्रिपुरा विधानसभा में विपक्ष के नेता जितेंद्र चौधरी, तमिलनाडु के पूर्व सीपीएम सचिव के. बालाकृष्णन व ट्रेड यूनियन नेता यू. वासुकी, सीकर (राजस्थान) के सांसद अमरा राम, श्रीदीप भट्टाचार्य (पश्चिम बंगाल), अखिल भारतीय किसान सभा के महासचिव विजू कृष्णन, अखिल भारतीय लोकतांत्रिक महिला संघ की महासचिव मरियम धावले और पूर्व छात्र नेता आर. अरुण कुमार। येचुरी के मुकाबले बेबी को वैचारिकी के स्तर पर अनुदार नेता माना जाता है। छात्र राजनीति (स्टूडेंट फेडरेशन ऑफ इंडिया) से मुख्य धारा की राजनीति में आने वाले बेबी को आपातकाल में छात्रों व युवाओं को संगठित करने के कारण जेल भी जाना पड़ा था। वे केरल के शिक्षा मंत्री रहे तथा लोकसभा सदस्य भी रहे। वे ऐसे वक्त में पार्टी का यह अहम पद सम्हाल रहे हैं जब कई तरह की चुनौतियां सामने हैं। ये चुनौतियां संगठनात्मक हैं तो वहीं विधानसभा-लोकसभा में घटता प्रतिनिधित्व भी। इसके साथ ही राजनीतिक, सामाजिक व आर्थिक मोर्चों पर उसका कम होता हस्तक्षेप भी दल के लिये चिंता का विषय है। पिछले 11 वर्षों से भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने जिस प्रकार से दक्षिणपंथी विचारधारा को देश भर में फैलाया है, उसका माकूल जवाब देने में वामपंथी दल लगातार नाकाम साबित हो रहे हैं। ऐसा केवल सीपीएम ही नहीं वरन देश के दूसरे बड़े साम्यवादी दल कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया (सीपीआई) के बारे में भी कहा जा सकता है। फिर, दोनों दलों के बीच एकता की आशा तो दूर, अब देखना होगा कि क्या तालमेल भी सम्भव है। जो वाम मोर्चा 2004 में बनी कांग्रेस प्रणीत यूपीए सरकार के दौरान मौजूद था, वह अब अस्तित्व में इसलिये भी नहीं है क्योंकि संसद में उसकी उपस्थिति क्षीण है। याद हो कि 2004 में इसे 44 सीटें मिली थीं। आज वह 4 पर सिमटी हुई है। इनमें भी तीन उसे सहयोगी दलों के सहयोग से हासिल हो सकीं। पश्चिम बंगाल में लगभग तीन दशक तक सरकार चलाने के बाद वहां तृणमूल कांग्रेस व भाजपा ने उसका पूर्ण सफाया कर रखा है।

मोदी और ट्रम्प बहुत बड़ी भूल करने में भी एक समान

- के रवींद्रन

संयुक्त राज्य अमेरिका में, अमेरिका फर्स्ट के लिए ट्रम्प के जल्दबाजी के प्रयास ने पहले ही भविष्य की परेशानी के बीज बो दिये हैं। दोनों नेताओं ने लोगों के जीवन और आजीविका के साथ जुआ खेला है, और जब चीजें गलत होती हैं, तो वे वास्तविकता का सामना करने के बजाय कहानी को फिर से लिखना चाहते हैं।

डोनाल्ड ट्रम्प और नरेंद्र मोदी एक-दूसरे के लिए प्रशंसा व्यक्त करते नहीं थकते। उनका परस्पर सम्मान एक अजीब अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक सौहार्द्र का आभास देता है, जो निर्विवाद है। जो चीज उन्हें जोड़ती है, वह केवल साझी विचारधारा नहीं है, बल्कि लोकलुभावनवाद, कथित देशभक्ति, और प्रायः नाटकीय परन्तु लापरवाह निर्णय लेने की प्रवृत्ति से आकार लेने वाला एक समान विश्वदृष्टि है।

मोदी का 'आत्मनिर्भर भारत', एक मजबूत राष्ट्रवादी झुकाव के साथ आर्थिक आत्मनिर्भरता का आह्वान है, जो ट्रम्प के 'अमेरिका फर्स्ट' बयानबाजी को दर्शाता है। दोनों नेता एक ऐसा दृष्टिकोण पेश करते हैं जो राष्ट्रीय गौरव के लिए एक भावनात्मक, लगभग नाटकीय अपील से अपनी शक्ति प्राप्त करता है, जो स्वायत्तता और शक्ति के भ्रम से घिरा हुआ है।

दोनों ही राष्ट्रीय नीति को व्यक्तिगत धर्मयुद्ध के रूप में पुनः ब्रांड करने में माहिर हैं, फिर भी छाती पीटने वाली इस सतह के नीचे स्तर के शासन में एक पैटर्न छिपा हुआ है जो कि सार से अधिक दिखावे से और रणनीति से अधिक भावना से चिह्नित है।

इस संबंध में, ट्रम्प की 'मुक्ति दिवस' पहल मोदी के विमुद्रीकरण प्रयोग से एक अजीब समानता रखती है- एक भयावह गलत अनुमान जो मास्टर स्ट्रोक के रूप में प्रच्छन्न है। 2016 में मोदी के विमुद्रीकरण - अचानक और बहुत कम योजना के साथ घोषित - ने भारत की 86 प्रतिशत मुद्रा को रातोंरात अमान्य कर दिया। यह कथित तौर पर काले धन, नकली मुद्रा और आतंकवाद के वित्तपोषण को जड़ से खत्म करने के लिए बनाया गया था, लेकिन यह जल्दी ही अराजकता में बदल गया। छोटे व्यवसाय ध्वस्त हो गये, मजदूरों ने शहरों से पलायन कर लिया और एटीएम के बाहर लंबी कतारें आर्थिक कुप्रबंधन का भयावह प्रतीक बन गयीं। विशेषज्ञों द्वारा खतरे की घंटी बजाये जाने के बावजूद, मोदी ने अपना मसीहावादी लहजा बरकरार रखा और नागरिकों से उज्ज्वल भविष्य के लिए मात्र 50 दिन की कठिनाई सहने का आग्रह किया।

डोनाल्ड ट्रम्प के तथाकथित मुक्ति दिवस, व्यापक टैरिफ के एक नये दौर की नाटकीय शुरूआत, ठीक उसी तरह के वैश्विक व्यवधान के साथ हुई है, जिसके बारे में आलोचकों ने चेतावनी दी थी। बाजार की प्रतिक्रियाएं तत्काल और क्रूर थीं। घोषणा के बाद पहले कुछ दिनों में यू.एस. स्टॉक इंडेक्स में तेजी से गिरावट आयी, जिसमें डॉ जोन्स इंडस्ट्रियल एवरेज-800 से अधिक अंक गिर गया और नसदक को और भी ज्यादा झटका लगा। अनिश्चितता में अचानक वृद्धि से निवेशक पीछे हट गये, आपूर्ति श्रृंखला एक बार फिर से क्रॉसहेयर में आ गयी और मुद्रास्फीति की आशंका फिर से भड़क गयी। टैरिफ युद्ध ने वैश्विक व्यापार के मूल में प्रहार किया है, जो अमेरिकी आर्थिक संप्रभुता को पुनः प्राप्त करने की आड़ में चीन, यूरोपीय संघ और मैक्सिको सहित प्रमुख आर्थिक भागीदारों से आयात को लक्षित करता है। ट्रम्प ने साहस दिखाना जारी रखा है, यह आश्वासन देते हुए कि यह समस्या अस्थायी है, ठीक वैसे ही जैसे मोदी ने किया था जब उनका विमुद्रीकरण का तुगलकी दुस्साहस एक धोखा प्रतीत हुआ था।

ट्रम्प टैरिफ का जवाब तेजी से दिया गया है। चीन ने स्वयं के काउंटर-टैरिफ के साथ जवाब दिया। यूरोपीय संघ व्हिस्की, मोटरसाइकिल और औद्योगिक वस्तुओं जैसे प्रमुख अमेरिकी नियार्तों को लक्षित करते हुए अपने स्वयं के प्रतिशोधात्मक उपायों की सूची का मसौदा तैयार करते हुए विश्व व्यापार संगठन में एक कानूनी चुनौती तैयार कर रहा है। मैक्सिको ने भी अन्य लैटिन अमेरिकी देशों के साथ समन्वित व्यापार प्रतिरोध का संकेत दिया है। ट्रम्प ने जो सपना देखा था कि डॉलर मजबूत होगा, वह भी अब नकारात्मक रूप से प्रभावित हो रहा है।

विश्व अर्थव्यवस्था के लिए दृष्टिकोण लगभग रातोंरात अंधकारमय हो गया है। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष ने 'बढ़ते व्यापार तनाव और वैश्विक अनिश्चितता' का हवाला देते हुए विकास पूवार्नुमानों को संशोधित किया है। उभरते बाजार, जो निर्यात और आपूर्ति श्रृंखला एकीकरण पर बहुत अधिक निर्भर हैं, आगे की अस्थिरता के लिए तैयार हैं। अर्थशास्त्रियों ने चेतावनी दी है कि निरंतर टैरिफ वृद्धि अगले वर्ष वैश्विक जीडीपी वृद्धि से पूर्ण प्रतिशत अंक कम कर सकती है।

जिस तरह मोदी के विमुद्रीकरण में एक भव्य राष्ट्रवादी हस्तक्षेप के सभी लक्षण थे- सिस्टम को साफ करना, भ्रष्टाचार को जड़ से खत्म करना, अर्थव्यवस्था को शुद्ध करना - ट्रम्प का लिबरेशन डे युद्ध, जीत की भाषा में लिपटा हुआ था, और अमेरिकी दृढ़ता को प्रतिबिंबित करता था। फिर भी दोनों ही बहुत अवैज्ञानिक थे, आंकड़ों के यथार्थ से कटे हुए थे, और संस्थागत परामर्श से रहित थे।

संयुक्त राज्य अमेरिका में, अमेरिका फर्स्ट के लिए ट्रम्प के जल्दबाजी के प्रयास ने पहले ही भविष्य की परेशानी के बीज बो दिये हैं। दोनों नेताओं ने लोगों के जीवन और आजीविका के साथ जुआ खेला है, और जब चीजें गलत होती हैं, तो वे वास्तविकता का सामना करने के बजाय कहानी को फिर से लिखना चाहते हैं।

एक गहरी, अधिक परेशान करने वाली समानता भी है - व्यक्तित्व का पंथ जो दोनों पुरुषों को जवाबदेही से बचाता है। मोदी और ट्रंप ने राष्ट्रीय मानस में अपने निजी ब्रांड इतने मजबूत कर लिए हैं कि उनके समर्थक अक्सर आलोचना को विश्वासघात के रूप में देखते हैं। भारत में, कई लोगों ने अराजकता को एक महान उद्देश्य के लिए आवश्यक दर्द के रूप में देखा, भले ही उद्देश्य को कभी स्पष्ट रूप से परिभाषित नहीं किया गया हो। अमेरिका में, ट्रंप का 'मुक्ति दिवस' ट्रंप के मूर्ख दिवस के रूप में शुरू हुआ है। कोई यह तर्क दे सकता है कि विमुद्रीकरण और मुक्ति दिवस दोनों ही एक विशेष प्रकार की राजनीति की परिणति का प्रतिनिधित्व करते हैं - एक ऐसी राजनीति जिसमें भावनाएं तर्क पर हावी हो जाती हैं, जहां नारे रणनीति की जगह ले लेते हैं, और जहां अल्पकालिक दृष्टिकोण दीर्घकालिक परिणामों पर हावी हो जाते हैं। इस दुनिया में, नेताओं से परिणाम देने की अपेक्षा नहीं की जाती, बल्कि केवल इरादे को नाटकीय बनाने की अपेक्षा की जाती है। मोदी और ट्रंप, अपने सभी मतभेदों के बावजूद, इस भावनात्मक लोकप्रियता के वास्तुकार हैं, जो उपलब्धियों से नहीं बल्कि सतत टकराव, निर्मित संकटों और निर्णायक नेतृत्व के भ्रम से राजनीतिक वैधता का निर्माण करते हैं।

त्रासदी यह है कि इन नाटकीय भूलों से सबसे अधिक पीड़ित लोग सबसे कमजोर हैं। भारत में, दैनिक वेतन भोगी, छोटे व्यापारी और ग्रामीण समुदाय विमुद्रीकरण के दुष्परिणामों का सामना कर रहे हैं। अमेरिका में, फ्रंटलाइन वर्कर्स, गिग इकॉनामी प्रतिभागी और हाशिए पर पड़े समुदाय सबसे ज्यादा पीड़ित होंगे। फिर भी, मोदी और ट्रम्प द्वारा गढ़े गए राजनीतिक आख्यान इन कष्टों को देशभक्तिपूर्ण बलिदान में बदल देंगे, कठिनाई को नीति विफलता के बजाय राष्ट्रीय शक्ति के प्रमाण के रूप में पेश करेंगे। संस्थानों और विशेषज्ञों के लिए एक साझा तिरस्कार भी है - सत्तावादी लोकलुभावनवाद की एक पहचान। मोदी ने अपने विमुद्रीकरण कदम में भारतीय रिजर्व बैंक को दरकिनार कर दिया, और ट्रम्प ने नियमित रूप से अपने अधिकारियों को बर्खास्त कर दिया या चुप करा दिया। संस्थानों को कमजोर करना आकस्मिक नहीं है - यह उनकी शक्ति का केंद्र है। दोनों नेता 'हम बनाम वे' की गतिशीलता बनाने में सफल होते हैं, जहां संस्थानों को एक पुरानी, अप्रभावी व्यवस्था के अवशेष के रूप में पेश किया जाता है, और नेता लोगों की एकमात्र सच्ची आवाज के रूप में उभरता है।

अहमदाबाद अधिवेशन : कांग्रेस के लिए चुनौती भी अवसर भी!

- शकील अख्तर

अहमदाबाद में होना चाहिए और उसका हल निकलना चाहिए। वहां पहले दिन 8 अप्रैल को कांग्रेस वर्किंग कमेटी पार्टी की सर्वोच्च नीति निर्धारक ईकाई (सीडब्ल्यूसी) की ही मीटिंग है। याद रखना चाहिए कि इससे पहले की दो सीडब्ल्यूसी की मीटिंग दिल्ली और बेलगावी में अध्यक्ष खरगे ने पार्टी की अन्दरूनी समस्याओं की गहरी पड़ताल की और जितनी सुना सकते थे उतनी खरी-खरी सुनाईं। गुटबाजी अकर्मण्यता सब पर। कांग्रेस का यह दुस्साहस ही है कि वह अपना सबसे बड़ा सम्मेलन पूर्ण अधिवेशन (प्लेनरी) 8 और 9 अप्रैल को भाजपा के सबसे मजबूत राज्य गुजरात में कर रही है। उसके शासन वाले तीन प्रदेश थे। गर्मी के हिसाब से शिमला सबसे पसंदीदा जगह थी। 8 साल बाद वहीं से कांग्रेस की राजनीतिक वापसी तय हुई थी। 2003 में तत्कालीन कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी ने वहां चिंतन शिविर आयोजित करके सत्ता में वापसी का नया रोड मेप बनाया था। पूरे विपक्ष को साथ लेकर चलने का। उससे पहले पचमढ़ी 1998 में एकला चलो तय किया था। तो अपनी सरकार वाले शहर शिमला में न करके, कर्नाटक, तेलंगाना वाले कांग्रेस शासित राज्यों में भी न जा कर के और बिहार, जहां अभी इसी साल विधानसभा चुनाव हैं और सहयोगी दल आरजेडी के साथ वहां जीतने की भी अच्छी संभावनाएं हैं वह सब छोड़कर राहुल गांधी सीधे प्रधानमंत्री मोदी को उनके घर गुजरात जाकर चुनौती दे रहे हैं। यही राहुल की ताकत है। अब निर्भर पार्टी पर है कि वह इस अवसर का कितना फायदा उठा पाती है। पूर्ण अधिवेशन का मुख्य काम होता है देशवासियों में उत्साह भरना। कांग्रेस जिसने आजादी के आन्दोलन का नेतृत्व किया है पूरे देश की इच्छाओं आकांक्षाओं को प्रतिबिम्बित करती रही है। 1920 में कोलकाता से असहयोग आंदोलन का आह्वान किया था। 1929 में लाहौर में अपना लक्ष्य पूर्ण स्वराज घोषित कर दिया था। जी हां यह सब हम कांग्रेस के अधिवेशनों की ही बात बता रहे हैं। कांग्रेस मतलब देश में ही नहीं पूरी दुनिया में हिन्दुस्तान की आवाज। यह मौका आरएसएस के पास भी था। आजादी से 22 साल पहले बन गई थी। मगर वह उस समय भी नफरत और विभाजन के अजेंडे पर ही काम कर रही थी। दलित, पिछड़े, आदिवासी, महिला के समान अधिकारों का विरोध कर रही थी। और गांधी इन सबकी आवाज उठा रहे थे इसलिए उनके खिलाफ सबसे ज्यादा नफरत फैला रही थी। सरदार पटेल ने आरएसएस पर प्रतिबंध लगाते हुए यह कहा था कि इनकी जहरीली विचारधारा के कारण ही महात्मा गांधी की जान गई। बहरहाल हम बता रहे थे कांग्रेस के अधिवेशनों का महत्व। तो फिर 1942 में मुम्बई में सीधा अंग्रेजों भारत छोड़ो प्रस्ताव पास कर दिया गया। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने रखा था। जो गांधी जी के साथ संघ और भाजपा के सबसे ज्यादा निशाने पर रहते हैं। खैर तो कांग्रेस के अधिवेशन देश में हमेशा से क्रान्तिकारी पैगाम लाते रहे हैं। आजादी के बाद देश का सबसे बड़ा आर्थिक फैसला जो अभी भी भारत की अर्थव्यवस्था को संभाले हुए, बैंकों का राष्ट्रीयकरण, उसका फैसला इन्दिरा गांधी ने 1969 में बंगलूरू अधिवेशन में किया था। इतिहास भरा पड़ा है कांग्रेस के अधिवेशनों और देश की तरक्की का। नई सोच नई हिम्मत देने का और पार्टी के लिहाज से खुद को परिवर्तित करने का। आज कांग्रेस बहती नदी से, एक रूका हुआ तालाब बन गई है। राहुल जैसा बिल्कुल न डरने वाला नेता है। उनके जैसे ही साहसी अध्यक्ष। मल्लिकार्जुन खरगे जब अध्यक्ष बने थे तो किसी को उम्मीद नहीं थी कि वे एक अलग और बड़े व्यक्तित्व के साथ दिखेंगे। मगर खरगे ने एक तरफ साहस के साथ भाजपा और संघ का मुकाबला किया तो दूसरी तरफ पार्टी में समन्वय के साथ काम। इससे अच्छी जोड़ी राजनीति में मिलना मुश्किल है। मगर परिणाम नहीं आ रहे। यह काम इन दोनों का और इनके साथ जुड़ी टीम का होता है। टुकड़ों-टुकड़ों में कई अच्छे रंग उभरते हैं। मगर पूर्णता में कांग्रेस उठ रही है ऐसा विश्वास नहीं बन रहा है। मोदीजी की कमजोरी कांग्रेस का लाभ! समय किसी का नहीं रहता जैसी बातें ठीक हैं। या एक वह वर्ग भी है जो चुनाव आयोग ऐसा है कहकर सारी बात ही खतम कर देता है। मगर चुनाव आयोग ऐसा है, बाकी संवैधानिक संस्थाएं ऐसी हैं कहने से तो चीजें नहीं बदलेंगी। सीधी बात है कि जब तक मोदी हैं तब तक चुनाव आयोग और बाकी संस्थाएं ऐसी ही रहेंगी। पहले मोदी को ही हटाना पड़ेगा। और इन संस्थाओं के रहते उनसे लड़ते उन पर दबाव बनाकर उन्हें गैरकानूनी कामों के रोज परिणाम बताते हुए। और सबसे बड़ी बात अपनी कमियों को दूर करते हुए। यही वह बात है जो अहमदाबाद में होना चाहिए और उसका हल निकलना चाहिए। वहां पहले दिन 8 अप्रैल को कांग्रेस वर्किंग कमेटी पार्टी की सर्वोच्च नीति निर्धारक ईकाई (सीडब्ल्यूसी) की ही मीटिंग है। याद रखना चाहिए कि इससे पहले की दो सीडब्ल्यूसी की मीटिंग दिल्ली और बेलगावी में अध्यक्ष खरगे ने पार्टी की अन्दरूनी समस्याओं की गहरी पड़ताल की और जितनी सुना सकते थे उतनी खरी-खरी सुनाईं। गुटबाजी अकर्मण्यता सब पर। और रही सही कसर नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने अहमदाबाद के पिछले महीने ही हुए एक कार्यकर्ता सम्मेलन में यह कहकर पूरी कर दी कांग्रेस में आधे भाजपाई हैं।

अब क्या बचा। डायग्नोस (रोग की पहचान) हो गया। सारी जांच पड़ताल हो गई। मरीज ऑपरेशन टेबल पर आ गया।

मगर लास्ट मिनट में ऑपरेशन करने वाली टीम में एक नया डाक्टर शामिल कर लिया। राजीव शुक्ला ! सीडब्ल्यूसी का परमानेंट इनवाइटी बनाकर। स्थायी आमंत्रित।

क्यों? राजीव शुक्ला हिमाचल प्रदेश के प्रभारी थे। उन्हें पिछले दिनों हटा दिया। हटाने के बाद उनकी सीडब्ल्यूसी की सदस्यता खत्म हो गई। वहां वापस लाने के लिए मीटिंग से ठीक पहले उन्हें स्थायी आमंत्रित बना दिया।

याद रखिए केवल एक अपाइंटमेंट हुआ है। और प्लेनरी की मीटिंग से ठीक पहले एक होने का मतलब अत्यन्त महत्वपूर्ण। कांग्रेस इसी तरह के मैसेज देती है। सब किए धरे पर पानी। कांग्रेस की भाषा में इसे कहते हैं एडजस्ट करना। हर हाल में यह एडजस्ट होते हैं।

तो लड़ाई चुनाव आयोग से ठीक है। मगर यहां का यह चुनाव कांग्रेस ने ही किया है। उनके साथ गोदी मीडिया है। मगर वह भी कल से बहुत लिखने बताने के बाद भी यह नहीं बता पा रही कि राजीव शुक्ला अपरिहार्य क्यों हैं। मोदी की भाजपा में कोई एक भी है?

कांग्रेस ने बाकायदा घोषणा की है कि यह संगठन का साल है। और उस साल का यह पूर्ण अधिवेशन हो रहा है। नए लोगों के साथ कांग्रेस को जाना चाहिए था। मगर ज्यादातर पदाधिकारी पुराने। केवल बिहार पूरा बदला है। और यूपी के जिलाध्यक्ष। अच्छी बात है। मगर बाकी सब बदलने में क्या दिक्कत थी। ऐसा नहीं है कि बदलने का मतलब सब बदलना ही। उन्हें भी जारी रख सकते हैं।

मगर इसकी भी सूची निकलती है। प्रदेश अध्यक्ष नहीं बदले। वह नहीं बदले तो जिन जिला अध्यक्षों का अभी दिल्ली में सम्मेलन किया वे भी नहीं बदले।

कांग्रेस यथास्थितिवाद का शिकार हो गई है। वह पार्टी जो देश में परिवर्तन की वाहक मानी जाती है। विचार आज भी उसके प्रगतिशील हैं। मगर उन विचारों को आगे बढ़ाने वाला संगठन नहीं है।

एक उदाहरण देखिए। राहुल गांधी का आज सबसे बड़ा मुद्दा क्या है? अभी सीपाआईएम की मदुरई कांग्रेस (महाअधिवेशन) ने भी उसका समर्थन कर दिया। जाति से हटकर वर्ग की बात करने वाली देश की सबसे बड़ी लेफ्ट पार्टी ने। मतलब मुद्दा बहुत बड़ा है। जाति गणना का। देश की राजनीति बदल देगा। मगर क्या कांग्रेस उसके लिए अपना संगठन तैयार कर पाएगी? अहमदाबाद में सबसे बड़ा सवाल यही होगा। कांग्रेस के लिए अवसर भी चुनौती भी!?

स्वास्थ्य के प्रति करना होगा जागरुक

रमेश सर्राफ धमोरा

स्वास्थ्य हमारे जीवन के लिए सबसे महत्वपूर्ण है। इंसान जब तक स्वस्थ रहता है तब तक उसमें कार्य करने की क्षमता बनी रहती है। जब वह अस्वस्थ होने लगता है तो उसके कार्य करने की क्षमता भी कमजोर पड़ने लगती है। इसीलिए हमारे बुजुर्ग कहा करते थे कि पहला सुख निरोगी काया। यानी शरीर स्वस्थ रहने पर ही सबसे पहला सुख मिलता है। आज के दौर में खानपान में लापरवाही के चलते अधिकतर व्यक्ति किसी ने किसी बीमारी से ग्रसित रहने लगे हैं। इससे उनके कार्य क्षमता में भी कमी आई है। मनुष्य के अस्वस्थ होने पर उसके उपचार पर पैसे खर्च होते हैं जिससे उसकी आर्थिक स्थिति कमजोर होने लगती है। इसके साथ ही बीमार व्यक्ति का पूरा परिवार भी उसकी बीमारी के चलते तनाव में रहने लगता है। भागम-भाग के दौर वाली आज की जिंदगी में जो व्यक्ति अपना स्वास्थ्य सही रख पाता है। वह कम कमा कर भी सबसे अधिक सुखी रह सकता है। इसलिए हमें सबसे अधिक अपने स्वास्थ्य पर ध्यान देना चाहिए।

आज दुनिया भर में मनुष्य के स्वास्थ्य को लेकर चिंता व्यक्त की जा रही है। विश्व स्वास्थ्य संगठन भी दुनिया के देशों को समय-समय पर चेतावनी देता रहता है। कुछ वर्ष पूर्व आई कोरोना महामारी ने पूरी दुनिया को हिला कर रख दिया था। मगर वैज्ञानिकों की तत्परता से वैक्सीन निर्माण होने के चलते वह नियंत्रण में आ गई थी। मगर भविष्य में भी ऐसी कोई गारंटी नहीं है कि कोरोना जैसी महामारी फिर नहीं आए। कभी भी कोई नई महामारी आ सकती है। इसलिए हमें हमारे खानपान, रहन-सहन व वातावरण में सावधानी बरतनी चाहिए ताकि हम बेवजह की बीमारियों से बच सके। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहने के लिए प्रति वर्ष 7 अप्रैल को पूरी दुनिया में विश्व स्वास्थ्य दिवस मनाया जाता है। इस दिन को मनाने के पीछे विश्व स्वास्थ्य संगठन का मकसद दुनियाभर में लोगों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करना है। साथ ही साथ सरकारों को स्वास्थ्य नीतियों के निर्माण के लिए प्रोत्साहित और प्रेरित करना। वर्तमान में इस संगठन के बैनर तले 195 से अधिक देश अपने-अपने देश के नागरिकों को रोगमुक्त बनाने के लिए प्रयासरत है। विश्व स्वास्थ्य दिवस मनाने की शुरूआत 1950 से हुई। वैश्विक आधार पर स्वास्थ्य से जुड़े सभी मुद्दे को विश्व स्वास्थ्य दिवस लक्ष्य बनाता है। जिसके लिये कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के द्वारा अंतरर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न प्रकार के खास विषय पर आधारित कार्यक्रम इसमें आयोजित होते हैं। पूरे साल भर के स्वास्थ्य का ध्यान रखने के लिये और उत्सव को चलाने के लिये एक खास विषय का चुनाव किया जाता है। वर्ष 2025 में विश्व स्वास्थ्य दिवस का विषय है स्वस्थ शुरूआत, आशावादी भविष्य। यह विषय माताओं और नवजात शिशुओं के स्वास्थ्य और जीवन को बढ़ाने पर केंद्रित है। जिसका लक्ष्य परिहार्य मातृ और शिशु मृत्यु के बारे में जागरूकता बढ़ाना है। स्वास्थ्य संगठन की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि आधे भारतीयों की आवश्यक स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच ही नहीं है। जबकि स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ उठाने वाले लोग अपनी आय का 10 फीसदी से ज्यादा इलाज पर ही खर्च कर रहे हैं। वैश्विक साइबर सुरक्षा सूचकांक (जीसीआई) 2024 में भारत का स्कोर 98.49/100 रहा है। यह स्कोर अमेरिका, जापान, और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों के साथ भारत को टियर 1 में रखता है। वैश्विक स्वास्थ्य सुरक्षा सूचकांक 2024 के अनुसार भारत 42.8 के समग्र सूचकांक स्कोर के साथ 195 देशों में से 66वें स्थान पर है और 2019 से -0.8 का परिवर्तन है। 2021 में दुनिया भर के देशों की स्वास्थ्य प्रणालियों की रैंकिंग के अनुसार, स्वास्थ्य सूचकांक स्कोर के आधार पर भारत 167 देशों में से 111वें स्थान पर था।राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण के अनुसार तीन साल की अवस्था वाले 3.88 प्रतिशत बच्चों का विकास अपनी उम्र के हिसाब से नहीं हो सकी है और 46 प्रतिशत बच्चे अपनी अवस्था की तुलना में कम वजन के हैं, जबकि 79.2 प्रतिशत बच्चे एनीमिया से पीड़ित हैं। गर्भवती महिलाओं में एनीमिया 50 से 58 प्रतिशत बढ़ा है। कहा जाता है कि जिस देश कि चिकित्सा सुविधाएं बेहतर होगी उस देश के लोगों कि औसत आयु उतनी ही अधिक होगी। भारतवासियों को यह जानकर हैरानी होगी कि औसत आयु के मामले में बांग्लादेश भारत से आगे है। भारत में औसत आयु जहां 64.6 वर्ष मानी गई है, वहीं बांग्लादेश में यह 66.9 वर्ष है। इसके अलावा भारत में कम वजन वाले बच्चों का अनुपात 43.5 प्रतिशत है और प्रजनन क्षमता की दर 2.7 प्रतिशत है, जबकि पांच वर्षों से कम अवस्था वाले बच्चों की मृत्यु दर 66 है और शिशु मृत्यु दर जन्म लेने वाले प्रति हजार बच्चों में 41 है जबकि 66 प्रतिशत बच्चों को डीपीटी का टीका देना पड़ता है।

भारतीय स्वास्थ्य रिपोर्ट के मुताबिक सार्वजनिक स्वास्थ्य की सेवाएं अभी भी पूरी तरह से मुफ्त नहीं है और जो है उनकी हालत अच्छी नहीं है। स्वास्थ्य के क्षेत्र में प्रशिक्षित लोगों की काफी कमी है। भारत में डॉक्टर और आबादी का अनुपात भी संतोषजनक नहीं है। हमारे देश में 1000 लोगों पर एक डॉक्टर भी उपलब्ध नहीं है। अस्पतालों में बिस्तर की उपलब्धता भी काफी कम है और केवल 28 प्रतिशत लोग ही बेहतर साफ-सफाई का ध्यान रखते हैं। पिछले कुछ सालों में हमारे देश में कैंसर जैसी जानलेवा बीमारियों का प्रभाव बढ़ा है। साथ ही मधुमेह, हृदय रोग, क्षय रोग, मोटापा, तनाव की चपेट में भी लोग बड़ी संख्या में आ रहे हैं। महिलाओं में स्तन कैंसर, गर्भाशय कैंसर का खतरा बढ़ा है। ये बीमारियां बड़ी तादाद में उनकी मौत का कारण बन रही हैं। ग्रामीण तबके में देश की अधिकतर आबादी उचित खानपान के अभाव में कुपोषण की शिकार हो रही है। महिलाओं, बच्चों में कुपोषण का स्तर अधिक देखा गया है। एक रिपोर्ट के अनुसार प्रति 10 में से सात बच्चे एनीमिया से पीड़ित हैं।

वहीं महिलाओं की 36 प्रतिशत आबादी कुपोषण की शिकार है।

भारत में इलाज पर अपनी जेब से खर्च करने वाले पीड़ित लोगों की संख्या ब्रिटेन, फ्रांस और जर्मनी की संयुक्त आबादी से भी अधिक है। भारत की तुलना में इलाज पर अपनी आय का 10 फीसदी से अधिक खर्च करने वाले लोगों का देश की कुल जनसंख्या में प्रतिशत श्रीलंका में 2.9 फीसदी, ब्रिटेन में 1.6 फीसदी, अमेरिका में 4.8 फीसदी और चीन में 17.7 फीसदी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार अभी भी बहुत से लोग ऐसी बीमारियों से मर रहे है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट में बताया गया कि देश की आबादी का 3.9 फीसदी यानी 5.1 करोड़ भारतीय अपने घरेलू बजटा का एक चौथाई से ज्यादा खर्च इलाज पर ही कर देते हैं। जबकि श्रीलंका में ऐसी आबादी महज 0.1 फीसदी है, ब्रिटेन में 0.5 फीसदी, अमेरिका में 0.8 फीसदी और चीन में 4.8 फीसदी हैं।

संविधान की रक्षा का संकल्प बना स्वाभिमान सप्ताह, सपाइयों ने दिखाई ताकत

- काली पट्टी बांध सड़कों पर उतरीं महिलाएं
- दिल्ली की सीएम की टिप्पणी का विरोध

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। समाजवादी पार्टी के 8 से 14 अप्रैल तक मनाए जा रहे स्वाभिमान-सम्मान सप्ताह की शुरूआत आज जिले में उत्साहपूर्वक हुई। कार्यक्रम पार्टी हाईकमान के निर्देश पर किया गया, जिसमें संविधान, आरक्षण और बाबा साहब के योगदान पर विस्तार से चर्चा की गई। कार्यक्रम में जिलाध्यक्ष शिवशंकर यादव ने बाबा साहब डॉ भीमराव अंबेडकर की विचारधारा को लेकर पीडीए वर्ग को एकजुट होने का आह्वान किया। कहा कि अब वक्त है कि पीडीए समाज संविधान की रक्षा

स्वाभिमान-सम्मान सप्ताह की बैठक में सपाई

के लिए एक नई क्रांति की शुरूआत करे। जिला उपाध्यक्ष नरेंद्र यादव ने संविधान को पीडीए के लिए संजीवनी व ढाल बताया। वहीं, बाबा साहब वाहिनी के प्रदेश उपाध्यक्ष रामकिशोर कुरील ने दो टूक कहा जब तक संविधान सुरक्षित रहेगा, तब तक पीडीए समाज का स्वाभिमान और अधिकार भी सुरक्षित रहेगा। पूर्व कोआपरेटिव अध्यक्ष लवलेश यादव ने स्वाभिमान की परिभाषा स्पष्ट करते हुए कहा कि पंथनिरपेक्षता, लोकतंत्र और सामाजिक न्याय ही इस आंदोलन की आत्मा हैं। कार्यक्रम में मो गुलाब खान, रमा यादव, अमर पटेल, अजय यादव, रमेश कुशवाहा, संतोष जायसवाल, राजा यादव, बालकृष्ण प्रजापति समेत अन्य नेताओं ने विचार रखे।

दिल्ली की सीएम पर सपा महिला सभा का जोरदार प्रहार

कार्यक्रम के बाद दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता की सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष पर आपत्तिजनक टिप्पणी के विरोध में महिला सभा ने मोर्चा संभाल लिया। काली पट्टियाँ बाँधकर महिला नेताओं ने धनुष चौराहे तक नारेबाजी करते हुए विरोध प्रदर्शन किया। इस विरोध की अगुआई महिला सभा की उपाध्यक्ष श्रीमती अंजू सोनी ने की, उनके साथ कुचारम प्रधान प्रतिभा वर्मा, कोषाध्यक्ष उमा यादव, शोभा जोशी सहित दर्जनों महिलाएं सड़कों पर उतरीं।

रेलवे स्टेशन पर यात्री की मौत पर रेलवे की सफाई

यात्री को मिली तत्काल सहायता

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। हाल ही में चित्रकूट रेलवे स्टेशन पर एक यात्री की असमय मृत्यु की खबर ने जहां सभी को झकझोर दिया, वहीं सोशल मीडिया और कुछ खबरों में कहा गया कि यात्री को लगभग 30 मिनट तक कोई मदद नहीं मिली। इस पर अब उत्तर मध्य रेलवे, झाँसी मंडल ने अपना आधिकारिक बयान जारी किया है, जिसमें कई अहम बिंदुओं को स्पष्ट किया गया है। रेलवे द्वारा जारी पत्र में बताया गया कि 07 अप्रैल को जैसे ही स्टेशन पर एक यात्री की तबीयत बिगड़ने की सूचना मिली, वैसे ही सुरक्षा नियंत्रण कक्ष झाँसी ने स्थिति का संज्ञान लेते हुए आरपीएफ चित्रकूट को तत्परता से सूचित किया गया। इसके बाद गाड़ी संख्या 12448 संपर्क क्रांति एक्सप्रेस को सुबह 06:34 बजे चित्रकूट स्टेशन पर रोककर यात्री को प्लेटफॉर्म नंबर 1 पर उतारा गया।

अधिकारी ने बताया कि बीमार यात्री अशोक कुमार मित्तल (उम्र 59 वर्ष) को प्लेटफॉर्म पर तत्काल प्राथमिक सहायता दी गई व उन्हें जिला अस्पताल पहुंचाया गया, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। स्टेशन के उप प्रबंधक व अन्य अधिकारी 06:20 से 06:45 बजे तक स्वयं मौके पर उपस्थित रहे और स्थिति पर नजर बनाए रखी। रेलवे जनसंपर्क अधिकारी ने खंडन करते हुए कहा कि कि यात्री को 30 मिनट तक कोई मदद नहीं मिली। यह तथ्यों से परे व गलत है। रेलवे द्वारा तत्काल हर संभव प्रयास किए गए थे, लेकिन दुर्भाग्यवश यात्री को बचाया नहीं जा सका।

न्यूज झरोखा

ग्रामोदय में हुई पीएचडी प्रवेश परीक्षा

चित्रकूट। महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय में मंगलवार को पीएचडी पाठ्यक्रम में प्रवेश को लिखित परीक्षा हुई। यह परीक्षा ग्रामीण विकास एवं प्रबंधन संकाय व विज्ञान एवं पर्यावरण संकाय के अंतर्गत की गई, जिसमें सत्र 2024-25 के लिए 19 विषयों में अभ्यर्थियों ने भाग लिया। परीक्षा में विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो भरत मिश्रा ने परीक्षा केंद्रों का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण में उन्होंने केंद्र अधीक्षकों एवं सहायक अधीक्षकों से परीक्षा व्यवस्थाओं की जानकारी ली। इस मौके पर प्रवेश समिति के अध्यक्ष प्रो एचएस कुशवाहा, सचिव डॉ साधना चौरसिया समेत अन्य अकादमिक अधिकारी भी मौजूद रहे।

राशनकार्डधारक 30 अप्रैल तक कराएं ई-केवाईसी

चित्रकूट। जिले के समस्त राशनकार्डधारकों को अलर्ट जारी करते हुए जिला पूर्ति अधिकारी आनंद कुमार सिंह ने बताया कि शासन के निर्देश पर राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम-2013 से आच्छादित सभी लाभार्थियों के लिए ई-केवाईसी कराना अनिवार्य है। बताया कि राशनकार्ड से जुड़े सभी सदस्यों की ई-केवाईसी की अंतिम तिथि 30 अप्रैल है। यदि निर्धारित तिथि तक ई-केवाईसी नहीं कराई जाती है, तो संबंधित राशन कार्ड की यूनिट डिलीट कर दी जाएगी, और ऐसे में पात्र व्यक्ति खाद्यान्न से वंचित हो सकता है।

कार्यकत्रियां आँगनवाड़ी केन्द्रो को नियमित खोले : डीएम

बाँदा। जिलाधिकारी जे0रीभा की अध्यक्षता में कलेक्टेट सभागार में पोषण पखवाडा दिनांक 08 अप्रैल से 22 अप्रैल, तक आयोजित किये जाने के सम्बन्ध में बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में जिलाधिकारी ने आंगनबाडी कार्यकत्रियों एवं सुपरवाइजरों को निर्देश दिये कि पोषण पखवाडा के अन्तर्गत बच्चों में कुपोषण को खत्म करने के लिए कुपोषण प्रबन्धन के माड्यूलर का क्रियान्वयन सही रूप से किया जाए तथा कुपोषित बच्चों को पोषाहार वितरण के साथ उनके स्वास्थ्य लाभ की निगरानी नियमित रखी जाए। उन्होंने गर्भवती महिलाओं की सभी जांचे कराये जाने के साथ बच्चों का टीकाकरण कराये जाने एवं बीएचएनडी सत्र में आने वाली सभी गर्भवती महिलाओं की जांच का कार्य करने एवं उनके कार्ड में अंकित किये जाने के निर्देश दिये। उन्होंने आंगनबाडी एवं सुपरवाइजरों को निर्देश दिये कि आंगनबाडी केन्द्र नियमित रूप से समय पर खुले रखने के साथ पंजीकृत बच्चों की उपस्थिति भी रखें तथा पोषण टैकर ऐप में आवश्यक फीडिंग करना सुनिश्चित करें। उन्होंने आशाओं के साथ बच्चों के टीकाकरण कार्य में सहयोग करने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि गर्भावस्था से लेकर जन्म के दो वर्ष तक बच्चों का विशेष रूप से ध्यान रखे जाने के निर्देश दिये, जिससे कि बच्चों का कुपोषण से बचाव हो सके। इसके पश्चात आंगनबाडी कार्यकत्रियों एवं सुपरवाइजरों की पोषण पखवाडा की जागरूकता रैली को कलेक्टेट से रवाना किया गया। इस अवसर पर जिलाधिकारी ने गर्भवती महिलाओं को फल एवं पोषाहार किट का वितरण किया तथा छोटे बच्चों का अन्नप्रासन भी कराया। बैठक में मुख्य विकास अधिकारी वेद प्रकाश मौर्य, अपर मुख्य चिकित्सा अधिकारी जयप्रकाश, जिला कार्यक्रम अधिकारी दिलीप कुमार पाण्डेय सहित सीडीपीओ, सुपरवाइजर, आंगनबाडी कार्यकत्रियां उपस्थित रहे।

ओवरलोड ट्रैक्टर से टूटे पीपों का पुल, आवागमन ठप

बाँदा। जसपुरा क्षेत्र के अंतर्गत गलौली-बाराघाट मार्ग पर स्थित पीपों का पुल ओवरलोड ट्रैक्टर के दबाव से टूटकर छतिग्रस्त हो गया है, जिससे आवागमन बाधित हो गया है। प्रधान संघ के अध्यक्ष व ग्राम प्रधान राजेन्द्र सिंह गलौली व पूर्व प्रधान रंज्जन सिंह ने बताया कि पुल की छतिग्रस्त स्थिति के कारण एक चार पहिया गाड़ी पुल पर फंसी हुई है, जिससे क्षेत्रवासियों को कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है। स्थानीय ग्रामीणों के अनुसार, इस पुल से हमेशा ओवरलोड ट्रैक्टरों और अन्य भारी वाहनों का आवागमन होता रहता है, जिनमें बालू और अन्य सामग्री की ढुलाई की जाती है। इसी कारण पुल की संरचना कमजोर हो गई और अब यह टूट गया है। पुल की कमजोर स्थिति को देखते हुए कभी भी बड़ा हादसा हो सकता है। ग्रामवासियों और समाजसेवियों का आरोप है कि इस पुल को बनाने में ठेकेदार ने लापरवाही बरती है और यहां की व्यवस्था में कोई सुधार नहीं हुआ। इसके पहले भी कई हादसे इस पुल पर हो चुके हैं, लेकिन प्रशासन और ठेकेदार की ओर से कोई ठोस कार्रवाई नहीं की गई। कई बार इसी पुल में कई घटना भी हो चुकी है। स्थानीय लोग बार-बार पक्के पुल की मांग कर चुके हैं और धरना प्रदर्शन भी कर चुके हैं, लेकिन अभी तक कोई सुधार नहीं हुआ। यह पुल बांदा, फतेहपुर और कानपुर को जोड़ने वाले प्रमुख मार्ग का हिस्सा है, जहां सैकड़ों लोगों का प्रतिदिन आवागमन होता है। ऐसे में प्रशासन को इस मामले में जल्द से जल्द कार्रवाई करनी चाहिए ताकि क्षेत्रवासियों का जीवन सुरक्षित और सुगम हो सके।

प्राइवेट स्कूलों की मनमानी पर रालोद सख्त, जिलाध्यक्ष ने डीएम को लिखा पत्र

किताब-कॉपी व ड्रेस के नाम पर अवैध वसूली

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिले के निजी स्कूलों ने किताब, कॉपी व ड्रेस के नाम पर गरीब अभिभावकों का आर्थिक शोषण अब नया मुद्दा बन गया है। मामले को गंभीरता से उठाते हुए राष्ट्रीय लोकदल (रालोद) के जिलाध्यक्ष पुरुषोत्तम कुमार ने जिलाधिकारी को एक पत्र लिखकर कार्रवाई की मांग की है। पत्र में आरोप लगाया है कि जिले के अधिकतर प्राइवेट स्कूलों में छात्रों को चिन्हित दुकानों से ही किताबें, ड्रेस और स्टेशनरी खरीदने के लिए मजबूर किया जाता है। यदि अभिभावक अन्यत्र से सस्ती दर पर समान खरीदने का प्रयास करते हैं तो बच्चों को स्कूल से नाम काटने की धमकी दी जाती है, जिससे अभिभावकों को भारी मानसिक दबाव का सामना करना पड़ता है।

जिलाध्यक्ष ने बताया कि जिन दुकानों से सामान लेने के लिए कहा जाता है, वहां किताबें और अन्य सामग्री दो गुनी कीमत पर बेची जाती हैं। इतना ही नहीं, इन दुकानों पर बिना जीएसटी बिल के बिक्री की जाती है, जिससे टैक्स चोरी की भी आशंका है। इस पूरी व्यवस्था से न केवल गरीब व मध्यमवर्गीय अभिभावकों की जेब पर बोझ पड़ रहा है, बल्कि शिक्षा को व्यवसाय बना दिया गया है। पुरुषोत्तम कुमार ने प्रशासन से अपील की है कि ऐसे स्कूल व दुकानदारों की पहचान कर उनके विरुद्ध कठोर कार्रवाई करें जिससे बच्चों के भविष्य के नाम पर अभिभावकों का आर्थिक उत्पीड़न रोका जा सके। कहा कि शिक्षा सेवा का माध्यम है, व्यापार का नहीं, लेकिन कुछ स्कूलों ने इसे मुनाफे की मशीन बना डाला है।

पीएम मोदी के नेतृत्व में देश ने लगाई विकास की छलांग : पूर्व सांसद

- भाजपा का सक्रिय सदस्य सम्मेलन

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। भारतीय जनता पार्टी कर्वी विधानसभा का सक्रिय सदस्य सम्मेलन जिला अध्यक्ष महेन्द्र कोटार्य की अध्यक्षता में हुआ। पितृपुरुषों के चित्रों पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। सम्मेलन तीन सत्रों में हुआ, जिसमें विभिन्न विषयों पर वक्ताओं ने विचार साझा किए।

सम्मेलन का विशेष आकर्षण पूर्व सांसद भैरों प्रसाद मिश्र का प्रेरक संबोधन रहा। कार्यकताओं का आह्वान करते हुए कहा कि भाजपा का कार्यकर्ता ही पार्टी की सबसे बड़ी ताकत है। कहा कि पीएम नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश ने जो विकास की छलांग लगाई है, उसे बूथ स्तर तक पहुंचाने की जिम्मेदारी हर कार्यकर्ता की है।

प्रथम सत्र में क्षेत्रीय उपाध्यक्ष इन्द्रपाल पटेल ने सदस्यता

सक्रिय सदस्य सम्मेलन में भाजपाई

अभियान व संगठनात्मक विस्तार पर प्रकाश डाला। कहा कि भाजपा कार्यकताओं के परिश्रम से विश्व की सबसे बड़ी पार्टी बनी है। संगठन की जड़ें गांव तक फैली हैं और यह विचारधारा आधारित पार्टी है। द्वितीय सत्र में पूर्व प्रदेश उपाध्यक्ष रंजना उपाध्याय ने कहा कि भाजपा ने देश में विकास आधारित राजनीति की शुरूआत की। कांग्रेस के तुष्टिकरण व भ्रष्टाचार के विरुद्ध राष्ट्रवाद व स्वदेशी के विचार से भाजपा का उदय हुआ। तृतीय सत्र में पूर्व मंत्री चंद्रिका प्रसाद उपाध्याय ने कहा कि नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत ने वैश्विक मंच पर नई पहचान बनाई है। कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाना, राम मंदिर निर्माण, उज्ज्वला योजना, स्वच्छता अभियान जैसी योजनाओं ने देश को नई दिशा दी है। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में महेन्द्र कोटार्य ने भाजपा को लोकतांत्रिक व पारदर्शी संगठन बताया जहां सामान्य कार्यकर्ता भी शीर्ष तक पहुंच सकता है। सम्मेलन का संचालन महामंत्री राजेश जायसवाल व मीडिया प्रभारी भागवत त्रिपाठी रहे। कार्यक्रम में पूर्व जिलाध्यक्ष चंद्र प्रकाश खरे समेत सैकड़ों सक्रिय सदस्य मौजूद रहे।

राजकीय पॉलिटेक्निक में 138 छात्रों का प्लेसमेंट 2.52 लाख रुपये का सालाना पैकेज

प्लेसमेंट पैनल के अधिकारीगण

अखंड भारत संदेश

बरगढ/चित्रकूट। राजकीय पॉलिटेक्निक बरगढ़ में कृष्णा मारुति अहमदाबाद (गुजरात) द्वारा आयोजित कैंपस इंटरव्यू में 138 छात्रों का चयन हुआ। चयनित छात्रों को 2.52 लाख प्रतिवर्ष का पैकेज व कंपनी की ओर से अतिरिक्त सुविधाएं दी जाएंगी। इंटरव्यू में मैकेनिकल, इलेक्ट्रिकल, इलेक्ट्रॉनिक्स, केमिकल व सिविल इंजीनियरिंग के कुल 265 छात्र शामिल हुए। चयनित छात्रों को ऑफर लेटर भी मौके पर दिए गए। 2024 या उससे पूर्व डिप्लोमा पास छात्रों की जॉइनिंग एक सप्ताह में होगी, जबकि 2024-25 के फाइनल ईयर छात्रों को परीक्षा के बाद 1 अगस्त से जॉइनिंग दी जाएगी। प्रधानाचार्य संतोष कुमार वैश्य ने सभी चयनित छात्रों को शुभकामनाएं दीं और कंपनी का आभार व्यक्त करते हुए हर वर्ष प्लेसमेंट ड्राइव व इंडस्ट्री एक्सपर्ट्स के लेक्चर की मांग की। आयोजन में ट्रेनिंग व प्लेसमेंट सेल के अधिकारी संजीव कुमार सिंह, श्रीमती साजिया तबस्सुम, सचिन मौर्य समेत अन्य मौजूद रहे।

संचारी रोग नियंत्रण व दस्तक अभियान : चित्रकूट में स्वास्थ्य सुधार की दिशा में एक और कदम

चित्रकूट। शासन के निर्देशों पर डीएम शिवशरणप्पा जीएन के मार्गदर्शन में जिला मलेरिया अधिकारी लाल सिंह साहब ने एक अप्रैल से 30 अप्रैल तक चलाए जा रहे संचारी रोग नियंत्रण एवं 10 अप्रैल से 30 अप्रैल तक दस्तक अभियान के तहत विभिन्न स्वास्थ्य कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। इस अभियान के तहत विकासखंड पहाड़ी के ग्राम पंचायत बेरावर व सीकरी सानी में संचारी रोग नियंत्रण पर विशेष ध्यान दिया गया। इन ग्रामों में देवेंद्र कुमार प्राविधिक सहायक कृषि व नागेंद्र प्रताप सिंह ने संचारी रोग नियंत्रण अभियान की गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमे चूहों व छछूंदरों से होने वाली स्क्रब टायफस व लेक्टोस्पायरोसिस जैसी बीमारियों के लक्षण और बचाव के उपायों पर विस्तार से बताया। संचारी रोग नियंत्रण अभियान में विकासखंड पहाड़ी के विभिन्न ग्रामों जैसे बर्दवारा, मोहरवा, बुजुर्ग, सेरासेडा, सीकरी सानी और सुरकिया में साफ-सफाई की गई। मोहरा की राजस्व ग्राम पुनिया खुर्द में झाड़ियों की कटाई की गई व विकासखंड मऊ के ग्राम पंचायत पुनिया खुर्द में शुकर पालकों का संवेदीकरण किया गया। साथ ही, आशाओं को प्रशिक्षण भी दिया गया। 10 अप्रैल से 30 अप्रैल तक चलने वाले दस्तक अभियान में बुखार, क्षयरोगी, इन्फ्लूएंजा डिजीज, कुपोषण, कुष्ठ कालाज्वर, फाइलेरिया जैसी बीमारियों से ग्रसित रोगियों की सूची तैयार की जाएगी और उन्हें नजदीकी स्वास्थ्य केंद्रों में उपचार के लिए संदर्भित किया जाएगा। अभियान में मच्छर जनित रोगों के फैलाव को रोकने के लिए लार्वा सर्वे व मच्छर प्रजनन स्थल से बचाव के उपायों को बताया जाएगा।

सीएम अभ्युदय योजना पर निःशुल्क कोचिंग के आवेदन शुरू

- 7 मई तक भर सकेंगे फॉर्म

चित्रकूट। प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे मेधावी विद्यार्थियों के लिए मुख्यमंत्री अभ्युदय योजना पर चित्रकूट में सत्र 2025-26 के लिए निःशुल्क कोचिंग को आवेदन प्रक्रिया प्रारंभ कर दी गई है। इस संबंध में जिला समाज कल्याण अधिकारी ज्ञानेन्द्र सिंह भदौरिया ने बताया कि यूपीएससी, यूपीपीएससी, नीट, जेईई (मेन्स), एनडीए, सीडीएस, बैंकिंग तथा एसएससी जैसी प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी को इच्छुक छात्र-छात्राएं आवेदन कर सकते हैं। आवेदन की अंतिम तिथि 7 मई 2025ह्न निर्धारित की गई है। प्रवेश परीक्षा एक जून को होगी। निःशुल्क कोचिंग कक्षाएं एक जुलाई से प्रारंभ होंगी।

मानिकपुर में नाबालिक से दुष्कर्म के आरोपी की गिरफ्तारी

पुलिस गिरफ्त में आरोपी

चित्रकूट। एसपी चित्रकूट अरुण कुमार सिंह के निर्देश में अपराधियों के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत प्रभारी निरीक्षक मानिकपुर दुर्गविजय सिंह व उनकी टीम ने नाबालिक से दुष्कर्म के आरोपी को गिरफ्तार किया। 06 अप्रैल को थाना मानिकपुर में ग्राम निवासी ने सूचना दी गई कि उनकी नाबालिक पुत्री के साथ आरोपी शारदा कोल पुत्र सिपाहीलाल, निवासी ऐलहा बढैया, थाना मानिकपुर ने दुष्कर्म किया। इस सूचना पर थाना मानिकपुर में मुकदमा पंजीकृत किया गया और पुलिस टीम ने त्वरित कार्रवाई करते हुए 07 अप्रैल को आरोपी शारदा कोल को गिरफ्तार कर लिया। कार्रवाई में अपराध निरीक्षक विनय विक्रम सिंह, दारोगा शम्भूशरण सिंह, व पुलिस कर्मी अजीजउद्दीन एवं लोकेन्द्र कुमार की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

गैर इरादतन हत्या का आरोपी गिरफ्तार

बाँदा। थाना बबेरु पुलिस द्वारा व्यक्ति की गैर-इरादतन हत्या करने वाले अभियुक्त को गिरफ्तार किया गया है। आरोपी के कब्जे से घटना में प्रयुक्त डण्डा बरामद विभिन्न अभियोगों में वांछित अभियुक्तों की गिरफ्तारी हेतु चलाए जा रहे अभियान के क्रम में थाना बबेरु पुलिस द्वारा व्यक्ति की गैर-इरादतन हत्या वाले अभियुक्त को गिरफ्तार कर लिया गया । गौरतलब हो कि थाना बबेरु क्षेत्र के ग्राम सिमौनी में दो पक्षों द्वारा पुरानी रंजिश को लेकर आपसी विवाद में रहीम बक्श पुत्र करीम को डण्डे से मारपीट कर गम्भीर रुप से घायल कर दिया जिनकी इलाज के दौरान मृत्यु हो गई । इस सम्बन्ध में प्राप्त तहरीर पर थाना बबेरु में अभियोग पंजीकृत किया गया था । इसी क्रम में थाना बबेरु पुलिस ने जाकिर उर्फ जग्गा पुत्र रफीवा निवासी थाना बबेरु को सिमौनी सब्जी मण्डी के पास से गिरफ्तार किया गया । अभियुक्त की निशाँदेही पर घटना में प्रयुक्त डण्डा बरामद किया गया ।

सचिव पंचायत भवनों मे बैठकर ग्रामीणों की समस्याओं का करें निस्तारण : आयुक्त

अखंड भारत संदेश

बाँदा। आयुक्त चित्रकूटधाम मंडल अजीत कुमार ने मण्डल के समस्त पंचायत सचिवों को निर्देशित किया है कि प्रत्येक दिन वह अपने पंचायत भवन में जनता की समस्याओं को उपस्थित रहकर निस्तारण करें। उन्होंने समस्त लेखपाल, कानूनगो को निर्देश दिये हैं कि फार्मर रजिस्ट्री के कार्य को प्राथमिकता से लेते हुए पूर्ण करायें। उन्होंने मुख्यमंत्री युवा स्वरोजगार योजना के अन्तर्गत युवाओं को स्वरोजगार हेतु ऋण उपलब्ध कराये जाने के लिए सम्बन्धित बैंको से समन्वय करते हुए उनका निस्तारण करायें, जिससे कि उन्हें ऋण की सुविधा उपलब्ध हो सके। उन्होंने उप जिलाधिकारी, तहसीलदार एवं अन्य राजस्व अधिकारियों को निर्देशित किया है कि राजस्व वादों का समय से निस्तारण करें तथा राजस्व वाद अधिक समय तक लम्बित नही रहने पायें। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिये हैं कि तहसील एवं ग्राम स्तर पर प्राप्त होने वाली समस्याओं को गम्भीरता से लेते हुए निस्तारण किया जाए, जिससे कि अधिक लोगों को मण्डल एवं जनपद स्तर पर अपनी समस्याओं के निस्तारण के लिए अनावश्यक न आना पडे। उन्होंने निर्देश दिये कि 6 माह से अधिक एक वर्ष एवं एक वर्ष से 3 वर्ष के वादों का समय से निस्तारण किया जाए। उन्होंने राजस्व वादो को सूचीबद्ध करते हुए कार्ययोजना बनाकर निस्तारण किए जाने के निर्देश समस्त राजस्व अधिकारियों को दिए। उन्होंने चकबंदी के कार्यों को भी तेज गति से गुणवत्ता के साथ पूर्ण किए जाने के निर्देश दिए।

कर करेत्तर वसूली मे अधिकारी लायें तेजी : जिलाधिकारी

डीएम ने बैठक कर दिये आवश्यक निर्देश

अखंड भारत संदेश

बाँदा। जिलाधिकारी जे0रीभा अध्यक्षता में कलेक्टेट सभागार में कर-करेत्तर वसूली, राजस्व कार्यों एवं मासिक स्टाफ बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में जिलाधिकारी ने जीएसटी एवं जल संस्थान के कर की वसूली बढाये जाने के निर्देश दिये। समीक्षा के दौरान आबकारी, परिवहन, विद्युत के करों की वसूली ठीक पायी गयी। उन्होंने बबेरू, तिन्दवारी, अतर्रा में मण्डी की वसूली बढाये जाने के निर्देश दिये। उन्होंने समस्त उप जिलाधिकारियों एवं तहसीलदार को अपनी तहसील में वसूली की समीक्षा करने के निर्देश दिये। उन्होंने खनन के कर में वृद्धि करने तथा प्रवर्तन कार्य में तेजी लाये जाने के निर्देश दिये। उन्होंने ओवरलोड वाहनों की सघन चेकिंग किये जाने तथा रोड टैक्स के प्रकरणों की भी चेकिंग किये जाने के निर्देश पुलिस एवं परिवहन विभाग के अधिकारियों को दिये। उन्होंने बडे बकायेदारों से वसूली की समीक्षा करते हुए वसूली की कार्यवाही करने तथा आरसी वसूली भी पूर्ण किये जाने के निर्देश दिये। उन्होंने नायब तहसीलदार अतर्रा को वसूली कार्य में प्रगति लाने के निर्देश दिये। जिलाधिकारी ने राजस्व वादों के तहसीलवार निस्तारण की समीक्षा करते हुए निर्देशित किया कि पुराने राजस्व वादों का तत्काल निस्तारण करें। उन्होंने एक वर्ष से अधिक समय के लम्बित वादों का भी तेजी से निस्तारण किये जाने के निर्देश राजस्व अधिकारियों को दिये। समीक्षा के दौरान तीन वर्ष से अधिक के वादों के निस्तारण में बबेरू एवं बाँदा में बेहतर कार्य किये जाने पर उन्होंने अन्य तहसीलों में भी इसी प्रकार वादों का निस्तारण करने के निर्देश दिये।

जिलाधिकारी ने तहसील दिवस, आईजीआरएस में प्राप्त शिकायतों का समय से निस्तारण किये जाने के निर्देश समस्त उप जिलाधिकारी एवं तहसीलदारों को दिये। उन्होंने दाखिल दफ्तर की कार्यवाही समय से किये जाने तथा वरासत के प्रकरणों का निस्तारण शीघ्र किये जाने के निर्देश दिये। उन्होंने मत्स्य एवं कृषि पट्टा आवंटन हेतु सर्वे कराकर सूची तैयार किये जाने एवं तदानुसार पट्टा आवंटन की कार्यवाही किये जाने के निर्देश दिये। उन्होंने नगरपालिका एवं नगर पंचायतों में राजस्व की वृद्धि किये जाने तथा कर वसूली बढाये जाने हेतु समस्त अधिशाषी अधिकारियों को निर्देश दिये।

उन्होंने आडिट आपत्तियों का शीघ्र समय से निस्तारण किये जाने तथा सेवानिवृत्त कर्मचारियों के देयकों एवं पेंशन के प्रकरणों को लम्बित न रखते हुए शीघ्र कार्यवाही करते हुए पेंशन दिलाने की कार्यवाही किये जाने के निर्देश दिये। उन्होंने कर्मचारियों की विभागीय कार्यवाही के प्रकरणों में जांच कर ऐसे मामलों में शीघ्र जांच कर कार्यवाही करते हुए निस्तारण किये जाने के निर्देश दिये।

बैठक में अपर जिलाधिकारी वि0/रा0 राजेश कुमार, अपर जिलाधिकारी न्यायिक अमिताभ यादव सहित समस्त उप जिलाधिकारी/तहसीलदार अति0मजिस्टेट सहित कर-करेत्तर से सम्बन्धित विभागों के जिला स्तरीय अधिकारीगण उपस्थित रहे।

अमेरिका-ईरान परमाणु तनाव को हल करने में हर संभव मदद के लिए तैयार : रूस

मॉस्को। क्रेमलिन ने कहा कि रूस, तेहरान के परमाणु कार्यक्रम को लेकर अमेरिका और ईरान के बीच तनाव को कम करने के लिए हर संभव मदद करने को तैयार है।
वाशिंगटन का कहना है कि तेहरान उसके साथ परमाणु समझौता करे या फिर बमबारी के तैयारी करे।
अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की ओर से ईरान के खिलाफ सैन्य कार्रवाई की चेतावनी के बाद पूरे क्षेत्र में तनाव बढ़ गया। मॉस्को ने कई बार मध्यस्थता की पेशकश की है।
क्रेमलिन के प्रवक्ता दिमित्री पेस्कोव ने कहा, "हम अपने ईरानी साझेदारों के साथ लगातार परामर्श कर रहे हैं, जिसमें परमाणु समझौते का विषय भी शामिल है।" उन्होंने कहा, "यह प्रक्रिया निकट भविष्य में भी जारी रहेगी। बेशक, रूस राजनीतिक और कूटनीतिक तरीकों से इस समस्या के समाधान में योगदान देने के लिए हर संभव प्रयास करने के लिए तैयार है।"
ईरान ने 2015 में विश्व शक्तियों के साथ परमाणु समझौते पर हस्ताक्षर किए थे, जिसे औपचारिक रूप से ज्वाइंट कॉम्प्रिहेंसिव प्लान ऑफ एक्शन (जेसीपीओए) के रूप में जाना जाता है। जेसीपीओए को ईरान परमाणु समझौता या ईरान डील के नाम से भी जाना जाता है। इसके तहत प्रतिबंधों में राहत और अन्य प्रावधानों के बदले में ईरान अपने परमाणु कार्यक्रम को सीमित करने पर राजी हुआ था।
ट्रंप के पहले कार्यकाल के दौरान अमेरिका ने 2018 में समझौते से खुद को अलग कर लिया और 'अधिकतम दबाव' की नीति के तहत प्रतिबंध लगा दिए।
ईरान का कहना है कि उसे शांतिपूर्ण उद्देश्यों के लिए परमाणु ऊर्जा की जरूरत है। उसने इस बात से इनकार किया है कि वह परमाणु हथियार हासिल करना चाहता है।
तेहरान ने ट्रंप की सीधी वार्ता की मांग को ठुकरा दिया। एक वरिष्ठ ईरानी अधिकारी ने वीकेंड में उन पड़ोसियों को चेतावनी जारी की है जिनके यहां अमेरिकी सैन्यकि वे निशाने पर आ सकते हैं।
रूस के उप विदेश मंत्री सर्गेई रयाबकोव ने पिछले सप्ताह कहा कि ईरान पर बमबारी के बारे में ट्रंप की टिप्पणियों ने केवल 'स्थिति को जटिल' बनाया है।
उन्होंने चेतावनी दीकि हमले व्यापक क्षेत्र के लिए 'विनाशकारी' हो सकते हैं।
यह बयान इसलिए भी अहम था क्योंकि रूस ने ट्रंप की ऐसी तीखी आलोचना से परहेज किया है।

ट्रंप और नेतन्याहू ने व्हाइट हाउस में गाजा बंधकों और टैरिफ पर चर्चा की

वाशिंगटन। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने व्हाइट हाउस में मुलाकात की। इस मुलाकात में गाजा बंधक संकट और इजरायली वस्तुओं पर अमेरिकी टैरिफ पर चर्चा हुई।
सोमवार को पत्रकारों से बातचीत के दौरान, ट्रंप ने गाजा में बंधकों की रिहाई को "सर्वोच्च प्राथमिकता" बताया। उन्होंने चल रही वाताओं के बारे में आशा व्यक्त की, लेकिन कोई विशिष्ट विवरण नहीं दिया।
ट्रंप ने कहा, "हम प्रगति कर रहे हैं। मुझे विश्वास है कि हम जल्द ही सभी बंधकों को घर वापस ले आएंगे।"
नेतन्याहू ने इस पर सहमति जताते हुए बंधकों की आजादी सुनिश्चित करने के लिए इजरायल की प्रतिबद्धता पर जोर दिया।
सिन्हुआ समाचार एजेंसी के अनुसार, उन्होंने इजरायल और हमास के बीच अस्थिर युद्ध विराम पर भी बात की। हालांकि उन्होंने किसी नए समझौते की घोषणा नहीं की, लेकिन दोनों ने क्षेत्र में हिंसा को कम करने के महत्व पर जोर दिया। ट्रंप ने हाल ही में इजरायल से आयात पर 17 प्रतिशत टैरिफ लगाने का बचाव किया, जो उनकी व्यापक व्यापार नीति का हिस्सा है और कई अर्थव्यवस्थाओं को प्रभावित कर रहा है।
नेतन्याहू ने कथित तौर पर इन शुल्कों से राहत मांगी, तथा संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ व्यापार संबंधों को मजबूत करने के इजरायल के प्रयासों पर प्रकाश डाला।
2024 में, दोनों देशों के बीच कुल वस्तु व्यापार 37.0 बिलियन डॉलर होने का

अनुमान है, जिसमें इजरायल को अमेरिकी निर्यात 14.8 बिलियन डॉलर और इजरायल से आयात 22.2 बिलियन डॉलर होगा, जिसके परिणामस्वरूप अमेरिका का व्यापार घाटा 7.4 बिलियन डॉलर होगा।
इजरायली अधिकारियों के अनुसार, नेतन्याहू की व्हाइट हाउस यात्रा की व्यवस्था पिछले गुरुवार को दोनों नेताओं के बीच फोन पर हुई बातचीत के दौरान की गई थी, जब नेतन्याहू ने टैरिफ का मुद्दा उठाया था।
व्हाइट हाउस ने शुरू में एक संयुक्त प्रेस कॉन्फ्रेंस की योजना बनाई थी, लेकिन बिना किसी स्पष्टीकरण के इसे रद्द कर दिया गया। इसके बजाय, पत्रकारों ने ओवल ऑफिस मीटिंग में सवाल पूछे।
ट्रंप ने इस बैठक के दौरान गाजा के पुनर्विकास के लिए किसी दीर्घकालिक योजना पर चर्चा नहीं की। उनके प्रशासन ने पहले भी इस क्षेत्र के लिए विवादास्पद विचार प्रस्तावित किए हैं, जिनकी विभिन्न समूहों द्वारा आलोचना की गई है।
बैठक में संयुक्त राज्य अमेरिका और इजरायल के बीच जटिल संबंधों पर प्रकाश डाला गया, जिसमें सुरक्षा चिंताओं और आर्थिक हितों के बीच संतुलन बनाए रखने पर जोर दिया गया।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को लिस्बन का सिटी की ऑफ ऑनर सम्मान

लिस्बन। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को लिस्बन में सिटी की ऑफ ऑनर सम्मान से नवाजा गया। लिस्बन के मेयर कार्लोस मोएदास ने उन्हें यह सम्मान दिया।
इस अवसर पर बोलते हुए राष्ट्रपति ने लिस्बन के मेयर और लोगों का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि लिस्बन अपने खुले विचारों, संस्कृति, सहिष्णुता और विविधता के प्रति सम्मान के लिए जाना जाता है।
राष्ट्रपति मुर्मू ने कहा कि लिस्बन एक वैश्विक शहर है जो तकनीकी बदलाव, इनोवेशन, डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना और डिजिटल संक्रमण के मामले में सबसे आगे है। उन्होंने कहा कि इन क्षेत्रों में भारत और पुर्तगाल आगे भी सहयोग कर सकते हैं।
राष्ट्रपति ने कहा, "पुर्तगाल एक ऐसा देश है, जिसके साथ हमारे ऐतिहासिक संबंध रहे हैं। भारत और पुर्तगाल के बीच सांस्कृतिक संबंध सदियों से चले आ रहे हैं, और इन्होंने हमारे रोजमर्रा के जीवन पर अमिट छाप छोड़ी

है।
उन्होंने कहा, "इस वर्ष भारत और पुर्तगाल अपने राजनयिक संबंधों की स्वर्ण जयंती मना रहे हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि हमारा ऐतिहासिक सहयोग, एक गतिशील और बहुमुखी साझेदारी बनने की दिशा में दृढ़ता से आगे बढ़ रहा है।'
राष्ट्रपति मुर्मू पुर्तगाल और स्लोवाक गणराज्य की ऐतिहासिक राजकीय यात्रा पर हैं। यह 25 से अधिक वर्षों में भारत के राष्ट्रपति की इन देशों की पहली राजकीय यात्रा है। इन यात्राओं से यूरोपीय संघ के दो महत्वपूर्ण भागीदारों के साथ भारत के बहुआयामी संबंधों का और विस्तार होगा।
पुर्तगाल में पिछली राजकीय यात्रा 1998 में हुई थी जब राष्ट्रपति के.आर. नारायणन वहां पहुंचे थे। राष्ट्रपति मुर्मू पुर्तगाल के प्रेसिडेंट मासेलो रेबेलो डी सूसा के निमंत्रण पर 7-8 अप्रैल तक पुर्तगाल की राजकीय यात्रा पर हैं। पुर्तगाल से राष्ट्रपति मुर्मू स्लोवाकिया जाएंगी, जो 29 वर्षों में भारत के किसी राष्ट्रपति की पहली स्लोवाकिया यात्रा होगी।
9-10 अप्रैल की यात्रा के दौरान राष्ट्रपति मुर्मू स्लोवाकिया के राष्ट्रपति पीटर पेलेग्रिनी और प्रधानमंत्री रॉबर्ट फिको के साथ चर्चा करेंगी। राष्ट्रपति मुर्मू स्लोवाक गणराज्य की राष्ट्रीय परिषद के अध्यक्ष रिचर्ड रासी से भी मिलेंगी।

आ रही हूं मैं... शेख हसीना के हुंकार से यूनुस की उड़ेगी नींद

बांग्लादेश
बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना ने कहा कि मुहम्मद यूनुस ने उच्च ब्याज दरों पर छोटी रकम उधार ली और उस पैसे का इस्तेमाल विदेश में शानदार तरीके से रहने के लिए किया। हम तब उसके कपट को नहीं समझ पाए, इसलिए हमने उसकी बहुत मदद की। लेकिन लोगों को कोई फायदा नहीं हुआ।
बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना ने कहा कि अल्लाह ने उन्हें किसी कारण से जीवित रखा है और वह दिन आएगा जब अवामी लीग के सदस्यों को निशाना बनाने वालों को न्याय के कटघरे में लाया जाएगा। देशव्यापी आंदोलन के बाद शेख हसीना ने बांग्लादेश छोड़ दिया था। उन्होंने सोशल मीडिया पर अपनी पार्टी के नेताओं के परिवार के सदस्यों के साथ बातचीत के दौरान यह टिप्पणी की। अपने संबोधन के दौरान, उन्होंने बांग्लादेश में अंतरिम सरकार के मुख्य सलाहकार मुहम्मद यूनुस पर निशाना साधा और उन्हें ऐसा व्यक्ति कहा जिसने कभी लोगों से प्यार नहीं किया। उन्होंने कहा कि मुहम्मद यूनुस ने उच्च ब्याज दरों पर छोटी रकम उधार ली और उस पैसे का इस्तेमाल विदेश में शानदार तरीके से रहने के लिए किया। हम तब उसके कपट को नहीं समझ पाए, इसलिए हमने उसकी बहुत मदद की। लेकिन लोगों को कोई फायदा नहीं हुआ। उसने अपने लिए अच्छा किया। फिर सत्ता की लालसा पैदा हुई जो अब बांग्लादेश को जला रही है। पूर्व प्रधानमंत्री ने कहा कि बांग्लादेश, जिसे कभी विकास का मॉडल माना जाता था, अब आतंकवादी देश बन गया है। उन्होंने कहा कि हमारे नेताओं और कार्यकर्ताओं को इस तरह से मारा जा रहा है, जिसे शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता। अवामी लीग,

नेपाल : जंगल की आग बनी मुसीबत, कई लोग झुलसे

काठमांडू। नेपाल के जंगलों में आग लगने के कई मामले सामने आ रहे हैं। इसके कारण अस्पतालों में घायलों की संख्या में भी चिंताजनक बढ़ोतरी हो रही है।
स्थानीय मीडिया के मुताबिक, नेपाल का क्लेफ्ट एंड बर्न सेंटर, जिसे कीर्तिपुर अस्पताल के नाम से भी जाना जाता है। यहां सबसे ज्यादा जलने से घायल मरीजों का इलाज होता है, वहां मामलों की संख्या बढ़ गई है। इस कारण, हर दिन कई मरीजों को दूसरे अस्पतालों में भेजा जा रहा है।
अस्पताल की निदेशक डॉ. किरण नकारमी ने कहा, "हम जले हुए मरीजों के इलाज के लिए अन्य वार्डों के बिस्तरों का भी उपयोग कर रहे हैं, लेकिन वो भी पर्याप्त नहीं हैं। इस कारण, हमें गंभीर रूप से जले हुए मरीजों को दूसरे अस्पतालों में भेजना पड़ता है।"
काठमांडू पोस्ट की एक रिपोर्ट के अनुसार, इस संकट को और बढ़ाते हुए देश में गंभीर प्रदूषण के कारण श्वसन संबंधी बीमारियां भी बढ़ रही हैं, जो एक बड़ी स्वास्थ्य चिंता बन गई हैं।
विशेषज्ञों का कहना है कि जंगलों में आग लगने और कृषि फसलों के अवशेष जलाने से हवा में धुआं बढ़ रहा है, जिससे काठमांडू घाटी में वायु प्रदूषण बढ़ रहा है।
इसमें यह भी कहा गया है कि जलवायु परिवर्तन ने मौसम के पैटर्न को और बिगाड़ दिया है, जिससे स्थिति और भी खराब हो गई है।
रिपोर्टों से पता चलता है कि चुरे के जंगलों समेत कई जगहों पर जंगलों में आग लगने की घटनाएं, पराली जलाना, अन्य अपशिष्ट जलाना, घरों में आग लगना और ईंट भट्टों का संचालन, इन सभी कारणों से घाटी में वायु की गुणवत्ता खराब हो रही है।
पिछले एक सप्ताह से काठमांडू दुनिया का सबसे प्रदूषित शहर बना हुआ है, जहां पीएम 2.5 का स्तर खतरनाक स्तर तक पहुंच गया है। वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 348 तक पहुंच गया है।
काठमांडू के कई सामान्य अस्पतालों ने श्वास संबंधित समस्याओं और अन्य श्वसन बीमारियों के मरीजों की संख्या में तेजी से बढ़ोतरी की बात कही है। बीर अस्पताल के निदेशक डॉ. दिलीप शर्मा ने कहा, "पिछले कुछ दिनों के मुकाबले सांस संबंधी बीमारियों के मरीजों की संख्या दो गुना बढ़ गई है ।

अमेरिकी शुल्क नीति पर चीनी विदेश मंत्रालय की प्रतिक्रिया

बीजिंग। चीनी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता लिन च्येन ने सोमवार को हुई नियमित प्रेस वार्ता में अमेरिका की मनमानी शुल्क नीति की चर्चा में बताया कि अमेरिका कथित पारस्परिक समानता के नाम पर प्रभुत्ववाद कर रहा है। अमेरिका द्वारा 'अमेरिका पहले' को अंतर्राष्ट्रीय नियमों पर रखना एकदम एकतरफावाद, संरक्षणवाद और आर्थिक दबाव है। अमेरिका का टैरिफ का दुरुपयोग करना विभिन्न देशों खासकर वैश्विक दक्षिण देशों के विकास अधिकार को वंचित करने के बराबर है।
प्रवक्ता ने बताया कि अमेरिका की मनमानी टैरिफ नीति गंभीरता से

सामान्य अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक व व्यापारिक व्यवस्था और वैश्विक उत्पादन व सप्लाई चेन की सुरक्षा व स्थिरता को बर्बाद करती है, बहुपक्षीय व्यापार व्यवस्था को गंभीर नुकसान पहुंचाती है और विश्व आर्थिक बहाली की प्रक्रिया को प्रभावित करती है, जिसे निश्चित ही अंतर्राष्ट्रीय समुदाय का व्यापक विरोध मिलेगा।
उन्होंने कहा कि खुलापन और सहयोग ऐतिहासिक धारा है। पारस्परिक लाभ और साझी जीत जन-आकांक्षा है। विकास मुट्ठी भर देशों के विशेषाधिकार के बजाए विश्व के विभिन्न देशों का सार्वभौमिक अधिकार है। विभिन्न देशों को एक साथ विमर्श, निर्माण और शेयर करने के सिद्धांत पर कायम रहकर सच्चे बहुपक्षवाद का पालन करना, एक साथ विभिन्न किस्मों के एकतरफावाद व संरक्षणवाद का विरोध करना, संयुक्त राष्ट्र केंद्रित अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था तथा विश्व व्यापार संगठन पर केंद्रित बहुपक्षवादी व्यापार तंत्र की सुरक्षा करनी चाहिए।

बांग्लादेश ने की अमेरिकी टैरिफ को तीन महीने के लिए टालने की मांग

ढाका। बांग्लादेश की अंतरिम सरकार के मुख्य सलाहकार मुहम्मद यूनुस ने सोमवार को अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को एक पत्र लिखा, जिसमें उन्होंने बांग्लादेश के निर्यात पर लगाए गए काउंटर टैरिफ को तीन महीने के लिए टालने की मांग की है।
ट्रंप प्रशासन ने बांग्लादेशी सामानों पर 37 प्रतिशत टैरिफ लगा दिया है, जबकि पहले यह औसतन 15 प्रतिशत था।
बांग्लादेश का मुख्य निर्यात उत्पाद रेडीमेड गारमेंट्स (आरएमजी) है, जिसका बड़ा हिस्सा अमेरिका भेजा जाता है। बांग्लादेश का सालाना निर्यात अमेरिका को लगभग 8.4 अरब डॉलर का है, जिसमें मुख्य रूप से रेडीमेड गारमेंट्स शामिल हैं।
अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा घोषित "रेसिप्रोकल टैरिफ" नीति के तहत दावा किया गया कि बांग्लादेश अमेरिकी उत्पादों पर

74 फीसदी टैरिफ लगाता है, जिसके जवाब में अमेरिका के ट्रंप प्रशासन ने इस दर में 50 प्रतिशत की छूट देते हुए बांग्लादेश के लिए 37 प्रतिशत टैरिफ लागू किया।इस बीच, सोमवार को जब वैश्विक शेयर बाजार गिरावट का सामना कर रहे थे, ट्रंप ने अपनी विवादास्पद टैरिफ नीतियों का बचाव किया। उन्होंने कहा कि दुनिया के नेता पलटवार टैरिफ पर बातचीत करने के लिए तैयार हैं। जबसे अंतरिम सरकार ने अगस्त 2024 में सत्ता संभाली है, तब से बांग?लादेश की अर्थव्यवस्था गिरावट के दौर से गुजर रही है। व्यापार क्षेत्र में संकट का सामना करना पड़ रहा है और कई व्यापारिक एवं औद्योगिक प्रतिष्ठान बंद हो गए हैं। राजनीतिक उथल-पुथल और वैश्विक खुदरा कंपनियों द्वारा वैकल्पिक साझेदारों की तलाश ने अंतरराष्ट्रीय व्यापार पर असर डाला है। इसके कारण बांग्लादेशी उद्यमियों को कच्चे माल का आयात करने में मुश्किलें आ रही हैं। इसके साथ ही, गारमेंट फैक्ट्रियों के श्रमिकों द्वारा बकाए के भुगतान और खराब कार्य स्थितियों को लेकर विरोध और हड़तालें पूरे देश में फैल गई हैं।
कई रिपोर्टों में यह सामने आया है कि श्रमिकों के लगातार विरोध प्रदर्शन के कारण कई फैक्ट्रियां बंद हो गई हैं और कई श्रमिकों की जान भी गई है या वे गंभीर रूप से घायल हो गए हैं। देश के प्रमुख बांगला दैनिक प्रथम आलो ने रिपोर्ट दी है कि अधिकांश आर्थिक संकेतक, जैसे राजस्व संग्रह, महंगाई, बेरोजगारी, निजी निवेश, पूंजी उपकरणों का आयात, पूंजी बाजार और विदेशी निवेश, अच्छे संकेत नहीं दे रहे हैं।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर
योग सत्संग समिति
द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज से मुद्रित
एवं
क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
सम्पादक
स्वामी श्री योगी सत्यम्
RNI No: UPHIN/2001/09025
ऑफिस मो.:
9565333000
Email:-
akhandbharatsandesh1@gmail.com
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र
प्रयागराज होगा।

डोनाल्ड ट्रंप ने दी चीन पर 50 प्रतिशत अतिरिक्त टैरिफ लगाने की धमकी

न्यूयॉर्क। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने चीन को 50 प्रतिशत अतिरिक्त टैरिफ लगाने की धमकी दी है, जिससे कुल टैरिफ उत्पादों के मूल्य से भी अधिक हो जाएंगे। साथ ही, वे दुनिया भर के देशों पर बराबरी का टैक्स लगाने की अपनी नीति को और मजबूती दे रहे हैं।
उन्होंने सोमवार को ट्रुथ सोशल पर लिखा कि अगर चीन ने 8 अप्रैल 2025 तक अपने 34 प्रतिशत टैरिफ वृद्धि को वापस नहीं लिया, तो अमेरिका 9 अप्रैल से चीन पर 50% अतिरिक्त टैरिफ लगाएगा।
ट्रंप ने यह भी कहा कि वह बीजिंग के साथ शुल्कों पर किसी भी बातचीत को खत्म कर देंगे।
अन्य शुल्कों के साथ मिलकर, कुल टैरिफ 104 प्रतिशत तक पहुंच जाएगा।
अगर अमेरिका-चीन टैरिफ विवाद में कोई भी पक्ष पीछे नहीं हटा, तो आयातित उत्पादों की कीमत से अधिक शुल्क का अमेरिकी उपभोक्ताओं पर बुरा असर पड़ सकता है, जो रोजमर्रा की कई चीजों के लिए चीन पर निर्भर हैं।
ट्रंप का यह बयान चीन के उस ऐलान के जवाब में था, जिसमें उसने अमेरिकी आयात पर 34 प्रतिशत शुल्क लगाने की घोषणा की थी।
पारस्परिक शुल्कों में किसी भी रुकावट से इनकार करते हुए ट्रंप ने पत्रकारों से कहा, "हम इस पर विचार नहीं कर रहे हैं।"
इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू के साथ बैठक के बाद बोलते हुए उन्होंने कहा, "मुझे इससे गुजरने में कोई आपत्ति नहीं है, क्योंकि मुझे अंत में एक खूबसूरत तस्वीर दिखाई देती है।"
ट्रंप की धमकियों के बीच अमेरिकी शेयर बाजारों ने पिछले हफ्ते अपनी तेज गिरावट को रोका, जिसमें नैस्डैक ने

सोमवार को 0.1 प्रतिशत की मामूली बढ़त हासिल की, जबकि व्यापक एसएंडपी इंडेक्स में केवल 0.23 प्रतिशत की गिरावट आई।
कुछ समय के लिए एक सकारात्मक संकेत दिखा, जब यह अफवाह थी कि पारस्परिक टैरिफों पर 90 दिन की रोक लगेगी, तब एसएंडपी 3.4 प्रतिशत ऊपर था, लेकिन व्हाइट हाउस द्वारा इसे खारिज किए जाने से पहले एसएंडपी में गिरावट आई। ट्रंप ने जोर देकर कहा, "हम बहुत से देशों के साथ जबरदस्त प्रगति कर रहे हैं और जिन देशों ने वास्तव में हमारा फायदा उठाया है, वे अब कह रहे हैं, 'कृपया बातचीत करें।'"
जापानी प्रधानमंत्री शिगेरू इशिबा के साथ फोन पर बातचीत के बाद ट्रंप ने कहा कि टोक्यो बातचीत के लिए एक प्रतिनिधिमंडल भेज रहा है।
विदेश विभाग ने जानकारी देते हुए बताया कि विदेश मंत्री मार्को रुबियो ने भारत के विदेश मंत्री एस. जयशंकर के साथ बातचीत में भारत पर पारस्परिक टैरिफ और "निष्पक्ष और संतुलित व्यापार संबंधों की दिशा में प्रगति कैसे करें" पर चर्चा की।
यूरोपीय संघ की अध्यक्ष उर्सुला वॉन डेर लेयेन ने अमेरिका को "शून्य के बदले शून्य" का सौदा पेश किया, जिसमें औद्योगिक सामानों, जैसे कारों पर टैरिफ खत्म करने की पेशकश की। उन्होंने 'एक्स' पर पोस्ट किया, "हम हमेशा एक अच्छे सौदे के लिए तैयार हैं।"
उन्होंने चेतावनी दी, "हम जवाबी उपायों के साथ जवाब देने के लिए भी तैयार हैं और व्यापार में बदलाव से होने वाले अप्रत्यक्ष प्रभावों से खुद को बचाने के लिए भी तैयार हैं।" रिपोर्टों के अनुसार, यूरोपीय संघ दो चरणों में अपने स्वयं के पारस्परिक टैरिफ लगाएगा, एक अगले सप्ताह और दूसरा मई में।
दो रिपब्लिकन सीनेटरों माइक ली और रॉन जॉनसन ने ट्रंप से एक्स पोस्ट में इस डील को स्वीकार करने का आग्रह किया। हालांकि, इजरायल के लिए कोई टैरिफ रियायत की घोषणा नहीं की गई, लेकिन नेतन्याहू ने कहा कि इजरायल उनके देश के साथ अमेरिका के व्यापार घाटे को खत्म कर देगा और सुझाव दिया कि यह अन्य देशों के लिए एक मॉडल होगा।